अंक – 12 (मासिक) वर्ष – 13 जून 2018 मूल्य 20/–

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 June 2018

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

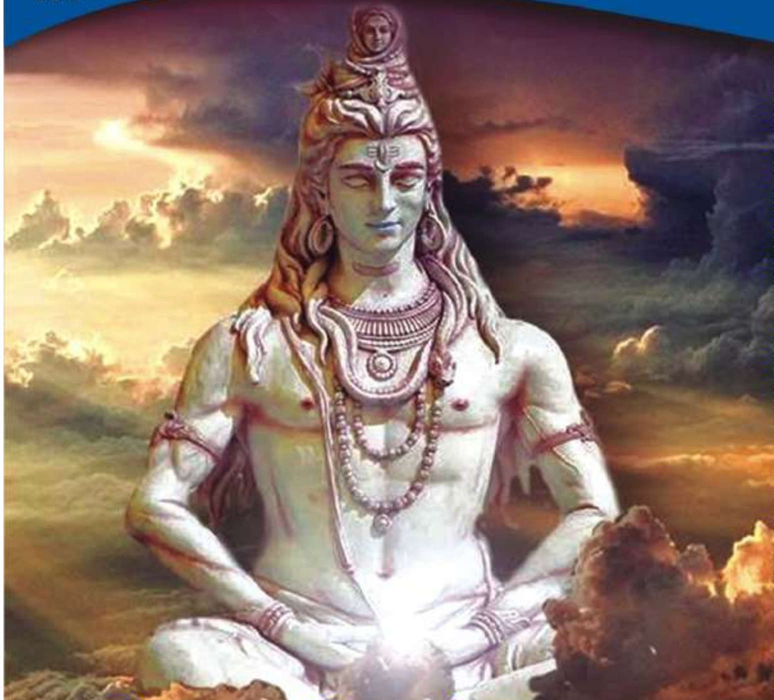

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

सबके शुभ संकल्प पूर्ण हो, सबका कल्याण हो

महेश नवमी पर युवा संगठन करेगा 21 हजार यूनिट रक्तदान, मनाऐगा योग दिवस लेगा संकल्प पौधारोपण का

लोहार्गल को अभी भी विकास का इंतजार

महेश नवमी पर अ.भा. मा.महिला संगठन बनाऐगा विश्व रिकार्ड

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के

'सिद्ध प्रकल्प'

द्वारा

**माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमी एवं
विश्व योग दिवस 21 जून 2018 पर संपूर्ण भारत वर्ष में
5 लाख से अधिक गुलाब के ठंडे शरबत का
वितरण कर विश्व रिकार्ड बनाने का एक वृहद संकल्प**

समाज के सभी बहनों , बंधुओं, समस्त कार्यकर्तागण एवं पदाधिकारीगणों से
आग्रह है कि महिला संगठन के इस महान संकल्प की सफलता हेतु
अपनी सहभागिता अवश्य करें, इसी अपेक्षा के साथ
माहेश्वरी समाज के प्राकट्य दिवस महेश नवमी पर
राष्ट्रीय महिला संगठन की ओर से
समस्त बंधुओं को हार्दिक मंगलकामनाएं।

शुभेच्छु

कल्पना गगड़ानी
अध्यक्ष
099200 23636

समस्त पदाधिकारीगण
अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन

आशा माहेश्वरी
महामंत्री
098291 14437

आयोजक

अ. भा. मा. महिला संगठन के सभी अंचल, प्रदेश, जिला, स्थानीय, मंडल एवं व्यक्ति होंगे।
निर्धारित पेय- लाल रंग का गुलाबी शरबत   समय - प्रातः 10 से 4

प्रक्रिया- इस रिकॉर्ड के लिए एक बैनर डिजाईन अ.भा. माहेश्वरी संगठन के द्वारा प्रेषित किया जाएगा। आपको वही बेनर निर्धारित आकार का फ्लेक्स प्रिंट कराकर वितरण स्थल पर लगाना होगा। साथ ही प्रदेश जिला स्थानीय या व्यक्तिगत बेनर भी लगाना होंगे। वितरण स्थल के 5-6 फोटोज 2-3 मिनिट की विडियो, सहभागियों की जानकारी निर्धारित फॉर्मेट पर भरकर ईमेल या व्हाट्सअप पर भेजना है।

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

उर्मिला कलंत्री
93777-79007
ukalantry@gmail.com

नीलम सारडा
99529-78816
tejaswiniwomen@gmail.com

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

▶ अंक-12 ▶ जून 2018 ▶ वर्ष-13

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)

अतिथि सम्पादक
रमेश काबरा, मुम्बई

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- **PNB A/c. No. : 0459002100043471**
  IFSC- PUNB0045900
- **ICICI A/c. No. : 030005001198**
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

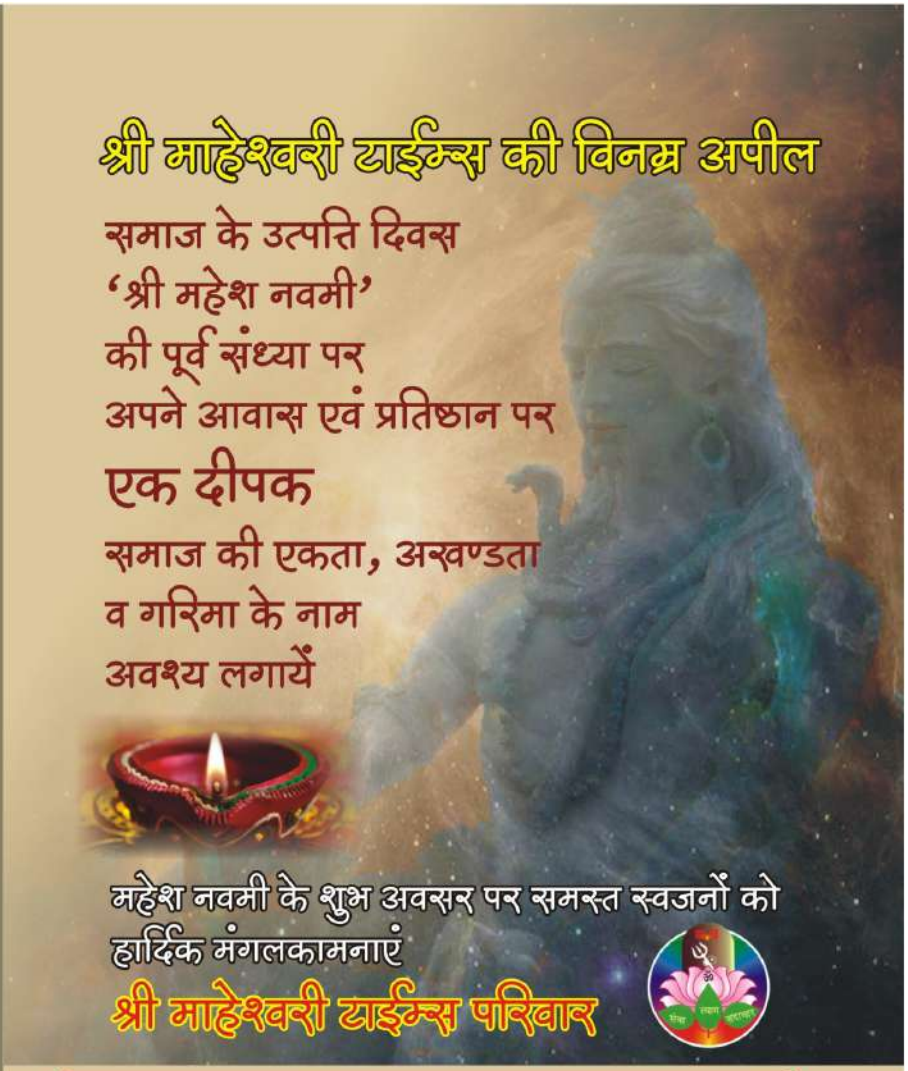

'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'

विचार क्रान्ति

सदा शुभ करें, सदा शिव करें!

किसी व्यक्ति की सफलता उसके कर्म और भाग्य पर तो निर्भर हैं ही, लेकिन इससे भी पहले संकल्प पर निर्भर है। हम जिस भाव से कर्मपथ पर आगे की ओर बढ़ते हैं, उसी भाव के अनुरूप सफलता या असफलता हाथ आती है। जब हम अर्थात् मेरा मन सदैव शुभ विचार ही किया करें, के भाव से भरे होते हैं, तो शुभ ही होता है। यदि दुर्भाव से भरें हों तो शुभ की सम्भावना संदिग्ध हो जाती है।

वेद कहता है जब भी आप संकल्प करो तो शिव- संकल्प करों अर्थात् सुखद संकल्प करो, कल्याणकारी संकल्प करो। शिव का अर्थ ही है कल्याण! शिव संकल्प में प्राणिमात्र के लिए कल्याण का चिंतन है। स्वभावतः जब हम सबके कल्याण की कामना करते हैं, स्वयं का कल्याण तो हो ही जाता है। यही सकारात्मक और नकारात्मक भाव है, जो शिव भाव है। वही विधेय हैं, जो अशुभ भाव है, वही निषेध। व्यक्ति के शिव भाव व्यक्तियों को और व्यक्तियों के शुभ भाव संगठनों को सफलता की ओर अग्रसर करते हैं।

कई ऐसे लोग हैं जिनके पास ज्यादा साधन नहीं हैं, अपना पक्का मकान नहीं है, अपनी पक्की नौकरी नहीं है, फिर भी मस्ती से जीते हैं, गाते हैं और सोचते हैं, 'आज तक तो भगवान ने दिया है, तो कल भूखे रहेंगे क्या? रहेंगे तो रहेंगे, देखा जायेगा।' और ऐसे लोग भी हैं, जिनके पास-लाखों रुपये हैं, फिर भी चिंता में हैं कि 'क्या होगा? यह हो गया, वह हो गया...।'

तो आदमी के चिंतन की धारा अशिव नहीं हो। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। हमारा संकल्प शिव हो। मंगलकारी, सुखकारी व विधेयात्मक संकल्प हो।'

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति पर अंकुश क्यों?

यह सवाल यू ही खड़ा हो गया है। इसका जवाब हमें जवाबदारों से नहीं समाज के आम लोगों से चाहिए। उन पाठकों से चाहिए जो समाज की पत्र-पत्रिकाओं को बेहद चाहते हैं और उनकी मदद के लिए तैयार ही रहते हैं। वस्तुतः मामला यह है कि अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कतिपय लोगों ने समाज में यह भ्रांति फैलाने की कोशिश की है कि ये पत्रिकाएं व्यावसायिक हैं। इन्हें कोई सपोर्ट नहीं करें, लेकिन ऐसे फैसले लेने वाले यह भूल गए कि सरस्वती पुत्रों पर अंकुश लगाने और अभिव्यक्ति को बंदिशों के घेरे में लाने का प्रतिफल क्या यह होगा? इन पत्रिकाओं के माध्यम से मुखर होने वाले समाजबंधुओं की आवाज का दम घुट जाएगा। यह बात समाज की एक प्रतिष्ठित पत्रिका माहेश्वरी सेवक में आक्रोश स्वरूप प्रकाशित आलेख से सामने आयी है।

यदि ऐसा है तो इतिहास साक्षी है, जब-जब अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाने की कोशिश की गई, ऐसे लोगों को मुंह की खानी पड़ी है। ऐसी नौबत न आए यह कोशिश तो हम कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए समाज की अदालत में यह जवाब उन्हें देना चाहिए कि ऐसा क्यों और किस उद्देश्य से किया जा रहा है? श्री माहेश्वरी टाईम्स का स्पष्ट नजरिया समाज की प्रगतिशील संस्था को आगे बढ़ाना, समाजबंधुओं की भावनाओं को समाज के बीच प्रस्तुत करना, समाज की प्रतिभाओं और आदर्शों को प्रोत्साहित करना रहा है। यही कारण है कि श्री माहेश्वरी टाईम्स समाज की लोकप्रिय पत्रिका है। समाज की अन्य पत्र-पत्रिकाओं से भी समाज को ही प्रोत्साहन मिलता है। ऐसी स्थिति में इन सामाजिक पत्रिकाओं को प्रतिबंधित करने के निर्णय लेने वालों पर सवाल उठना लाजमी है, क्योंकि इसका दूसरा पहलू यह है कि समाज के कर्णधार इन पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग समाज के विकास में भी कर सकते हैं। लेकिन उनसे पर्दा कर उन्हें समाज की बैठकों से वंचित कर, इनके खिलाफ असंगत प्रचार का क्या फायदा होगा? यह समझ से परे है। इसलिए सवाल उठा और जवाब की जरूरत समाज के बीच से आने की उत्कंठा भी जागी। इस तरह के फैसले लेने वाले तर्क देकर अपनी बात को साबित करने का प्रयत्न तो कर सकते हैं, लेकिन जब समाज के सामने हकीकत होगी, तो उनके तर्क बेमानी साबित होंगे। क्योंकि बकौल रमेश काबरा हाथ कंगन को आरसी क्या? समाज के सभी बंधु इन पत्रिकाओं के पाठक हैं। उन्हें इनमें रुचि की पठनीय सामग्री मिलने के साथ, अपनी बात कहने का अवसर भी मिलता है। वे खुद फैसला कर सकते हैं कि सही क्या है?

खैर श्री माइेश्वरी टाईम्स का यह महेश नवमी अंक आपके हाथ में है। मत-सम्मत में घटती बालिकाओं की संख्या पर चिंतन सामने आया है। लोहार्गल तीर्थ के कायाकल्प की जानकारी भी इसमें समाहित है। मैं समस्त समाजजनों से लोहार्गल भवन के निर्माण में सहयोगी बन उसे शीघ्र ही पूर्णता का स्वरूप देने की अपील करता हूँ। आप सभी से पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभाने की अपील भी करता हूँ। संकल्प ले कि चाहे धार्मिक उत्सव हो, सामाजिक या पारिवारिक उस पर एक पौधा अवश्य लगाएं और उसकी देखभाल भी करें। इस संकल्प की शुरूआत इसी महेश नवमी पर्व से कर इसे बनाऐं। अन्य पठनीय एवं ज्ञानसंवर्द्धन सामग्री के साथ आपको यह अंक जरूर पसंद आएगा। श्री महेश नवमी की सभी समाजजनों को हार्दिक शुभकामनाएं।

जय महेश

- पुष्कर बाहेती

अतिथि सम्पादकीय

पीपाड़ जोधपुर (राजस्थान) में जन्में और मुंबई को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले ५३ वर्षीय श्री रमेश काबरा की पहचान समाज के प्रखर कलमकार के रूप में है। बीकॉम तक शिक्षित श्री काबरा वर्ष १९८७ से समाज की वैचारिक हिंदी मासिक पत्रिका समाज प्रवाह को उपसंपादक के रूप में सेवा दे रहे थे। मधुश्री काबरा के देहावसान के बाद समाज प्रवाह के संपादक हैं। आप पत्रिका के संपादक स्व. श्री मधुकाबरा के भतीजे हैं। व्यावसायिक रूप से आप राईटिंग प्रिंटिंग पेपर के इम्पोर्टर व कंपनी आरके मल्टीट्रेड प्रा.लि. के डायरेक्टर हैं। पत्रिका के लिए लेखन, योगा, संगीत व समाजसेवी गतिविधियाँ जन्मजात रूप से आप के जीवन का अभिन्न अंग हैं। समाजसेवा के अंतर्गत ग्रेटर मुंबई व उसके विभिन्न जिलों की ख्यात सामाजिक संस्था माहेश्वरी प्रगति मंडल को आप सतत सक्रिय रूप से अपनी सेवा दे रहे हैं। अभिव्यक्ति प्रकाशन ट्रस्ट, श्री धनराज काबरा चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री रूपजी टेम्पल ट्रस्ट पीपाड़ (राजस्थान), हिंदू सभा भवन पीपड़ व मानव सेवा केंद्र पीपाड़ के आप ट्रस्टी हैं। नवनंदन वन इण्ड स्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. मुलुंड मुंबई तथा एल एल मूंदड़ा होस्टल मुलुंड को सचिव के रूप में सेवा दे रहे हैं। माहेश्वरी प्रगति मंडल में मैनेजिंग कमेटी सदस्य के रूप में सेवा दे रहे हैं एवं इसके अलावा युवा एवं क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष रह चुके हैं। तथा युवा समिति के अध्यक्ष रहे हैं। इसके साथ ही आप कई सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से सेवा दे रहे हैं। आप एक ऐसे कलमकार हैं, जिन्होंने हमेशा बेखौफ होकर समाज संगठनों को मार्गदर्शित किया है।

समाज सुधार ही हो संगठन का प्रथम कर्तव्य

आज जो महासभा रूपी सेवा का विशाल वटवृक्ष है, इसकी स्थापना केवल समाज में व्याप्त समय बाह्य रिवाजों व कुरीतियों की समाप्ति हेतु सुधारवादी दृष्टिकोण को लेकर की गई थी। उस समय महासभा का एक ही लक्ष्य था कि समाज की उन कुरीतियों को मिटाना। इसके लिए जहां-जहां मीटिंग व अधिवेशन आदि हों, इसका प्रचार किया जाए एवं एक दिशा बोध समाज को दिया जाए। पर्दाप्रथा, मृत्युभोज, स्त्री शिक्षा, विवाह में दहेज प्रथा, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह आदि अनेक विषयों पर तब महासभा ने काफी अच्छा प्रभावी प्रचार कार्य किया, जिससे समाज में अच्छा वातावरण भी बना। कालांतर में महासभा पर संपन्न लोगों का आधिपत्य हो गया और सुधार के सिद्धांतनिष्ठ कार्यक्रमों का स्वरूप बिगाड़ का बन गया। महासभा में तथाकथित नेतागण अपने घरों में ही महासभा द्वारा प्रतिपादित नियमों को खुलेआम भंग करने लगे।

जब "गुरुजी ने स्वयं ही बैंगन खाने शुरू कर दिए" तो फलस्वरूप महासभा के सुधारवादी कार्यक्रमों के प्रति समाज की ना सिर्फ आस्था घटी बल्कि लोग उनका मखौल उड़ाने लगे। अंतरजातीय विवाह को भी नेता लोग बढ़ावा देने लगे। एक तरफ से महासभा के मंच से घटती हुई जनसंख्या पर चिंता व्यक्त करते हैं और अपने परिवार में होने वाले इस तरह के प्रसंग को निजी ना रखकर सार्वजनिक रूप से इसका भव्य रूप से आयोजन करते हैं। दुःख इस बात का है कि कोई भी नेता इसका विरोध करने की हिम्मत नहीं करता, उल्टे इस तरह के आयोजनों में व्यक्तिगत, पारिवारिक या व्यावसायिक रिश्तों का हवाला देकर अपनी हाजिरी देकर मूकदर्शक बने रहते हैं।

आज समाज के रिवाज खर्चीले, दिखावे के, लेन-देन के, लालच के हो गए हैं। फलस्वरूप लोग चाहे जितना कमा लें, चाहे जितना धन बचा लें उनकी सारी आय और बचत उन रिवाजों में खत्म हो जाती है। परिणामस्वरूप साधारण या मध्य परिवारों की आर्थिक स्थिति दिखावे के चक्कर में बिगड़ जाती है और इस तरह एक अच्छा खाता-पीता परिवार विपन्न होकर सहायता पाने वाले की कतार में खड़ा जाता है। समाज में आज दिखावे के चलते योग्य पात्रों के संबंध योग्यता के आधार पर ना होकर केवल धन की स्थिति को लेकर होने लगे हैं, जिससे बाद में दुराव उनमें बढ़ने ही लगता है। चाहे रिवाज शादी के या मृत्यु के हों, उन सबमें समय की उपयोगिता व आवश्यकता आदि को ध्यान में रखकर नियम बनाए जाने चाहिए।

हमारी दृष्टि से महासभा और सामाजिक संस्थाओं का प्रमुख कार्य समाज सुधार का ही है। अन्य कार्यक्रम और सेवा जो भी समयानुसार हो वह दोयम दर्जे के रहें। उन्हें प्रमुख और प्रमुख को दोयम दर्जा देना ही दिशांतर है, दिशा भटकाव है। हम चाहेंगे कि महासभा उस भटकाव से अपने आपको बचाए, यही समाज की सच्ची सेवा रहेगी। महासभा के कार्यक्रम केवल समाज सुधार के रहें। समाज सुधार के तमाम विषयों के लिए व्यावहारिक नियम बने और उनके प्रचारार्थ पत्र, मीटिंग, संपर्क दौरे, अधिवेशन या सोशल मीडिया का उपयोग करके उसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। उन कार्यक्रमों को स्थानीय जिला व प्रादेशिक सभाओं के माध्यम से लागू कराए जाएं। समाज सुधार, समाज के सामाजिक परिवर्तन, समय बाह्य खर्चीले रिवाजों से मुक्ति दिलाना ही केवल एकमात्र महासभा का कार्यक्रम रहे।

आज समाज अपनी घटती जनसंख्या के कारण विलुप्ति की ओर बढ़ रहा है। वैसे ही युवा पीढ़ी की इच्छाशक्ति की कमी के कारण परिवार १-२ बच्चों पर सिमट गए हैं और ऐसे में भी अंतरजातीय विवाह बढ़ रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अस्तित्व को बचाएं। यदि आज महासभा समाज के अस्तित्व को बचाने की दिशा में कोई ठोस योजना नहीं बनाएगी तो बहुत देर हो जाएगी।

- रमेश काबरा
अतिथि सम्पादक

उत्तमकृषि के लिए नेचुरल टेक्नालाजी अपनाएँ,
भूमि को अधिक उपजाऊ
व पौधों को निरोगी तथा वातावरण को प्रदुषण रहित बनाएं

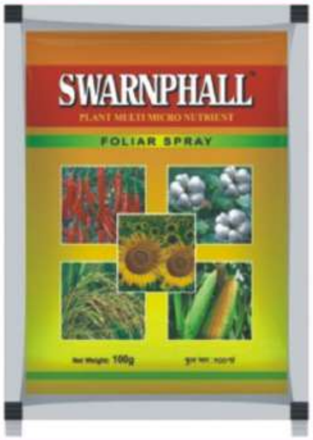

उत्तम गुणवत्तायुक्त स्वस्थ व अधिकतम
उपज के लिए

स्वर्णफल पत्रफुहार

सर्वश्रेष्ठ उत्तम गुणयुक्त सुक्ष्मपोषक बल

**A Best Multi Micronutrient
Power for all Crops**

संत्रे व मोसम्बी पर आती डैब्याक व्याधि को प्रभावशाली
ढंग से रोकने के लिए

रेडान + जेट्रान

नेचुरल बायो पेस्टिसाइड

नेचुरल बायो फंजीसाइड

विश्वास के लिए पहले कुछ पौधों व पेड़ो पर उपयोग करें
और फायदा देखें फिर अपनाएं।

डैब्याक व्याधि के निवारण कि
जानकारी के लिए संपर्क करें

रतनलाल मूंदड़ा
09000400363

बृजगोपाल मूंदड़ा
09440295365

Vijayashri Agro Chemicals Pvt. Ltd.

Regd. Office : 14-6-407/A
Begum Bazar, Near Maheshwari Bhawan,
Hyderabad-500 012 (T.S.) Bharat
Tel. No. 040-2465 2441, 2465 2447

श्री माँ नौसल माताजी

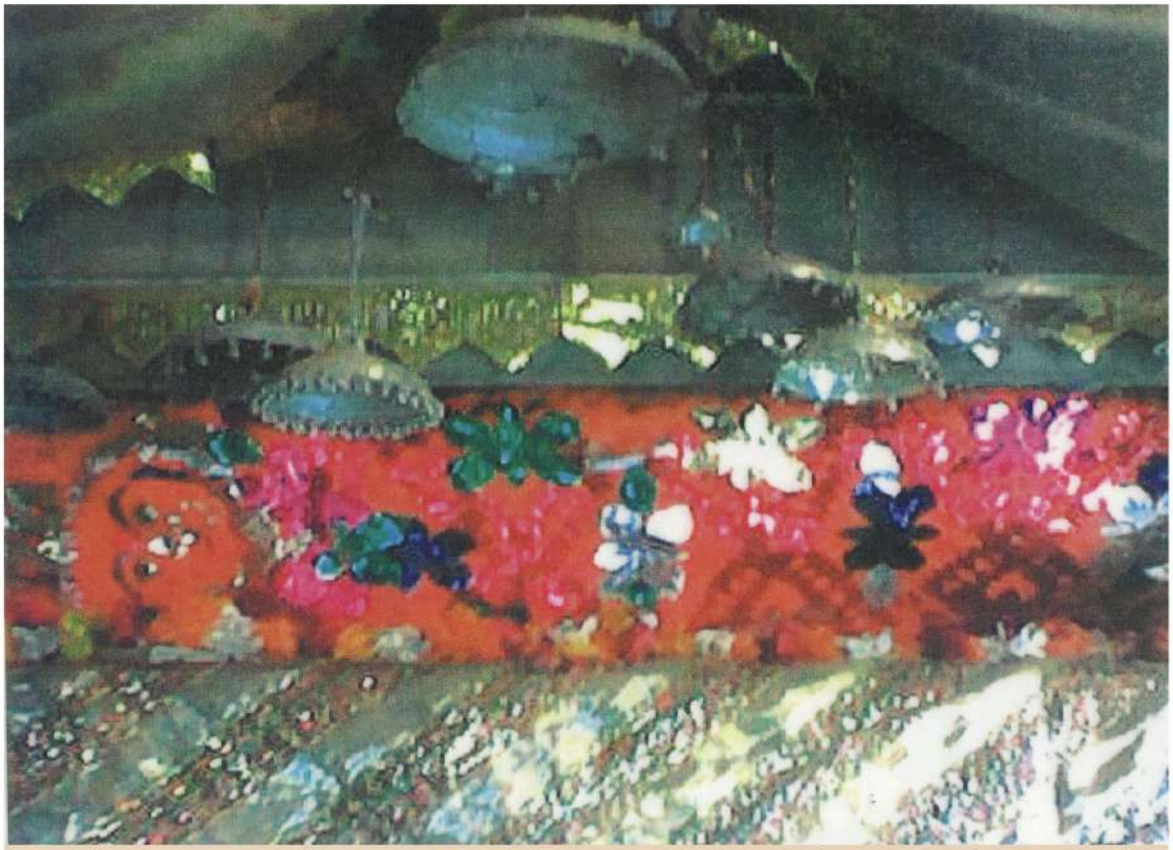

श्री नौसल माताजी माहेश्वरी जाति की सारड़ा, चितलांग्या, जैथलिया, फोफलिया और भाला खाँप की कुलदेवी हैं। स्थानीय स्तर पर नौसल माताजी आनंदी माता और चामुण्डा माता के नाम से भी जानी जाती हैं।

श्री नौसल माताजी का मंदिर राजस्थान के प्रसिद्ध शहर अजमेर से 75 कि.मी. दूर मदनगंज-किशनगंज के समीप नौसल कौठड़ी ग्राम में स्थित है। एक तालाब के किनारे सुरम्य माहौल में स्थित यह मंदिर पांडवकालीन 5000 वर्ष पुराना होकर पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बताया जाता है कि यहाँ कुल 9 मंदिर थे। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने माताजी की मूर्ति तोड़ दी थी। अतः वर्तमान मूर्ति बाद में प्रतिष्ठित की हुई लगती है। यहाँ की एक विशेषता और है कि इस मंदिर के समीप एक लेटा हुआ इमली का पेड़ है, जो आने वाले दर्शनार्थियों के लिये आकर्षण का केन्द्र होता है।

विशिष्ट आयोजन

यहाँ प्रत्येक माह में शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि को विशिष्ट आयोजन होते हैं। इस दिन अपनी मान-मनौती के लिये श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। मात्र 100 व्यक्तियों की छोटी-सी टोली इन सभी व्यवस्थाओं को संभालती है। यहाँ लोग अपनी परम्परानुसार माताजी को भोग लगाते हैं।

कहाँ ठहरें

यहाँ पर ठहरने के लिये कलकत्ता के भाला परिवार ने कुछ कमरे बनवाऐ हैं। ठहरने की व्यवस्था के लिये पंडाजी से आग्रह करना होता है। लॉज व ठहरने की अन्य उत्कृष्ट व्यवस्था मदनगंज-किशनगंज में हो जाती है। 'ए' क्लास आवास व्यवस्था के लिये अजमेर में अच्छे होटल हैं।

कैसे पहुँचें

ग्राम नौसल (कौठड़ी) अजमेर से सड़क मार्ग से 75 कि.मी. दूर रुपनगढ़-परबतसर मार्ग से कुछ अन्दर है। इसके लिये रूपनगढ़ से 15 कि.मी. की दूरी पर दायीं ओर कच्चा मार्ग नौसल कौठड़ी जाता है। अजमेर से भी एक सीधा कच्चा रास्ता है।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

रामनिवास जैथलिया (मुम्बई)

मो. 098204-01616

महेश नवमी पर्व पर आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएँ

॥ जय महेश ॥

गंगाराम चाँदमल तोतला
'श्री नरसिंग निवास' 3-5-45, जागृति कॉलेज के सामने, रामकोट, हैदराबाद - 500 095
फोन : +91 9248022503, 9849022503

KWC Estd. 1969
Kamal Watch Co.
Sales & Service

FLAGSHIP STORE: Road No. 36, Near Peddamma Temple Circle, Jubliee Hills, Hyderabad, Ph. 040-23558621

HYDERABAD - Abids 040-66782818, Abids Gunfoundary 040-66660585, Dilsukhnagar 040-66177658, Banjara Hills 66463366, Forum Mall 040-30534001 SECUNDERABAD - MG Road 040-66322191, Vikrampuri 040-64646551 VIZAG - Rama Talkies Road 0891-6636613, CMR Central mall 0891-6464622 VIJAYAWADA - PVP Mall 0866-6005999, Trendset Mall 0866-6004999 KURNOOL - Jyoti Mall 9246668766 KAKINADA - Beside Apollo Hospital 0884-6663336

Shop Online www.kamalwatch.com | EMI Facility also available | Follow us on / KamalWatch

Somani SOMANI ISPAT PRIVATE LIMITED

theinnerstrength
foryourconstruction

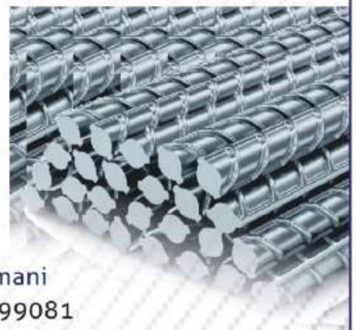

Sanjay Kumar Somani +91 - 92465 34957
Sudhir Kumar Somani +91 - 98490 24065
Aakash Somani +91 - 99080 99081

11-6-27/1, 2 & 3, Opp. IDPL Factory, Balanagar, Hyderabad - 37 (T.S.) INDIA
+91 - 40 - 2377 1877 / 8375 / 2411, contact@somanisteel.com, www.somanisteel.com

HR Coil / TMT De-Coiling Unit & Godown at
Survey No. 76/2, Gundlapochampally
Near Kompally, Hyderabad, Cell : 77022 66065

VIZAG
Gajadhar Gaggar - 90003-04058
Dinesh Gaggar - 90003-04044
Plot No. 28, D Block Extn., Behind Sail Yard
Autonagar, Visakhapatnam, Ph : 0891-2754044

GROUP COMPANY
MAHESWARI FASTENERS & BRIGHT PVT. LTD.
Mahendra Rathi 92468-87753
Manufactures of : MS & HDG Fasteners (BIS & AP TRANSCO APPROVED)
Plot No. 152 & 154, Medchal Industrial Estate, Hyderabad, Ph : +91 - 40 - 2980 3123

Authorised Dealer of : SAIL, VSP, JSW, JSPL, ESSAR & UTTAM VALUE

vishalprinter.com

बद्रीनाथ धाम में आयोजित हुई युवा संगठन की बैठक

पष्ठम कार्यसमिति बैठक में युवाओं का समाज जोड़ने व उनके सर्वांगीण विकास की बनी रूपरेखा

बद्रीनाथधाम. अभा माहेश्वरी युवा संगठन के द्वादश सत्र की षष्ठम कार्यसमिति बैठक बद्रीनाथ धाम में गत ५-६ मई को हरियाणा-पंजाब-हिमाचल-जम्मू-कश्मीर प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व में आयोजित हुई। श्री काल्या ने राष्ट्रीय अध्यक्ष बनते ही इस कार्यकाल में युवाओं को धर्म व संस्कृति से जोड़ने की पहल करते हुए चारोंधाम रामेश्वरम, बद्रीविशाल, द्वारकाधीश व जग्गनाथपुरी में राष्ट्रीय युवा संगठन की एक-एक कार्यसमिति की बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया था। उसी क्रम में षष्ठम कार्यसमिति की बैठक बद्रीनाथ धाम में आयोजित की गई। बैठक में नेपाल सहित देश के कोन-कोने से युवा सदस्य शामिल हुए।

श्री काल्या ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में बताया कि २५ मार्च २०१७ को सूरत में कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात युवा संगठन को और अधिक सक्रिय करते हुए अब तक देशभर में ३७५०० युवा साथियों को स्थानीय संगठन से जोड़ा जा चुका है और बहुत जल्द ५००० युवा साथियों को सक्रिय सदस्य के रूप में स्थानीय संगठन से जोड़ लिया जाएगा। विभिन्न स्थानों पर लगातार बिजनेस सेमिनार, कॅरियर काउंसलिंग, कॅरियर गाइडेंस, कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु राष्ट्रीय संगठन द्वारा ट्रेनर्स और संसाधन उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। इस वर्ष भी महेश नवमी महोत्सव २०१८ के अंतर्गत देशभर में २५० से अधिक संख्या में रक्तदान शिविरों का आयोजन किये जाने एवं उनमें ही समाज में विशिष्ट योगदान के लिए वरिष्ठजनों के सम्मान के लिए वरिष्ठ जन सम्मान समारोह आयोजित किए जाने का निर्णय लिया गया। विश्व पर्यावरण दिवस पर संपूर्ण भारतवर्ष और भारत से बाहर अनेक स्थानों पर जहां भी माहेश्वरी बंधु निवास करते हैं, वहां प्रत्येक माहेश्वरी परिवार से कम से कम एक पौधारोपण किए जाने का प्रयास किया जाएगा। विश्व योग दिवस पर संपूर्ण भारत वर्ष में २५० से अधिक स्थानों पर योग शिविरों का आयोजन किया जाएगा। ऐसे कार्यक्रमों को प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाएगा।

युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहन

युवा शिक्षा रत्न २०१८ के अंतर्गत देशभर से कक्षा दसवीं, १२वीं में ७० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले १३२५ से अधिक विद्यार्थियों ने ऑनलाइन आवेदन किया। देश के टॉप १० और सभी राज्यों के टॉपर विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। प्राप्त आवेदनों में से आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को महासभा व संगठन के विभिन्न ट्रस्टों तथा युवा संगठन के माध्यम से आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर उन्हें उच्च शिक्षा एवं सिविल सर्विसेज के लिए प्रेरित किया जाएगा। बच्चों के शैक्षणिक विकास के लिए राष्ट्रीय ऑनलाइन क्विज ब्रेन हंट प्रतियोगिता अगस्त २०१८ में आयोजित की जाएगी। युवाओं का समय पर विवाह हो सके इसके लिए युवा संगठन द्वारा परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है तथा परिचय सम्मेलन में तय हुए विवाह संबंधों का सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह कराया जाएगा। इसी क्रम में आगामी २८, २९ जनवरी २०१८ को चित्तौड़गढ़ में चित्तौड़गढ़ जिला माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा परिचय सम्मेलन कराया गया था, जिसमें १५ संबंध तय हो चुके हैं।

राष्ट्रीय खेल महोत्सव का होगा आयोजन

राष्ट्रीय खेल महोत्सव का आयोजन २९-३० सितंबर व १-२ अक्टूबर २०१८ को तृतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी मंडल बैठक एवं सप्तम राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक के साथ जयपुर में पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन

के आयोजकत्व में होगा। इसके अंतर्गत पहली बार डे-नाइट क्रिकेट मैच खेला जाएगा। क्रिकेट के साथ बैडमिंटन, टेबल टेनिस, शतरंज, चेस की प्रतियोगिताएं भी होंगी। पहली बार वालीबॉल, तैराकी एवं दौड़ जैसी एथेलेटिक्स खेल प्रतियोगिताएं भी होंगी। उक्त प्रतियोगिताओं में से कई प्रतियोगिताएं इंटरनेशनल स्टेडियम में आयोजित होंगी।

खेल-कला-संस्कृति-साहित्य के लिए ट्रस्ट

खेल, कला, संस्कृति और साहित्य को बढ़ावा देने एवं प्रोत्साहित करने के लिए ट्रस्ट का निर्माण कर खेल महोत्सव एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को ट्रस्ट के माध्यम से संसाधन उपलब्ध कराकर उन्हें राष्ट्रीय आयोजनों में सम्मिलित कराने के प्रयास किए जाएंगे। राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम कोलकाता में वृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के संयोजन में आयोजित किए जाएंगे। युवा महाअधिवेशन वर्ष २०१९ में राजस्थान के किसी प्रदेश या दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व में किया जाएगा। जल्द ही भारत से बाहर औद्योगिक भ्रमण की रूपरेखा भी बनाई जाएगी।

विशिष्ट जन सम्मान

राष्ट्रीय युवा संगठन के द्वारा योग दिवस के साथ ही प्रथम बार महेश नवमी महोत्सव के दौरान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट जनसम्मान समारोह' कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। विशिष्टजन सम्मान समारोह के अंतर्गत उन सभी समाज बंधुओं का सम्मान या अभिनंदन किया जाएगा, जिन्होंने माहेश्वरी समाज के विकास या उत्थान में अमूल्य योगदान दिया हो। इसके अंतर्गत प्रदेश स्तर पर अधिकतम ११ समाजबंधुओं का अभिमान करने का प्रावधान है। मरणोपरांत सम्मान को भी इस सम्मान में शामिल किया जा सकता है। इसके लिए प्रदेश युवा अध्यक्ष/सचिव के द्वारा निर्धारित समय से पूर्व नाम की सूची देनी होगी।

पर्यावरण दिवस पर जनचेतना

विश्व पर्यावरण दिवस पर विगत वर्ष राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर १ लाख से अधिक संख्या में पौधारोपण किया गया। इस वर्ष भी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा ५ जून २०१८ को विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत पौधारोपण के लिए विशेष जन चेतना अभियान का आह्वान किया जा रहा है। संगठन ने सभी स्वजनों तथा युवा साथियों से आग्रह किया है कि अपने गृह नगर/शहर/कस्बे/गाँव में किसी भी सुरक्षित स्थान यथा भवन, धर्मशाला, स्कूल, कॉलेज, उद्यान आदि स्थलों पर एकत्रित होकर पौधारोपण के विशेष कार्यक्रम आयोजित करें। प्रयास रहेगा कि भारत एवं विदेशों में निवासरत समाज के प्रत्येक परिवार के घर मे कम से कम एक पौधा अवश्य लगे।

समाज की समस्याओं पर केंद्रण

परिचय पुस्तिका के प्रकाशन के साथ-साथ डिजिटल डायरेक्ट्री बनाने, राष्ट्रीय सेमिनार, कॅरियर काउंसलिंग, कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर को और अधिक संख्या में आयोजित किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा अधिक से अधिक भ्रमण कार्यक्रम द्वारा समाज की समस्याओं को दूरा किए जाने का निर्णय लिया गया। हरियाणा-पंजाब-हिमाचल-जम्मू कश्मीर प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के आयोजकत्व एवं आतिथ्य में आयोजित उक्त बैठक के साथ बद्रीनाथ धाम के दर्शन से यात्रा सानंद संपन्न हुई। उक्त बैठक में प्रदेश युवा संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण सोमाणी, संगठन मंत्री दीपक चांडक, सांस्कृतिक मंत्री संदीप करनानी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (उत्तरांचल) अमित सारडा, हरियाणा पंजाब हिमाचल जम्मू कश्मीर प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन अध्यक्ष विकास माहेश्वरी, सचिव अनुराग झंवर, आशीष सारडा सहित अनेक युवा साथियों ने अपने विचार व्यक्त किए।

निःशुल्क परामर्श एवं चिकित्सा शिविर सम्पन्न

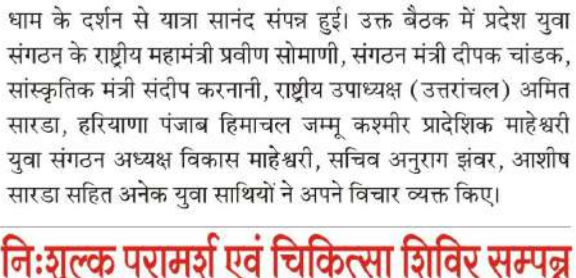

देवास. मप्र पश्चिमांचल माहेश्वरी महिला संगठन की पूर्व अध्यक्ष समाजसेवी व वरिष्ठ चिकित्सक स्व. डॉ. वैजयंती माहेश्वरी की स्मृति में निःशुल्क परामर्श एवं चिकित्सा शिविर लगाया गया। अशोक सोमानी व संजय परवाल ने बताया कि शिविर में डॉ. प्रमोद, डॉ. पुनित एवं डॉ. माहेश्वरी ने सेवाएं दीं। २१८ मरीजों का इलाज कर निःशुल्क दवाइयां दीं। मप्र व्यापार संवर्धन बोर्ड अध्यक्ष एवं राज्यमंत्री दर्जा प्रापत मदनमोहन गुप्ता विशेष रूप से मौजूद थे। शिविर में नगर के प्रसिद्ध डॉक्टरों के अलावा रोटरी क्लब देवास, डॉक्टर्स एसोसिएशन एवं अन्य सामाजिक संगठन सदस्य मौजूद थे। शुभारंभ मोहनलाल परवाल व किशोर भुराडिया इंदौर ने दीप प्रज्वलित किया। यह जानकारी अशोक सोमानी व संजय परवाल ने दी।

राष्ट्रीय महिला संगठन बनाएगा विश्व रिकॉर्ड

महेश नवमी के अवसर पर एक ही समय में एक ही बैनर तले
५ लाख से अधिक गिलास गुलाब शर्बत वितरण का बनाया लक्ष्य

मुम्बई. अभा माहेश्वरी महिला संगठन आगामी महेश नवमी पर्व २१ मई को शर्बत वितरण द्वारा विश्व रिकॉर्ड बनाने जा रहा है। इसके लिए संगठन द्वारा तैयारियां प्रारंभ कर दी गई हैं और गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड को आवेदन भी प्रेषित कर दिया गया है।

उक्त जानकारी देते हुए संगठन की राष्ट्रीय महामंत्री आशा माहेश्वरी ने बताया कि गत वर्ष माहेश्वरी महिलाओं ने अपने सेवा प्रकल्प के अंतर्गत महिला संगठन के बैनर तले जय महेश के उद्घोष के साथ जन-जन को शर्बत पिलाकर महेश नवमी पर्व मनाया गया था। इस अवसर पर समस्त प्रदेशों से जो आंकड़े मिले वे अविश्वसनीय थे। इसमें वितरित शर्बत के गिलास की संख्या लाखों में पहुंच गई थी। इसी से हमें लगा कि हम विश्व रिकॉर्ड भी बना सकती हैं। बस इस बार अध्यक्ष श्रीमती गगडानी के नेतृत्व में इसकी तैयारी कर ली।

५ लाख से अधिक गिलास का लक्ष्य

इस बार विश्व रिकॉर्ड बनाने के अपने उद्देश्य के अंतर्गत अभा माहेश्वरी महिला संगठन ने ५ लाख से अधिक गुलाब के शर्बत के वितरण का लक्ष्य रखा है। संगठन के अनुसार अभी तक के रिकॉर्ड के अनुसार विश्व में शायद ही किसी संगठन द्वारा जनसेवा के अंतर्गत इतनी बड़ी संख्या में शर्बत का वितरण किया गया होगा। अतः यह अपने आप में एक विश्व रिकॉर्ड ही रहेगा। इस रिकॉर्ड को प्रतिष्ठा प्रदान करने के लिए 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' को भी आवेदन कर दिया है। गोल्डन बुक की टीम साक्ष्यों की पहचान कर इसे प्रमाणित करेंगी।

ऐसे होगा शर्बत वितरण

इसमें अभा माहेश्वरी महिला संगठन के नेतृत्व में समस्त अंचल, प्रदेश, जिला, स्थानीय मंडल ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत स्तर भी गुलाब के ठंडे शर्बत का वितरण देशभर में होगा। यह आयोजन पूरे देश में एक दिन एक साथ महेश नवमी २१ जून को प्रातः १० बजे से शाम ४ बजे तक होगा। इसमें हर शर्बत वितरण स्थल पर अभा माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा तैयार बैनर लगाया जाएगा। आयोजक वितरण स्थल से ५-६ फोटो व २-३ मिनट का वीडियो तथा वितरण प्रक्रिया एवं सहभागियों की जानकारी ईमेल या वाट्सअप से नीलम सारडा अथवा उर्मिला कलंत्री को पहुँचेगी।

सभी को अचंभित करेंगी महिलाएं- गगडानी

अभा माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष कल्पना गगडानी का कहना है कि सर्वोत्तम योगेश्वर भगवान शंकर की उपासना का पावन दिन महेश नवमी को इस बार संयोगवश विश्व योग दिवस के रूप में पूरा विश्व भी मनाएगा। तो हमने विचार किया, क्यों न महिला संगठन कुछ ऐसा कर जाए कि हमारा यह उत्पत्ति दिवस सब को अचंभित कर दे। पिछले साल महेश नवमी पर हमारी महिलाओं ने अपनी माहेश्वरी पहचान को महिला संगठन के बैनर तले जय महेश के घोष के साथ, शीतल पेय जन-जन को पिलाकर विशेष रूप से स्थापित की थी। संपूर्ण प्रदेशों से पेय वितरण के जो आंकड़े मिले वे अविश्वनीय थे। लाखों की संख्या पहुंचा दी थी, सब बहनों ने मिलकर। शृंखलाबद्ध संगठन में किसी शक्ति होती है, उसका अहसास हुआ। मिल-जुलकर और एकजुट होकर कार्य करें तो कितना आसान आनंददायक हो जाता है और मन में एक विचार उठा कि हमारी बहनें तो विश्व रिकॉर्ड भी बना सकती हैं। सभी की कर्तव्यपरायणता को देखते हुए हमने गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में एक प्रसिद्धि प्रकल्प के लिए संगठन का आवेदन भेज दिया है। हमें आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि हमारे संगठन का हर अंचल, हर प्रदेश, हर जिला और हर स्थानीय मंडल एकजुट होकर इस अभिनव प्रयास को निश्चित रूप से सफलता की चरम सीमा तक ले जाएगा और एक ऐसा नया विश्व रिकॉर्ड बनाएगा जिसे भविष्य में भी कोई ललकार न सके।

आसावा ने दिया बैंककर्मियों को प्रशिक्षण

हैदराबाद. आदमी के व्यक्तित्व का चहुमुंखी विकास हो एवं उसकी व्यावसायिक प्रतिभा में निखार लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्था लैंडमार्क वर्ल्ड वाइड के एक प्रशिक्षक दल ने महेश बैंक के निजामशाही रोड स्थित प्रधान कार्यालय में प्रारंभिक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया। नेतृत्व क्षमता में निखार लाने वाले प्रशिक्षक दल के प्रबंधक ओमप्रकाश आसावा के साथ श्रीदेवी पाश्या एवं अरविंद वर्मा ने यह प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। श्री आसावा ने सत्र की शुरुआत करते हुए बताया कि लैंडमार्क वर्ल्डवाइड संस्था द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अब तक २.४ मिलियन लोग लाभान्वित हो चुके हैं। संस्थान द्वारा विश्व के २० से अधिक देशों में १०० से अधिक स्थानों पर यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए हैं। महेश बैंक के चेयरमेन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग, वाइस चेयरमैन रामपाल अट्टल, निदेशक रामप्रकाश भंडारी के साथ महाप्रबंधक, सहायक महाप्रबंधक एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने इस प्रारंभिक सत्र में भाग लिया। श्री बंग ने सभी प्रशिक्षकों का सम्मान कर स्मृति चिह्न प्रदान किए।

प्रकल्प कार्यशाला का हुआ आयोजन

ब्यावर. भारत विकास परिषद स्थानीय शाखा के आतिथ्य में प्रांतीय अजमेर जिला प्रकल्प कार्यशाला का आयोजन स्थानीय बंशी भवन में हुआ, जिसमें पूरे प्रांत व केंद्र के पदाधिकारियों व प्रकल्प प्रभारियों ने भाग लिया। शाखा सचिव आलोक गुप्ता ने बताया कि कार्यशाला का शुभारंभ राष्ट्रीय मंत्री वित्त मालचंद गर्ग, प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश कोगटा, प्रांतीय महासचिव कैलाशचंद्र अजमेरा, जिलाध्यक्ष श्यामसुंदर दरगड़, जिला सचिव विजय शर्मा, संगठन मंत्री संदीप बाल्दी व वरिष्ठ उपाध्यक्ष ब्यावर शाखा राजेंद्र काबरा ने किया। कार्यशाला की आवश्यकता पर महासचिव कैलाश अजमेरा ने प्रकाश डाला।

'जिस दिन हम ये समझ जायेंगे कि...
सामने वाला गलत नहीं है
सिर्फ
उसकी सोच हमसे अलग है
उस दिन जीवन से
दुःख समाप्त हो जायेंगे'

महिलाओं ने किया अर्जिता का आयोजन

हापुड़. माहेश्वरी महिला मंडल के तत्वावधान में पश्चिमी उत्तरप्रदेश की तृतीय कार्यकारिणी बैठक 'अर्जिता' का आयोजन हापुड़ में हुआ। साथ ही सुश्रिता समिति में छह महिलाओं का चयन किया गया। शुभारंभ मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संगठन मंत्री मंजू बांगड़ द्वारा किया गया। विशेष अतिथि कांता गगरानी, मंजू हरकुट, विनीता राठी, पुष्पा महेश थे। इसके बाद नारी सशक्तिकरण पर एक लघु नाटिका का मंचन किया गया। बेटियों को साक्षर बनाने पर भी बल दिया गया व समाज के हर कोने तक इस बात को पहुँचाने का प्रण लिया। कार्यक्रम संचालिका आशा सोमानी, जिला अध्यक्ष कांता महेश, नगर अध्यक्ष साधना लोया एवं सचिव आशा तापड़िया ने सभी का हापुड़ आगमन पर माहेश्वरी महिला मंडल हापुड़ की ओर से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया।

चांडक ने इंटरनेशनल सेमिनार में दिया मार्गदर्शन

नागपुर. ख्यात होम्योपैथिक विशेषज्ञ डॉ. कविता चांडक को इस्तानबुल (टर्की) में "होम्योपैथी का ऑटीझम एवं संपूर्ण मानसिक विकारों में योगदान" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय सेमिनार में आमंत्रित किया गया था। इसमें डॉ. चांडक ने पावर पाइंट प्रजेंटेशन और मरीजों के माध्यम से इस विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

बाल संस्कार शिविर का हुआ आयोजन

परभणी. स्थानीय मैत्री महिला ग्रुप की ओर से सरोज घनश्यामदास गट्टानी (अध्यक्ष परभणी जिला माहेश्वरी महिला संगठन) के नेतृत्व में सात दिवसीय बाल संस्कार शिविर परभणी में आयोजित किया गया। इसमें छोटे-छोटे बालकों को विविध श्लोक, प्राणायाम, भगवती गीता, नीति मूल्यों पर संस्कार बोधकथा, रेसीपी, क्राफ्ट ड्राइंग, पेटिंग, मेहंदी, रंगोली, सामान्य ज्ञान, राष्ट्रभक्ति पर गीत जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर में ११० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शुभारंभ समारोह की अध्यक्षता श्रीवल्लभ काबरा ने की। उद्घाटक महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के संगठन मंत्री ब्रिजगोपाल तोषणीवाल तथा प्रमुख अतिथि परतुर निवासी श्यामसुंदर धूत, सजीत अबोटी दैनिक भास्कर के जिला प्रतिनिधि आदि थे। शिविर में सरोज गट्टानी, शीला डागा, सुनीता अजमेरा, मंगला मुर्क्या, शीतल भंडारी, विद्या डागा, अंकिता सारडा, कल्पना डागा, स्मिता सोमानी आदि समस्त सदस्याओं का सहयोग रहा।

जाखेटिया परिवार का 18-19 अगस्त को महाधिवेशन

भीलवाड़ा. अखिल भारतीय जाखेटिया (होलानी-भुवानीवाल) परिवार का महाअधिवेशन श्रावण सुदी ८ व ९ दिनांक १८ व १९ अगस्त २०१८ को कुलदेवी झांखड़ माताजी मांडल जिला भीलवाड़ा (राजस्थान) पर रखा गया है। संजय जागेटिया ने बताया कि इसमें १८ अगस्त को रात्रि जागरण एवं १९ को प्रातः शोभायात्रा एवं महाप्रसादी का आयोजन रखा गया है। समस्त जाखेटिया परिवारों से पूरे देश में जानकारी प्रेषित करने व रजिस्ट्रेशन कराने की अपील भी की गई। जाखेटिया परिवार की संपूर्ण जानकारी भी पुस्तिका द्वारा प्रेषित की जा रही है। पुस्तक का विमोचन भी १९ अगस्त को प्रातः संपन्न होगा। एक माह पूर्व जानकारी प्राप्त होने पर ही पुस्तक में जानकारी प्रकाशित की जा सकेगी। इसमें आर्थिक सहयोग भी स्वीकार्य है।

बुद्ध पूर्णिमा पर आइस्क्रीम वितरण

जबलपुर. प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर श्रीमती मानकुंवरबाई न्यास एवं माहेश्वरी मंडल जबलपुर के संयुक्त तत्वावधान में श्री सेठ बालकृष्णदास मालपानी बखरी के सामने, हनुमान ताल में आइसक्रीम का वितरण किया गया। शुभारंभ समाज के वरिष्ठ सदस्य सेठ बालकृष्ण मालपानी के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर माहेश्वरी मंडल के अध्यक्ष मदनगोपाल जेठा, मुकुंददास माहेश्वरी, प्रवीण मालपानी, नंदकिशोर भट्टर, महेश भट्टर, विनोद मालानी, दीपक मालपानी, उत्तम माहेश्वरी, श्यामसुंदर जेठा, मनमोहन माहेश्वरी, हरिओम माहेश्वरी, रोहित जेठा, मनीष भट्टर आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर १५०० कप आइसक्रीम का वितरण किया गया।

मवेशियों के लिए की पेयजल की व्यवस्था

हरदा. माहेश्वरी सामाजिक बंधुओं द्वारा जनसहयोग से जनहित में भीषण गर्मी को देखते हुए पानी की १० टंकियां रखी गईं, जिससे मूक मवेशी प्यासे ना रहें। पानी भरने की जिम्मेदारी भी ली गई। इसमें राजेंद्र माहेश्वरी, सुनील अग्रवाल खातेगांव, मनोज महलवार पार्षद, आशीष अग्रवाल सर्राफ, घनश्यामदास (दाऊ) भैया सोमानी, जया बाहेती व कुसुम राठी आदि कई गणमान्यजन मौजूद थे।

मातृ दिवस का किया आयोजन

बूंदी. माहेश्वरी महिला मंडल की ओर से 'मातृ दिवस' की पूर्व संध्या पर नैनवां रोड स्थित सुदामा सेवा संस्थान में निवासित प्रवासी मातृ शक्ति के मध्य समारोहपूर्वक मनाया गया। न्याती ने कहा कि मातृ दिवस का इतिहास सदियों पुराना एवं प्राचीन है। 'मदर्स डे' मनाने का मूल कारण समस्त मांओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है। इस दौरान सम्मान व श्रद्धा के साथ प्रवासी मातृशक्ति को साड़ियां व दैनिक उपयोग की सामग्री के किट वितरित कर सम्मान किया गया। मंडल सचिव सोनल मूंदडा, पूर्व सचिव पुष्पा बिरला, गरिमा बहेड़िया, शारदा मंत्री, संगीता मूंदडा, शिल्पा सोमाणी, स्वाति तोतला, कविता झंवर, प्रिया झंवर, प्रतिभा लड्ढा, रेणु बहेड़िया, जानकी बिरला आदि सदस्य उपस्थित थीं।

प्याऊ का किया शुभारम्भ

रायपुर (छग). भीषण गर्मी को देखते हुए महेश सभा, रायपुर (छग) द्वारा सुंदर नगर चौक पर प्याऊ का शुभारंभ किया गया। महेश सभा के सचिव किसन गोपाल करवा ने बताया कि महेश सभा, रायपुर हर वर्ष गर्मी में राहगीरों की प्यास बुझाने के लिए प्याऊ लगाती है। प्याऊ के उद्घाटन के समय मुख्य रूप से राजेंद्र सोमानी व स्थानीय निवासी उपस्थित थे।

महेश नवमी पर सार्वजनिक अवकाश की मांग

ब्यावर. देश के औद्योगिक, व्यावसायिक, सामाजिक, सरकारी करों के भुगतान एवं चेरिटी आदि अन्य गतिविधियों में जनसंख्या अनुपात को देखते हुए माहेश्वरी समाज का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। ऐसी स्थिति में केंद्र व राज्य सरकार द्वारा अभी तक महेश नवमी पर सार्वजनिक अवकाश घोषित नहीं किया गया है, जबकि अन्य समाजों के विभिन्न गतिविधियों पर ऐच्छिक और सार्वजनिक अवकाश घोषित हो रखा है। अभी-अभी ५ अप्रैल को ब्राह्मण समाज की मांग पर राज्य सरकार द्वारा १८ अप्रैल को परशुराम जन्मोत्सव पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया गया है। माहेश्वरी पंचायत बोर्ड ब्यावर के पूर्व अध्यक्ष चैनसुख हेड़ा ने अध्यक्ष अभा माहेश्वरी महासभा, अध्यक्ष अभा सेवा सदन एवं स्थानीय स्तर के समाज के संगठनों को पत्र प्रेषित कर सरकार से उपरोक्त मांग करने का निवेदन किया है।

सिक्किम में मना बेटी उत्सव

गंगटोक. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के निर्णयों का सम्मान करते हुए अब 'बेटी उत्सव' मनाने की परंपरा की सिक्किम राज्य में शुरुआत की गई है। इसके अंतर्गत पश्चिम बंगाल माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष एवं सिक्किम राज्य माहेश्वरी सभा अध्यक्ष रमेश पेड़ीवाल के यहां पोती के जन्म पर उत्सव मनाया गया। इसमें शहर के सभी मारवाड़ी परिवारों ने हिस्सा लिया। महिला संगीत के साथ साथ बच्चों ने रंगारंग नृत्य पेश किया। इस अवसर पर शहर के वरिष्ठ नागरिक भी बधाई देने उपस्थित रहे। श्री पेड़ीवाल ने बताया कि इस परंपरा को पूरे प्रदेश में एक आंदोलन का रूप देने की कोशिश करेंगे।

जरूरतमंदों की सेवा

मालेगांव. महालक्ष्मी माहिला मंडल की तरफ से बैसाग की तपती धूप में दो वक्त की रोटी के इंतजार में बैठे जरूरतमंदों को नमकीन चावल, मिठाई, ठंडा रायता व सिर ढंकने के लिए रूमाल वितरित किए गए। राहगीरों को शीतलता का अहसास कराने ठंडे जल की प्याऊ का शुंभारभ किया गया। आशीष झंवर, मंगला पोरवाल, नंदा पोरवाल, इंदू जाजू आदि मौजूद थे। ग्यारस के दिन भी जरूरतमंद महिलाओं को गर्मी से राहत देने जलुकुंभ (मटका), खरबूजा, गिलास, दक्षिणा, पाणी चालन दिया गया। मंडल अध्यक्ष सरिता कैलाश बाहेती ने सभी उपस्थित लोगों का अभिनंदन किया। शारदा लाहोटी व वंदना जाजू ने आभार माना। शमा जाजू, बीना भंडारी व अन्य सदस्यों का सहयोग रहा।

नानीबाई का मायरो का आयोजन

बैंगलोर. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा पुरुषोत्तम मास के उपलक्ष्य में भगवान एवं भक्त के मिलन का मंचन तथा मार्मिक प्रसंग नानीबाई रो मायरो का आयोजन बाल व्यास जया किशोरी जी के श्रीमुख से किया जाएगा। उक्त आयोजन माहेश्वरी भवन ३/४, ओकलीपुरम मेन रोड में ६ से ८ जून तक होगा। समय दोपहर ३ से शाम ७ बजे तक रहेगा। महिला मंडल ने समस्त श्रद्धालुओं से इस अवसर का पुण्य लाभ लेने की अपील की है।

जिला महिला मंडल की बैठक 16 को

देवास. जिला महिला मंडल की कार्यकारिणी की बैठक आगामी १६ जून को लोहारदा में आयोजित होगी। अध्यक्ष कौशल्या तापड़िया व सचिव किरण बाल्दी ने बताया कि माहेश्वरी महिला मंडल लोहारदा के आतिथ्य में यह बैठक उक्त दिनांक को स्थानीय समाज भवन में दोपहर १२ से शाम ५ बजे तक आयोजित होगी। इसमें संपूर्ण जिले से सदस्याएं शामिल होंगी। इस अवसर पर सुकीर्ति प्रतिभा विकास समिति जिला देवास द्वारा एक अनूठी प्रतियोगिता शिव-पार्वती विवाह पत्रिका निर्माण का आयोजन भी किया गया है। इसमें प्रत्येक गांव-शहर से दो पत्रिकाएं शामिल की जाएंगी। इस प्रतियोगिता की प्रभारी ललिता तापड़िया लोहारदा रहेंगी।

50 साल की उम्र में 5643 मीटर की एवरेस्ट चढ़ाई

अमरावती. स्थानीय समाजसेवी कुमुद महेंद्र व नीता मक्कड़ ने ५० साल की उम्र में जबर्दस्त जोश दिखाते हुए एक अनोखा रिकॉर्ड कायम किया। एवरेस्ट बेस कैंप ५६४३ मीटर की ऊंचाई तक ट्रैकिंग कर अमरावती शहर का नाम रोशन करते हुए युवाओं के सामने एक विजन प्रस्तुत किया। अपने अनुभव बताते हुए कुमुद महेंद्र ने बताया कि वे पिछले १० सालों से ट्रैकिंग कर रहे हैं, संडकफू (सिक्किम), सौरकुंडी पास (हिमाचल), चंद्रखानिक, सारपास, दौड़ीताल, वेली ऑफ फ्लावर, बेदनी, बुग्वाल, रूपकुंड जैसे ट्रैक किए हैं, ये सभी नेशनल ट्रैक हैं। इस बार जनवरी में निश्चित किया कि एवरेस्ट बेस कैंप में हर हाल में जाना है। गार्जन गिरी प्रेमी इंस्टिट्यूट ऑफ मॉउंटेनिंग संस्था पूना से संपर्क किया। संपर्क करने के बाद अपना नाम पंजीयन कराया। जनवरी व फरवरी में यहां प्रैक्टिस शुरू की। उनका कोई ट्रेनर या मार्गदर्शक नहीं था। केवल दिल में जज्बा और कुछ अलग करने की जिद थी। जीजीआईएम संस्था ने कुछ दिशा निर्देश दिए थे, जिसके आधार पर हमने यह सबकुछ किया।

फोफलिया के जन्मदिवस पर डायलेसिस योजना

सोलापुर. सामूहिक विवाह के प्रणेता ब्रिजमोहन फोफलिया के नेतृत्व में उनके ६५वें जन्मदिवस पर सोलापुर के आश्विनी अस्पताल में मुफ्त किडनी डायलेसिस सुविधा शुरू हुई। इस अवसर पर आश्विनी अस्पताल के चेअरमैन बिपीनभाई पटेल, रंगनाथजी बंग, दामोदरजी दरगड, वेणुगोपालजी तापड़िया, पूनम राठी आदि उपस्थित थे। श्री फोफलिया को जन्मदिवस की बधाई पद्मशाली पुरोहित संघ जिला पंतलु समाज, पद्मशाली समाज, लिंगायत समाज, गुजराती मित्र मंडल, माहेश्वरी प्रगति मंडल, सोलापुर माहेश्वरी युवा मंडल, जैन सोशल ग्रुप, अखिल भारतीय जैन संघटना, पतंजलि योग समिति, माहेश्वरी महिला प्रगति मंडल, राजस्थानी महिला मंडल, मारवाड़ी युवा मंच, माहेश्वरी यंगस्टर्स आदि कई संगठनों ने समारोहपूर्वक दी।

सम्मान हमेशा समय का होता है
लेकिन आदमी उसे अपना समझ लेता है

महेश नवमी महोत्सव की स्मारिका का विमोचन

भीलवाड़ा. प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महेश नवमी महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इसकी तैयारियों को मूर्तरूप दिया जा रहा है। इस वर्ष महोत्सव कार्यक्रम २१ दिवसीय होगा। श्रीनगर माहेश्वरी सभा अध्यक्ष केदारमल जागेटिया ने बताया कि कार्यक्रम की स्मारिका का विमोचन नागोरी गार्डन स्थित माहेश्वरी भवन में पूर्व सभापति रामपाल सोनी के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर उपसभापति देवकरण गग्गड़, आरएल नौलखा, राधेश्याम सोमानी, दीनदयाल मारू, कैलाश मूंदड़ा, राधेश्याम चेचाणी, प्रहलाद लड्ढा, छीतरमल सोनी, क्षितितज सोमानी सहित समाज संगठन के अनेक पदाधिकारी मौजूद थे। नगर सभा मंत्री केदार गगरानी ने बताया ५००० स्मारिकाओं का वितरण १५ क्षेत्रीय सभाओं के माध्यम से किया जाएगा। इसमें महोत्सव को लेकर सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध हैं।

यह है तैयारी – संयोजक अतुल राठी व सहसंयोजक सुरेश बिडला, राजेंद्र पोरवाल ने बताया महोत्सव का समापन विशाल शोभायात्रा, भगवान महेश का महाअभिषेक व महासंगम व लगभग १५ हजार से अधिक व्यक्तियों के सामूहिक भोज से होगा। २१ दिवसीय आयोजन को लेकर ४० सदस्यीय कमेटियों का गठन किया गया। संरक्षक बंसीलाल सोडाणी व अनिलकुमार बांगड़, संयोजक अतुल राठी व सहसंयोजक सुरेश बिरला, राजेंद्र पोरवाल रहेंगे। प्रचार प्रसार समिति में महावीर समदानी, मार्गदर्शक समन्वय एवं निर्णायक समिति में कैलाशचंद्र कोठारी, वित्तीय समिति में ओमप्रकाश गट्टानी, कार्यालय समिति में कृष्णगोपाल राठी, प्रचार प्रसार समिति में महावीर समदानी, खेलकूद समिति में कैलाश अजमेरा व अनिल झंवर, निःशुल्क चिकित्सा शिविर में श्याम बिरला, महिला रचनात्मक कार्यक्रम में गायत्री मूंदड़ा व वीणा मोदी, महारुद्राभिषेक में राकेश गग्गड़, सांस्कृतिक संध्या के आयोजन में एसएन गग्गर, दीप प्रज्वलन व रंगोली में वीणा राठी, टैलेंट सर्च व क्विज प्रतियोगिता में प्रदीप लाठी व महेश देवपुरा, माहेश्वरी वंशोत्पति में महेश सोमानी व प्रहलाद नवाल, रक्तदान शिविर में महेश जाजू, तरुण सोमानी, साइकिल रैली में लक्ष्मीनारायण डाड, बाबूलाल जाजू, महाअभिषेक में कैलाशचंद्र, शोभायात्रा में उदयलाल समदानी, प्रतिभा चयन में जगदीशप्रसाद कोगटा, मुद्रण में शंभूप्रसाद काबरा, कूपन वितरण में गोपाल नरानीवाल व रमेशचंद्र राठी, स्वागत द्वार समिति में प्रमोद डाड, भोजन निर्माण में रमेश नामधरानी, भोजन परिवहन में सुभाष बाहेती, स्वच्छता समिति में पार्षद विजय लढ़ा आदि को मुख्य प्रभारी बनाया गया है।

खुदा ने बड़े अजीब से
दुनिया के रिश्ते बनाये हैं,
सबसे ज्यादा वही रोया है
जिसने ईमानदारी से निभाये हैं

With Best Compliments From

Delhi Rajasthan Transport Co. Ltd.

DRTC
(An ISO 9001 : 2015 Certified Company)

Regd.Office : DRTC House, Behind Olympic Complex, Jodhpur-342001
Phone : 0291-2633673-74 **Fax :** 0291-2636201
E-mail: jodhpur@drtcindia.com Website : www.drtcindia.com

Jodhpur (Booking & Delivery Office)
F-670, Transport Nagar, Basni 2nd Phase
Phone : 0291-2633672, 2633675
Mobile : 98291-12119, 98290-17119

INDORE
10, T.S. Navlakha, Loha Mandi
Tel-4285607, 4059119 Mo. : 99935-35119
E-mail : indore@drtcindia.com

Regular parcel service from & to for all the destination of

| RAJASTHAN | GUJARAT | HARYANA | MAHARASTRA | ANDHRA PRADESH | PUNJAB |
| KARNATAKA | TAMIL NADU | JAMMU | KERALA | UTTAR PRADESH | MADHYA PRADES |

विद्यालय को भेंट किया वाटर कूलर

बूंदी. शहर के इंदिरा कॉलोनी स्थित वाणी विशेष विद्यालय में ज्येष्ठ शुक्ल पुरुषोत्तम मास के अवसर पर माहेश्वरी महिला मंडल ने 'शिव-धारा' वाटर कूलर भेंट किया। इसका लोकार्पण मंडल अध्यक्ष प्रेरणा न्याती ने किया। मंडल सचिव सोनल मूंदड़ा ने बताया कि विद्यालय में पानी की महत्ता पर गोष्ठी रखी गई। इस अवसर पर अध्यक्ष प्रेरणा न्याती ने पानी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जल प्रकृति द्वारा दिया गया एक अमूल्य उपहार है। जल के इतना महत्वपूर्ण होने के बाद भी लोगों को इसकी कीमत ज्यादा नहीं लगती है। शाला प्रबंधक गायत्री गोस्वामी ने महिला मंडल के इस कार्य के लिए आभार जताया। पुष्पगुच्छ भेंटकर सभी सदस्यों का स्वागत किया। मंडल की पूर्व अध्यक्ष मंजू मोदी, पुष्पा बिरला, गरिमा बहेड़िया, शारदा मंत्री, संगीता मूंदडा, शिल्पा सोमाणी, मधु बहेड़िया, लक्ष्मी तोतला, निधि तोषनीवाल, श्रुति मंडोवरा आदि कई सदस्याएं मौजूद थीं।

द क्विंट समरकैम्प का आयोजन

भीलवाड़ा. महेश पब्लिक स्कूल (महेश प्रगति संस्थान) द्वारा माहेश्वरी भवन शास्त्री नगर में १० दिवसीय क्विंट समर कैंप के आयोजन की घोषणा की गई। १७ मई को मुख्य अतिथि कंचन ग्रुप के चेयरमैन लादूराम बांगड़ ने इसकी शुरुआत की। मंचासीन अतिथियों में गोपाल राठी, कृष्णगोपाल तोषनीवाल, पूर्व सभापति ओमप्रकाश नरानीवाल व महेश प्रगति संस्थान अध्यक्ष सत्यनारायण डाड थे। कार्यक्रम का संचालन सुशील मरोठिया ने किया। कंवरलाल पोरवाल ने बताया कि इसमें विभिन्न एक्टिविटी को अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। महेश पब्लिक स्कूल के संचालन की रूपरेखा विस्तार से बताई गई। इस अवसर पर महेश प्रगति संस्थान के सदस्य मौजूद थे।

अधिकमास में की सप्तसागर व नवनारायण की यात्रा

उज्जैन. अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत राष्ट्रीय सुरम्य समिति व मप्र पूर्व क्षेत्रीय माहेश्वरी महिला संगठन के संयुक्त तत्वावधान में पुरुषोत्तम रमणीक यात्रा व सप्तम सागर व नवनारायण यात्रा का दो दिवसीय आयोजन गत १७ व १८ मई को किया गया। इसके अंतर्गत १७ मई को चिंतामण गणेश, वैंकटेश मंदिर दर्शन, भैरवनाथ, मंगलनाथ, हरसिद्धि के दर्शन कर सभी ने बैठक जी में झारी भर प्रसाद ग्रहण किया। शाम को अखिल भारतवर्षीय से आए सभी पदाधिकारियों का समिति व पूर्वी मप्र व उज्जैन जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात शिप्रा तट पर छप्पन भोग व चुंदड़ी महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें संपूर्ण भारत वर्ष से करीब १५० सदस्याएं शामिल हुई थीं। अगले दिन १८ मई को सभी ने नवनारायण व सप्त सागर का पूजन अर्चन करवाया गया। विभिन्न नगर से आईं सदस्याओं ने कहा कि इतने सुंदर कार्यक्रम के लिए पूर्व मप्र महिला संगठन व सुरम्या समिति संयोजिका मनीषा लड्ढा व रंजना बाहेती बधाई की पात्र हैं। पूर्व मप्र महिला संगठन अध्यक्ष प्रतिभा झंवर ने बताया कि बाहर से आकर उज्जैन में हमें एक कार्यक्रम को सफल बनाने में ओमप्रकाश बियाणी, पुष्पा बियाणी का पूर्ण सहयोग मिला। उज्जैन माहेश्वरी महिला संगठन व उज्जैन नगर संगठन का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। नागपुर से आईं गीता गट्टानी, उदयपुर से आईं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष कौशल्या गट्टानी, मध्यांचल उपाध्यक्ष मंगला मर्दा, उदयपुर से आईं जयश्री, रतलाम से आईं शारदा लड्ढा व सरोज अग्रवाल ने भी कार्यक्रम की प्रशंसा की।

जरा सी बात से मतलब बदल जाते हैं।
उंगली उठे तो बेइज्जती
अंगूठा उठे तो तारीफ
और
अंगूठे से अंगुली मिले
तो लाजवाब...
यही तो है... जिंदगी का हिसाब।

श्री माहेश्वरी समाज भोपाल के चुनाव सम्पन्न

भोपाल. श्री माहेश्वरी समाज भोपाल वृहद के चुनाव भारी गहमागहमी के साथ गत २० मई को संपन्न हुए। इसमें आदर्श पैनल के प्रत्याशियों ने भारी मतों से विजय प्राप्त की। इसमें हरीश झँवर अध्यक्ष, सुरेश झँवर वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कमल मालपानी मंत्री और कृष्णकुमार बजाज कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। विजयी आदर्श पैनल को भोपाल जिला सभा सहित तीनों नगर इकाइयों का समर्थन प्राप्त था, जबकि संकल्प पैनल संस्था के पूर्व पदाधिकारियों द्वारा उतारी गई थी। सभी विजयी प्रत्याशियों को जिला सभा अध्यक्ष श्याम बांगड़, सचिव राजेंद्र गट्टानी, अंचल अध्यक्ष सुनील लड्ढा, शिशिर तोषनीवाल, दिनेश जाखोटिया, प्रदेशसभा के मानद मंत्री लक्ष्मेंद्र माहेश्वरी, महेश सेवा ट्रस्ट के प्रदेशाध्यक्ष त्रिलोक जाजू, महासभा के पूर्व संयुक्त मंत्री वैद्यराज रमेश माहेश्वरी सहित अनेक समाज बंधुओं ने बधाई देते हुए स्मरणीय कार्यकाल हेतु बधाई दी।

10 देशों की विदेश यात्रा पर माहेश्वरी

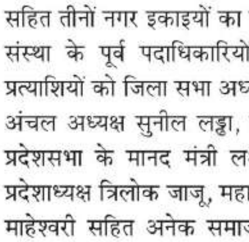

धार. वरिष्ठ कर सलाहकार एवं वैश्य महासम्मेलन मप्र के प्रदेश महामंत्री महेशचंद्र माहेश्वरी अपनी धर्मपत्नी के साथ १० देशों लंदन, पेरिस (यूनाइटेड किंगडम), फ्रांस, नीदरलैंड, बेल्जियम, जर्मनी, स्विटजरलैंड, लीचटेनस्टीन, आस्ट्रिया, वेटीकन सिटी व इटली की विदेश यात्रा पर गए हैं। उनके साथ डॉक्टर्स, वकील, अधिकारी आदि लोगों का ग्रुप भी जा रहा है।

अधिक मास में सेवा

दिल्ली. अधिक मास के इस पावन महीने में माहेश्वरी महिला संगठन, दक्षिण दिल्ली द्वारा गत १७ मई को १६० महिलाओं को साड़ियां व सलवार कुर्ते वितरित किए गए।

प्री वेडिंग शूट का प्रदर्शन नहीं

बिजयनगर (अजमेर). गत २० मई को माहेश्वरी समाज बिजयनगर की आम बैठक आयोजित हुई। इसमें अजमेर जिले में सर्वप्रथम बिजयनगर माहेश्वरी समाज द्वारा 'प्री वेडिंग शूट' व उसके प्रदर्शन पर समाज में व समाज के भवन में किसी भी शादी समारोह में पूर्ण प्रतिबंध का प्रस्ताव सर्वसम्मति से लागू किया गया। २० मई को सभी समाजबंधु जिसमें सभी वर्ग के लोग, महिलाएं, युवा, प्रौढ़आदि ने सकारात्मक संकेत वाट्सअप पर लाइक करके दिया और शाम ६.४५ बजे साधारण सभा में बिजयनगर माहेश्वरी समाज ने बद्रीनारायण नवाल के प्रस्ताव पर विस्तृत चर्चा करते हुए एक सुर में आधुनिक कुरीति 'प्री वेडिंग शूट व प्रदर्शन' को समाज में प्रतिबंधित कर दिया। यदि कोई उक्त प्रतिबंध का उल्लंघन करेगा तो सभी समाजबंधु विरोधस्वरूप उस विवाह समारोह से बिना भोजन करे, लौट जाएंगे। उक्त जानकारी बद्रीनारायण नवाल ने दी।

माहेश्वरी सचिव, लड्ढा उपाध्यक्ष

जयपुर. सफायर आनंद फ्लैट ऑनर्स सोसायटी मीरा मार्ग, बनी पार्क के द्विवार्षिक (२०१८-२०२०) चुनाव संपन्न हुए। इसमें ओमप्रकाश माहेश्वरी (टुवानी) सचिव व वासुदेव लड्ढा उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। श्री टुवानी जयपुर हार्डवेयर मर्चेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व महारानी गायत्रीदेवी (आतिशा) मार्केट के लगातार ११ वर्ष तक महामंत्री रह चुके हैं तथा जयपुर गुलाबी नगर जेसीस के अध्यक्ष रह चुके हैं।

रक्तदान शिविर सम्पन्न

शोरापुर (कर्नाटक). माहेश्वरी महिला मंडल के रजत महोत्सव के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। सुबह ९ बजे डॉक्टर लक्ष्मीनारायण राठी के नेतृत्व में व यादगिरी के रेडक्रॉस सोसाइटी के सहयोग से शिविर का उद्घाटन हुआ। ६५ महानुभावों ने रक्तदान किया। शाम ५ बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। कर्नाटक गोवा प्रांतीय माहेश्वरी महिला मंडल अध्यक्ष कमला तोषनीवाल, गुलबर्गा महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा मालू, रायचूर महिला मंडल अध्यक्ष तारा इनाणी, सेडम महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी हेड़ा, सुरापुर महिला मंडल अध्यक्ष ताराबाई झंवर आदि मौजूद थीं।

जिंदगी को हमेशा मुस्कुराकर गुजारो
क्योंकि आप नहीं जानते कि कितनी बाकी है

छात्रावास में बिदाई स्वागत

दुर्ग (छग). गत २० अप्रैल को महेश एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट भिलाई द्वारा संचालित सेठ मीठालाल राठी माहेश्वरी छात्रावास एवं सेठ श्रीकिशन रामप्यारीबाई डागा छात्रावास में छात्रों का विदाई एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि महेश सेवा निधि ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. सतीश राठी तथा विशिष्ट अतिथि दुर्ग जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष राजकुमार गांधी व माहेश्वरी पंचायत के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं छग प्रादेशिक सभा के संयुक्त मंत्री राधेश्याम राठी थे। अतिथियों का स्वागत मोहन राठी, बृजकिशोर सूरजन, जेपी मोहता, मुरलीधर राठी, बालकिशन झंवर एवं सुनंदा राठी द्वारा किया गया। ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी एवं महासभा के उपसभापति मोहन राठी ने विगत नौ सत्रों में संचालित दोनों छात्रावासों की प्रगति पर प्रकाश डाला। दोनों छात्रावासों में अध्ययनरत ७५ प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले ६५ मेधावी विद्यार्थियों को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया। जगदीश चांडक मानद मंत्री दुर्ग जिला माहेश्वरी सभा, नरेंद्र राठी, सुखदेव राठी, पीएल सोमानी, मुरली राठी, शिवकुमार सोमानी, नरेंद्र सूरजन, मनीष राठी, कमल भूतड़ा सहित कई गणमान्यजन मौजूद थे।

एकादशी पर किया शरबत का वितरण

दिल्ली. प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन, दक्षिणी क्षेत्र द्वारा गत २६ अप्रैल २०१८ को मोहिनी एकादशी के पावन अवसर पर छतरपुर में ३००० लोगों को ८०० लीटर शर्बत पिलाया गया। सभी ने निर्णय लिया कि आने वाले अधिक मास में इसी प्रकार के और भी शरबत वितरण के कार्य करेंगे। इसमें अध्यक्ष वीणा जाजू, सचिव बेला शारदा, खुशबू जाजू, उमा सोनी, सुधा डागा, उमा लखोटिया, योगेश जाजू का विशेष सहयोग रहा।

> शिकायत कम और शुक्रिया ज्यादा करने से जिंदगी आसान हो जाती है।

महिला कार रैली का हुआ आयोजन

वाराणसी. माहेश्वरी क्लब वाराणसी द्वारा माहेश्वरी कला संस्कृति एवं बनारस क्लब के सौजन्य से महिला सशक्तिकरण विषय पर 'महिला कार रैली' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वाराणसी के माहेश्वरी समाज व अन्य कई समाजों से ६५ महिलाओं ने हिस्सा लिया। सबसे युवा, सबसे सुंदर सजी हुई गाड़ी व प्रथम चार विजेता महिलाओं को पुरस्कृत किया गया। महिला सशक्तीकरण के विषय को इस अनूठे रूप में पेश करने पर माहेश्वरी समाज को सराहना प्राप्त हुई। कार्यक्रम में मुख्य रूप से क्लब अध्यक्ष निशांत नेवर, कैलाश राठी, मोहिनी झंवर, ऋतु दुजारी, वरुण मूंदड़ा, गौरीशंकर नेवर, गौरव राठी, दीपक दुजारी, प्रतीक मूंदड़ा, मनीष माहेश्वरी, सृष्टि मूंदड़ा आदि मौजूद थे।

युवा मंडल के चुनाव सम्पन्न

रायपुर. स्थानीय माहेश्वरी युवा मंडल की वार्षिक आमसभा एवं चुनाव वृंदावन हॉल में संपन्न हुए। इसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष संजय हरनारायण मोहता, सचिव रोहित साबू, उपाध्यक्ष अविनाश बागड़ी, सहसचिव सौरभ बागड़ी, कोषाध्यक्ष संजय राठी, प्रसार प्रचार संयोजक नीलेश जाजू, खेलकूद संयोजक रमेश माहेश्वरी एवं अभिषेक राठी, सांस्कृतिक संयोजक सुमित मूंदड़ा एवं दीपक लड्ढा चुने गए।

बालाजी मंदिर में मना ब्रह्मोत्सव

पुणे. धार्मिक कार्य में अग्रसर श्री माहेश्वरी बालाजी मंदिर (कस्बा पेठ) में ब्रह्मोत्सव गत २२ अप्रैल को धूमधाम से मनाया गया। महाअभिषेक युवा संगठन के अध्यक्ष सचिन जाजू ने सपत्नीक किया। आरती दर्शन तथा महाप्रसाद का आयोजन भी किया गया। मंदिर को फूलों से तथा मंडप से सजाया गया। महेश बैंक पुणे के संचालक जवाहर बाहेती, जितेंद्र राठी, महेश सेवा संघ अध्यक्ष श्यामसुंदर मूंदड़ा, सचिव ओमप्रकाश गट्टाणी, विद्या प्रचारक मंडल कोषाध्यक्ष संजय जाखोटिया, बालाजी मंदिर ट्रस्ट नारायण पैठ के अध्यक्ष संजय चांडक, नाना पैठ श्रीराम मंदिर ट्रस्ट के सत्यनारायण राठी आदि कई गणमान्यजन मौजूद थे। अध्यक्ष सुरेश नावंदर के साथ उनके पूरे विश्वस्त मंडल, महिला मंडल तथा युवा संगठन का विशेष सहयोग रहा।

पश्चिमी म.प्र. महिला संगठन ने किया स्फूर्ति 2018 का आयोजन

सामाजिक समस्याओं पर चिंतन के साथ किया प्रतिभा प्रदर्शन

नागदा (उज्जैन). पश्चिमी मप्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की द्वितीय कार्यकारिणी सभा स्फूर्ति २०१८ का आयोजन गत ५ मई को नागदा (मप्र) में स्थानीय महिला मंडल के संयोजन में किया गया। कार्यक्रम का विशेष लक्ष्य नारी सशक्तिकरण था, जिसे लेकर कई कार्यक्रम आयोजित हुए। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी थीं। प्रदेशाध्यक्ष अरुणा बाहेती, प्रदेश सचिव वीणा सोमानी, पुष्प माहेश्वरी, जिलाध्यक्ष कृष्णा जाजू, सचिव हेमा मोहता, मुख्य अतिथि प्रीति मालपानी, चंद्रिका मोहता एवं निहारिका जैन आदि मंच पर उपस्थित थीं। कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष श्रीमती गगडानी ने दीप प्रज्वलन के साथ की। अतिथियों के स्वागत के लिए नागदा की बहुओं ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। स्वागत नृत्य के पश्चात अतिथियों का स्वागत प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती बाहेती एवं सचिव श्रीमती सोमानी द्वारा किया गया। स्वागत अध्यक्ष स्नेहलता राठी द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन नागदा महिला मंडल की अध्यक्ष सीमा मालपानी द्वारा दिया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के परिचय का वाचन अनिता राठी ने किया।

समाज सुधार व नारी सशक्तिकरण का आह्वान

अपने अध्यक्षीय भाषण में कल्पना गगडानी ने महेश नवमी पर शीतल पेय पिलाने का सभी समाजजनों से रिकॉर्ड बनाने का आह्वान किया। तत्पश्चात प्रदेशाध्यक्ष अरुणा बाहेती ने आगामी वर्ष की योजनाओं से अवगत करवाया, जिनमें प्रमुख रूप से राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक विवाह एवं आंचलिक अधिवेशन का आयोजन किया जाना है। प्रदेश सचिव वीणा सोमानी ने सचिव रिपोर्ट के अंतर्गत सभी समितियों द्वारा की गई गतिविधियों को प्रस्तुत किया। इसके पूर्व विशेष अतिथि प्रीति मालपानी एवं चंद्रिका मोहता के उद्बोधन हुए, जिसमें क्रमशः नारी सशक्तिकरण की महत्ता एवं प्रीवेडिंग फोटो के नकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया।

सुश्रीता नारी प्रतियोगिता में ऋचा व साधना प्रथम

सुश्रीता नारी प्रतियोगिता राष्ट्रीय संयोजिका नम्रता बियाणी द्वारा कराई गई। ये प्रतियोगिता दो आयु वर्ग में थी, प्रथम ४५ वर्ष तक एवं द्वितीय ४५ वर्ष से अधिक की महिलाएँ। इसमें जूनियर ग्रुप में प्रथम ऋचा बियाणी कांटाफोड़, द्वितीय दीप्ति भूतड़ा इंदौर रहीं। मनीषा सोमानी देवास एवं मोनिका तोषनीवाल को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। सीनियर ग्रुप में प्रथम साधना बियाणी कांटाफोड़, द्वितीय मनीषा गांधी खंडवा व तृतीय रुक्मणि भूतड़ा उज्जैन रहीं। सभी विजेताओं को पुरस्कार अखिल भारतवर्षीय मा. म. संगठन की कार्यसमिति की स्वागत समिति सदस्य गीता तोतला द्वारा दिए गए।

दिसंबर में होगा अगला अधिवेशन

कार्यक्रम का संचालन उज्जैन जिला महिला संगठन की सचिव हेमा मोहता एवं बरखा खटौड़ द्वारा किया गया। अंत में आभार प्रदर्शन प्रदेश सचिव वीणा सोमानी एवं हेमा मोहता ने माना। इस अवसर पर २०१९ दिसंबर में महिलाओं के लिए जयपुर में अधिवेशन एवं २०१८ दिसंबर में १५-४० वर्ष तक की युवतियों के लिए रायपुर में होने वाले अधिवेशन की जानकारी दी गई। निवृत्तमान अध्यक्षा सुशीला काबरा ने संबोधित करते हुए कहा कि हमें पद के पीछे नहीं भागना है। बल्कि कुछ ऐसे कार्य करें कि पद हमारी पीछे स्वयं आएं। प्रतियोगिताएं महिलाओं की कला को मंच देने का माध्यम हैं क्योंकि महिलाएं गृह से गगन तक पहुंचे हैं। प्रदेश महासभा सचिव पुष्प माहेश्वरी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

अहिल्याबाई नाटिका प्रथम

सुकीर्ति समिति के तहत वीरांगनाओं पर नाटिकाएं प्रस्तुत की गईं। यह आंचलिक प्रतियोगिता थी। इसमें प्रथम इंदौर ग्रामीण की टीम की प्रस्तुति अहिल्याबाई रही। मंदसौर की पन्नाधाय द्वितीय एवं खंडवा की लक्ष्मीबाई को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। उज्जैन की टीम ने भी प्रस्तुति दी। संयोजिका किरण लखोटिया थीं। राष्ट्रीय संयोजिका अनुपमा बाहेती थीं।

धूल भी पैरों से रौंदी जाने पर ऊपर उठती है,
तब जो मनुष्य अपमान को सहकर भी स्वस्थ रहे,
उससे तो वह पैरों की धूल ही अच्छी।

गग्गड़ के नेतृत्व में उदयपुर भ्रमण

उदयपुर. संगठन आपके द्वार अभियान के अंतर्गत महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष देवकरण गग्गड़, राजस्थान दक्षिण प्रदेशाध्यक्ष कैलाश कोठारी, उदयपुर जिला सभाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण माहेश्वरी, जिला महामंत्री रामस्वरूप सेठिया, नगर सभा अध्यक्ष रामनारायण कोठारी, नगर कोषाध्यक्ष ललितप्रसाद माहेश्वरी, जिला सभा के संयुक्त मंत्री पुरुषोत्तम मंडोवरा एवं नगर सभा के उपाध्यक्ष राजेंद्र नुवाल ने उदयपुर जिला के मावली, फतहनगर, सलूंबर एवं भिंडर क्षेत्र का सघन दौरा किया। सभी स्थानों पर बैठकों में श्री गग्गड़ ने महासभा द्वारा शिक्षा, चिकित्सा, स्वरोजगार एवं विधवा सहायता के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने उदयपुर जिला में मोहनलाल देवपुरा, संपतलाल मंडोवरा एवं जानकीलाल मूंदड़ा द्वारा समानांतर जिला सभा संगठन चलाने को अक्षम्य सामाजिक अपराध बताया और कहा कि यह समाज की श्रृंखलाबद्ध संगठन रचना एवं संविधान की मर्यादा का गंभीर उल्लंघन है। प्रदेशाध्यक्ष कैलाश कोठारी ने अपने संबोधन में आर्थिक एवं सामाजिक सर्वेक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। जिलाध्यक्ष डॉ. सत्यनारायण माहेश्वरी ने बताया कि शीघ्र ही उदयपुर में एक विशाल सामाजिक भवन की परियोजना हाथ में ली जाएगी। नगर सभा अध्यक्ष रामनारायण कोठारी ने उदयपुर की सामाजिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

दिव्यांगों को बांटी ट्राइसिकल

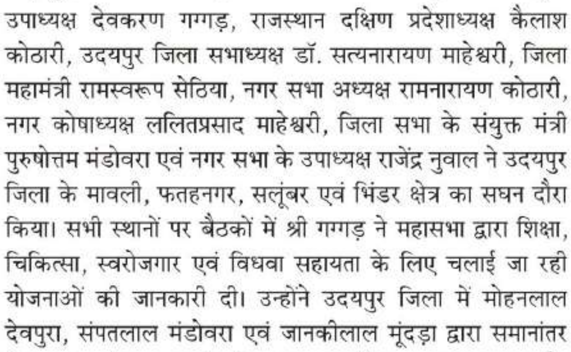

नागदा. लायंस क्लब ग्रेटर एवं स्नेह परिवार ने दिव्यांगों को ट्रायसिकल बांटी। लायंस ग्रेटर अध्यक्ष घनश्याम राठी ने बताया कि आगे के लिए भी क्लब जनहित में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करेगा। सचिव सौरभ मोहता, वरिष्ठ लायंस गोविंद मोहता, राजकुमार मोहता, अशोक बिसानी, झमक राठी, दिलीप मोहता, प्रकाश राठी विशेष रूप से मौजूद थे।

युवा संगठन के चुनाव सम्पन्न

वरंगल. स्थानीय माहेश्वरी युवा संगठन की वार्षिक सर्वसाधारण बैठक गत २२ अप्रैल को संपन्न हुई। संगठन कोषाध्यक्ष हरीश लोया ने वर्ष २०१७-२०१८ के वार्षिक आय-व्यय का ब्योरा सभा के समक्ष पेश किया। संगठन मंत्री प्रतीक लाहोटी ने गत वर्ष किए गए सामाजिक कार्यों का लेखा-जोखा बिंदुवार सभा में पेश किया। माहेश्वरी समाज वरंगल के अध्यक्ष संपतकुमार लाहोटी ने संगठन के कार्य की सराहना की। इस अवसर पर माहेश्वरी समाज मंत्री नवलकिशोर मणियार ने भी संबोधित किया। सत्र २०१८-२०२१ के निर्वाचन चुनाव अधिकारी डॉ. विष्णुकुमार बल्दवा एवं नवलकिशोर मूंदड़ा के निर्देशन में निर्विरोध हुए। इसमें संदीप मूंदड़ा अध्यक्ष, मुकेश बंग उपाध्यक्ष, प्रतीक लाहोटी मंत्री, विशाल सोनी सहमंत्री, आनंद लोया कोषाध्यक्ष, श्रीराम डालिया सहकोषाध्यक्ष, आकाश लाहोटी सांस्कृतिक मंत्री, विजय भट्टड़ सहसांस्कृतिक मंत्री और कार्यकारिणी सदस्य भी चुने गए।

सनातन सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

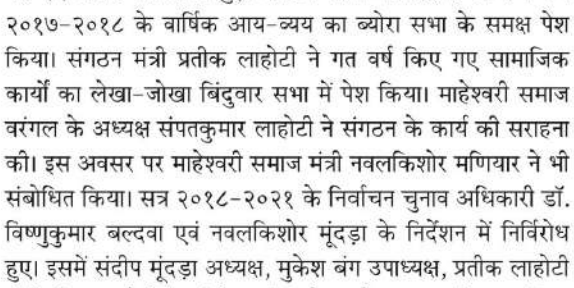

बीकानेर. सनातन धर्म साधना पीठ का पांचवां स्थापना दिवस समारोह उस्ता बारी के बाहर स्थित वाचनालय में आयोजित किया गया। इस दौरान सनातन धर्म की परंपराओं और मान्यताओं को प्रचारित करने वाली ५१ विभूतियों को 'सनातन सम्मान' अर्पित किया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी राजेश चूरा थे। उद्योगपति जुगल राठी ने कहा कि जरूरतमंद लोगों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करना, सनातन धर्म के मूल में है। यह धर्म 'परहित सरिस धरम नहीं भाई' की सीख देता है। ऐसा करना अपने आप में सनातन धर्म के सिद्धांतों को पल्लवित और पोषित करना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडप विशेषज्ञ पंडित प्रहलाददत्त ओझा ने की।

कदर करना सीख लो..
ना जिंदगी वापस आती है...
ना जिंदगी में आये हुये लोग....!!

रंगीलो राजस्थान का हुआ आयोजन

इंदौर. श्री लक्ष्मी माहेश्वरी महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा रंगीलो राजस्थान कार्यक्रम आयोजित किया गया। नाम के अनुरूप इस आयोजन में राजस्थान की रंगीन संस्कृति के दर्शन हुए। संस्था द्वारा गत दिनों आयोजित वर्कशॉप में ज्योति तोमर द्वारा जो प्रशिक्षण दिया गया उसी को प्रशिक्षणार्थियों ने प्रदर्शित किया। संस्था अध्यक्ष सीमा मुछाल एवं सचिव निशा झंवर ने बताया कि प्रशिक्षणार्थियों ने पधारो म्हारे देश, मारी घूमर छे नखराली, लाडली लूमा लूमा जैसे राजस्थानी गीतों पर खूबसूरत प्रस्तुति दी। रजवाड़ी घूमर भी देखने को मिला। राजपूताना पोशाक में सीमा मुछाल ने गीत ''एजी हासा मारी रुनक झुनक पायल बाजे सा'' पर खूबसूरत प्रस्तुति दी। ''लाडली लूमा लूमा'' पर शैला राठी, सीमा मुछाल, निशा काबरा और माधवी झंवर ने प्रस्तुतियां दीं। ''सागर पानी लेने जाऊं सा नजर लग जाए'' गीत पर कमल राठी, विद्या मुछाल, सरिता मालपानी, बिंदिया मोहता और श्रेया लाहोटी ने बेहतरीन प्रस्तुति दी। कालबेलिया गीत पर दीप्ति हाड़ा, नेहा पामेचा, सरिता गगगर आदि ने नृत्य किया। नृत्य की प्रस्तुति के अलावा इसी थीम पर आधारित म्यूजिकल तंबोला भी खिलाया गया।

नीलिमा अध्यक्ष व नीना सचिव

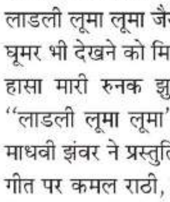

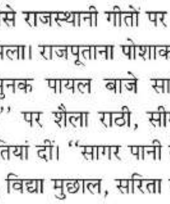

रायपुर. माहेश्वरी युवा मंडल (महिला समिति) की वृंदावन सभागार, सिविल लाइन में हुई ४५वीं वार्षिक आमसभा के दौरान सत्र २०१८-१९ के लिए महिला समिति की नई कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से किया गया। नई कार्यकारिणी में क्रमशः नीलिमा लड्ढा अध्यक्ष, नीना राठी सचिव, शीतल डागा उपाध्यक्ष, सुमन माहेश्वरी कोषाध्यक्ष, सविता केला सहसचिव, सुरुचि नत्थानी व पूजा बल्दुआ सांस्कृतिक समिति तथा प्रीति राठी प्रचार-प्रसार समिति प्रभारी चयनित हुईं। कार्यकारिणी सदस्य का चयन भी हुआ।

आप और हम के अध्यक्ष बने भट्टड़

हैदराबाद. सिंकदराबाद क्षेत्र की समस्त राजस्थानी संस्थाओं की प्रतिनिधि संस्था आप और हम के अध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से नंदगोपाल भट्टड़ के चयनित किया गया। गत ३३ वर्ष पूर्व गठित 'आप और हम' संस्था द्वारा अब तक कई सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, संस्कारिक व विभिन्न पर्वों पर विशाल मेलों का आयोजन किया जा चुका है। इस संस्था का संगठित स्वरूप अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ब्राह्मण, माली, हरियावणी, राजपुरोहित, प्रजापत, जाट (सीरवी), स्वर्णकार (मेढ़क्षत्रिय), विजयवर्गीय आदि समाज बंधुओं की समान विचार धारा से बना है।

आध्यात्मिक चिंतन सेमिनार में न्यायमूर्ति राठी

भीलवाड़ा. आध्यात्म की प्राप्ति के लिए परमात्मा से सीधे जुड़ना होगा। वह चिंतन की पहली सीढ़ी है जिससे आध्यात्म तक पहुंचा जा सकता है। आध्यात्म प्राप्ति की चाबी सिर्फ परमात्मा के पास है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारी केंद्र विजयसिंह पथिक नगर में खुशनुमा जीवन जीने की कला एवं आध्यात्मिक चिंतन सेमिनार में मप्र उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति बीडी राठी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जीवन में आध्यात्म संस्कार देता है। संस्कृति को मजबूत करता है। जीवन में नकारात्मक भ्रांतियां दूर करता है। सेमिनार में वरिष्ठ अधिवक्ता बंशीलाल महेश्वरी जोधपुर ने भी अपने विचार रखे। नगर माहेश्वरी सभा अध्यक्ष केदार जागेटिया, मंत्री केदार गगरानी, देवकरण गग्गड़ व मीडिया प्रभारी महावीर समदानी का ब्रह्माकुमारी केंद्र में केंद्र प्रमुख इंद्रा दीदी ने शाल ओढ़ाकर व पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया। अंत में श्रीनगर मा. सभा, युवा संगठन भीलवाड़ा ने न्यायाधीश श्री राठी का स्वागत सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन सीए बालमुकुंद काबरा ने किया।

मीमानी का कविता संग्रह विमोचित

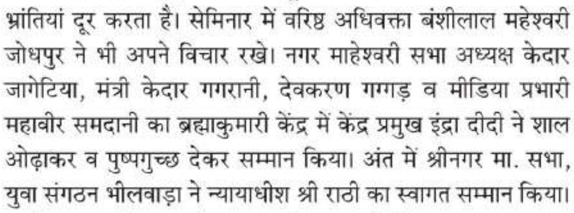

कोलकाता. ''हित चित की बातें'' कविता संग्रह की सफलता के बाद विनोद मीमानी द्वारा लिखित उनके दूसरी कविता संग्रह मेरी खुली किताब का विमोचन महानगर के मोयरा बैंक्वेट हॉल में हुआ। चार खंडों में विभाजित इस काव्य संग्रह में ९० हिंदी कविताओं के साथ ही १६ अंग्रेजी कविताएं भी हैं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हरिप्रसाद सिंघी, प्रियंकर पालीवाल आदि मौजूद थे। इस अवसर पर गायत्री मीमानी, बुलाकीदास मेमानी, राजेंद्र खंडेलवाल के साथ ही कई गणमान्यजन मौजूद थे।

शुक्रिया अदा करना और माफी मांगना
दो गुण जिस व्यक्ति के पास है...
वो सबके करीब और
सबके लिए अजीज होता है।

महिला मंडल का ग्रीष्मकालीन शिविर संपन्न

वरंगल. स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी बारह दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन स्थानीय प्रगतिशील मारवाड़ी समाज भवन में किया गया। यह शिविर ५ से १५ वर्ष के बच्चों के लिए था। संचालक सरिता राजगोपाल सोमाणी एवं सुमन हरिनिवास मणियार ने बताया कि इस वर्ष शिविर में बच्चों को वेस्ट से बेस्ट चीजें जैसे डेकोरेटिव वाल हैंगिंग, वैरायटी ऑफ एन्वेलोपस, वैरायटी ऑफ फ्लावर्स, पॉपअप फ्लावर बास्केट, कैलीग्राफी के साथ प्रति दिवस क्विज, गेम्स, टेबल मैनर्स, गुड मैनर्स, बेसिक योगा, जुम्बा डांस आदि सिखाये गए। शिविर के समापन समारोह में शिविरार्थी बच्चों के अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया। बच्चों द्वारा बनाई गयी कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस कार्यक्रम में माहेश्वरी समाज अध्यक्ष संपतकुमार लाहोटी, मंत्री नवलकिशोर मणियार, माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्षा अनिता अशोककुमार सोनी, मंत्री मृदुबाला घनश्याम दरक आदि उपस्थित थे।

राठी निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

दुर्ग. बाबा रामदेव मंदिर गंजपारा दुर्ग में गत ८ अप्रैल को सत्र २०१८-२१ हेतु चुनाव हुए। इसमें राधेश्याम राठी निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए। उपाध्यक्ष नंदकिशोर चांडक, श्याम राठी एवं नरेंद्र राठी (गंजपारा) चुने गए। नंदकिशोर चांडक को मंदिर समिति का अध्यक्ष भी चुना गया। शेष कार्यकारिणी एवं पदाधिकारी के चयन हेतु नवनिर्वाचित अध्यक्ष राधेश्याम राठी को अधिकार दिया गया। सचिव संतोष चाण्डक, कोषाध्यक्ष रामावतार राठी, संगठन मंत्री विजय सोमानी, सहमंत्री चिरोंजी राठी, भवन व बर्तन प्रभारी ओमप्रकाश टावरी, मुकेश राठी गंजपारा, प्रचार प्रसार मंत्री रामदेव टावरी चुने गए।

दिन में एक बार अपने दिल की
अदालत में जरूर जाया करें
सुना है, वहां कभी भी
गलत फैसले नहीं हुआ करते।

चैरिटी शो का किया आयोजन

रायपुर. माहेश्वरी युवा मंडल (महिला समिति) द्वारा सुपरस्टार्स अमिताभ बच्चन एवं ऋषि कपूर द्वारा अभिनीत मूवी '१०२ नॉट आउट' के चैरिटी शो का आयोजन गत ६ मई को रायपुर में किया गया। सामाजिक परिवेश में एक सशक्त संदेश देती इस मूवी को २५० लोगों ने एक साथ देखा और सराहा। इसके साथ ही महिला समिति द्वारा लकी ड्रॉ निकाला गया एवं सबसे बड़ी फैमिली के लिए सरप्राइज गिफ्ट्स भी दिए गए। इस अवसर पर महिला समिति अध्यक्षा नीलिमा लड्ढा और सचिव नीना राठी उपस्थित थी। शीतल डागा, सविता केला, सुमन माहेश्वरी, प्रीति राठी, पूजा बल्दुआ, संगीता राठी, रमा बागड़ी, श्वेता राठी, श्वेता तापड़िया, एकता झंवर, पूजा डागा, राजश्री मूंधड़ा का योगदान रहा।

स्कूल को वॉटर कूलर भेंट

भीलवाड़ा. आरकेआरसी माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से स्थानीय खोलपुरा स्कूल में वाटर कूलर भेंट किया गया। इसका उद्घाटन हाथीभाटा महाराज श्री संतदासजी और राष्ट्रीय कवि राजेंद्र गोपाल व्यास के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण भी सांईं समिति के सहयोग से करवाया गया। शोभा भदादा, ममता मोदानी, सुमन भंडारी ने बताया कि शिखा भदादा, सीमा कोगटा, वंदना नवाल, इंद्रा हेड़ा, सुनीता मूंदड़ा, सुनीता नराणीवाल, स्नेहलता तोषनीवाल, मीनू झंवर, आशा इंदू, मधु, सुमन दरगड़ आदि उपस्थित थीं।

निःशुल्क मेडिक्लेम बीमा का पांचवा वर्ष

इंदौर. शहर में निवासरत माहेश्वरी परिवार जिनकी वार्षिक आय (स्वघोषित) दो लाख से कम है, उनके लिए माहेश्वरी समाज इंदौर जिला द्वारा निःशुल्क मेडिक्लेम बीमा योजना महेश नवमी के पावन पर्व पर इस वर्ष भी निरंतर लागू की जा रही है। इस योजना में परिवार के ३ माह से ६५ वर्ष उम्र के चार सदस्यों का ५०-५० हजार रुपए का बीमा होता है। गत चार वर्षों से निरंतर चल रही इस योजना का लाभ समाज के अनेक परिवार ले चुके हैं। इस योजना में श्री बांगड़ माहेश्वरी मेडिकल वेलफेयर सोसायटी, श्री माहेश्वरी समाज इंदौर जिला, समस्त क्षेत्रीय संगठन इंदौर, सारडा फाउंडेशन, श्री निवास मालपानी, वीडी राठी, वेणुगोपाल असावा, कल्याण मंत्री व बसंत खटौड़ सहयोगी हैं।

भगवान महेश के नाम पर करें सड़क-चौराहा

बूंदी. माहेश्वरी पंचायत संस्थान के एक प्रतिनिधिमंडल ने नगर परिषद द्वारा प्रस्तावित शहर की सड़कों व चौराहे का नामकरण माहेश्वरियों के उत्पत्तिकर्ता भगवान महेश के नाम से करने का अनुरोध पत्र सभापति महावीर मोदी को सौंपा। इस अवसर पर पंचायत अध्यक्ष जगदीश जैथलिया के नेतृत्व में अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व कार्यकारी मंडल सदस्य संजय लाठी, सचिव विजेंद्र माहेश्वरी, उपाध्यक्ष कैलाश बहेड़िया, कोषाध्यक्ष द्वारका जाजू, जिला माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष नरेश लाठी, जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष रेवती रमन बिरला, महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. सचिव विनोद मंत्री, जगदीश लड्ढा आदि मौजूद थे। श्री जैथलिया ने सभापति के नाम दिए पत्र में शहर की प्रमुख सड़कों व चौराहों का नामकरण बूंदी के गौरवशाली इतिहास के आधार पर महापुरुषों, वीर-वीरांगनाओं व समाज के नाम पर किये जाने के प्रस्ताव का भी स्वागत किया।

महेश सभा के चुनाव सम्पन्न

रायपुर (छग). गत ६ मई २०१८ को वृंदावन हाल, रायपुर में महेश सभा, रायपुर के सत्र २०१८-२०२१ के कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव हुआ। महेश बिड़ला अध्यक्ष, पवन झंवर व पवन करनानी उपाध्यक्ष, किसनगोपाल करवा सचिव, रमेश सोमानी सहसचिव तथा किसनलाल राठी कोषाध्यक्ष चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य सुरेश मोहता, सुशील लाहोटी, प्रहलाद पेड़ीवाल, प्रकाश भट्टड़, गणेश चांडक, रामगोपाल राठी, रामावतार लाहोटी, मुरलीमनोहर सोनी, सुनील मोदानी चुने गए। सुशील लखोटिया एवं बिजयकुमार सोमानी चुनाव अधिकारी थे। प्रदेश पर्यवेक्षक के रूप में कमल राठी उपस्थित रहे।

वरिष्ठों ने एक साथ देखी मूवी

मालेगांव (नासिक). स्थानीय महेश जेष्ठ नागरिक सभा के ४५ सदस्य एकसाथ में '१०२ नाट आउट' मूवी देखने शहर के सिनेमैक्स सिनेमा हॉल में ८ मई को गए। मूवी के बाद सब ने होटल में साथ में भोजन किया। कुछ सदस्यों को सिनेमा हॉल गए १५ से १७ वर्ष हो चुके थे। आयोजन में प्रगति मंडल के आशीष, कल्पेश, निशांत का सहयोग रहा। सभा अध्यक्ष श्रीनिवास कलंत्री व सचिव विट्ठलदास तापड़िया भी मौजूद थे।

कालिया दम्पत्ति ने लिया देहदान का संकल्प

चित्तौड़गढ़. विहिप जिलाध्यक्ष संपतलाल पुत्र रंगलाल कालिया और उनकी पत्नी राधादेवी ने लायंस क्लब के माध्यम से देहदान का घोषणा पत्र कलेक्टर इंद्रजीतसिंह को सौंपा। रामस्नेही संत दिग्विजयराज के सान्निध्य में दंपती के साथ कई गणमान्यजन उपस्थित थे। कालिया दंपति ने यह संकल्प संत रामदयालजी की प्रेरणा से लिया है।

जिला माहेश्वरी सभा के चुनाव 17 जून को

चित्तौड़गढ़. जिला माहेश्वरी सभा के जिलाध्यक्ष व २५ कार्यसमिति सदस्यों का चुनाव आगामी १७ जून को होगा। इसमें २१ मई तक जिला संयोजक कन्हैयालाल न्याति व प्रदेश मंत्री राकेश जेथलिया को बालाजी मार्केट स्थित कार्यालय में आपत्ति दर्ज की गई। अंतिम मतदाता सूची व चुनाव के नियम तथा कार्यक्रम का प्रकाशन २५ मई को किया गया। जिला सभा के चुनाव १७ जून को गांधीनगर स्थित महेश वाटिका में होंगे। उक्त जानकारी चित्तौड़गढ़जिला माहेश्वरी सभा की तदर्थ समिति के संयोजक कन्हैयालाल न्याति कपासन ने दी।

माहेश्वरी मंडल हैदराबाद के चुनाव सम्पन्न

हैदराबाद. माहेश्वरी मंडल हैदराबाद (उत्तर) के वर्ष २०१८-१९ के लिए नए पदाधिकारी निर्विरोध चुने गए। इसमें शिवप्रसाद चांडक अध्यक्ष, लक्ष्मीकांत झंवर तथा लक्ष्मीनारायण सोनी उपाध्यक्ष, श्यामसुंदर तोषणीवाल मंत्री, मुरलीधर असावा सहमंत्री, किशन मूंधड़ा कोषाध्यक्ष चुने गए। कार्यकारिणी सदस्य के रूप में जगदीश झंवर, सूरजकरण मर्दा, मनोजकुमार बंग, ओमप्रकाश झंवर (फेन), सुनील माहेश्वरी, राजेश तापड़िया, नवल लड्ढा, गोविंदप्रसाद भक्कड़, विनोद सोनी तथा मनोनीत सदस्य राधेश्याम मूंदड़ा, राजेंद्रस्वरूप माहेश्वरी, नवलकिशोर बाहेती को चुना गया।

कोशिश मत कर
सभी को खुश रखने की...
कुछ लोगों की नाराजगी भी जरूरी है
चर्चाओं में बने रहने के लिये।

माहेश्वरी प्रिविलेज कार्ड योजना

बीकानेर. माहेश्वरी सभा (शहर) बीकानेर द्वारा माहेश्वरी समाज के लिए उपयोगी 'माहेश्वरी प्रिवेजल कार्ड योजना' प्रारंभ की गई है। मंत्री रघुवीर झंवर ने बताया कि अध्यक्ष गोपीकिशन पेड़ीवाल द्वारा यह योजना सुझाई गई थी। यह कार्ड विशेष रूप से माहेश्वरी बंधुओं के फायदे के लिए बनाया गया है, ताकि उन्हें आरामदायक, आसान, सस्ती खरीदारी करने में मदद मिल सके। इसके अलावा चिकित्सा क्षेत्र में बढ़ते बिलों से भी समाज के बंधुओं को कुछ राहत मिल सके। इस कार्ड के जरिये समाज के बंधु शहर के कुछ चुने हुए 'प्रिविलेज आउटलेट' की हमारी श्रृंखला से निर्धारित छूट प्राप्त कर सकते हैं। श्री झंवर ने बताया कि समाज में एकता का संचार करने के लिए माहेश्वरी प्रिविलेज कार्ड योजना वर्ष २०१८ से २०२१ के लिए माहेश्वरी सभा (शहर) का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है। उन्होंने अपील की कि इस अद्भुत योजना का समर्थन कर अपने रिश्तेदारों व समाजों के अन्य सदस्यों को इसमें ज्यादा से ज्यादा जोड़ें।

कैरी जीरा पानी का वितरण

भीलवाड़ा. पीडीएल हितकर फार्मेसी द्वारा अपने अजमेर रोड स्थित संस्थान पर तीन दिवसीय कैंप लगाकर निःशुल्क जलजीरा का वितरण किया गया। संस्थान के प्रोप्रायटर लक्ष्मीनारायण काबरा ने बताया कि इस प्रचंड गर्मी को देखते हुए आमजन को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी लोगों को निःशुल्क कैरी जीरा पानी पिलाया गया। सैकड़ों लोगों ने इसका लाभ लिया और जिससे लोगो को गर्मी, पेट की बीमारी व लू से राहत मिली। ३ दिवसीय कैंप में लगभग २०० किलो जलजीरा पावडर का उपयोग किया गया।

मेरे अपने कहीं कम ना हो जाएं
इस डर से हमने मुसीबत में भी
किसी अपने को आजमाया नहीं...।

महिला संगठन ने किया सुरभि संगम का आयोजन

टोंक. जिला माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में मध्य राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की बैठक सुरभि संगम टोंक में आयोजित की गई। सुरभि संगम की शुरुआत भगवान महेश के पूजन व वंदना से की गई। सभी अतिथियों का माला पहना कर व दुपट्टा ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। अध्यक्षता प्रदेशाध्यक्ष सुनीता रादंड़ ने की। मुख्य अतिथि ज्ञान माहेश्वरी व विशेष अतिथि प्रेम मूंदड़ा सारंगा खटौड़, अंजना मूंदड़ा व कृष्णा गगरानी उनियारा थीं। जिला महामंत्री रेखा जाजू ने बताया कि टोंक जिले के तृतीय सत्र को गठित हुये एक वर्ष पूरा हो चुका है। इस एक वर्ष में संगठन द्वारा जो भी उपलब्धियां प्राप्त की गईं, अपने प्रजेटेशन में प्रोजेक्टर द्वारा दिखाया गया। संचालन जिला संगठन मंत्री कमलेश मूंदड़ा द्वारा किया गया। सुरभिक संगम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सम्मान-पत्र दिए गए। कार्यक्रम में प्रदेश कोषाध्यक्ष मनीषा बागला व जिला कोषाध्यक्ष सुमन आगीवाल सहित पूजा मूंदड़ा, हर्षिता मूंदड़ा, मंजू जाजू, सुशीला जाजू, रीना बिड़ला, शांता झंवर, रितु मूंदड़ा, संजू काबरा आदि उपस्थित रहीं।

युवा संगठन अध्यक्ष बने लाहोटी

नौखा. गत १६ मई को माहेश्वरी समाज नौखा की आमसभा माहेश्वरी भवन में दोपहर ३ बजे आयोजित की गई। इस अवसर पर माहेश्वरी युवा संगठन का पुनर्गठन किया गया। इसमें डॉ. राधेश्याम लाहोटी सर्वसम्मति से पुनः माहेश्वरी युवा संगठन नौखा के अध्यक्ष मनोनीत किए गए। दक्षिणांचल प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष जय चांडक, बीकानेर माहेश्वरी युवा संगठन के पूर्व अध्यक्ष सुनील सारडा एवं पूर्व सचिव किशन लोहिया की देख-रेख में पुनर्गठन की प्रक्रिया सुचारु की गई।

महिला मंडल के चुनाव सम्पन्न

छिंदवाड़ा. स्थानीय महिला मंडल के निर्वाचन चुनाव अधिकारी रंजना राठी, उषा डागा, अल्पना भैया, रेणु चांडक की अध्यक्षता में गत २४ मार्च को संपन्न हुए। अध्यक्ष अलका जाखोटिया, उपाध्यक्ष अर्चना चांडक, सह उपाध्यक्ष लता चांडक, सचिव संगीता राठी, सहसचिव शारदा परवाल, कोषाध्यक्ष अरुणा राठी, सहकोषाध्यक्ष उषा राठी, संगठन मंत्री छाया गांधी, कविता नत्थानी, प्रचार-प्रसार मंत्री रीता राठी, सांस्कृतिक मंत्री शुचिता राठी, कंचन परवाल, खेलकूद मंत्री नीलू राठी आदि चुने गए।

भागवत कथा व नानीबाई का मायरा का आयोजन

हमीरगढ़. यहां स्थित काखानियों की सती माताजी के स्थल पर भक्ति रस की गंगा प्रवाहित होगी। इसके अंतर्गत ३० मई से ५ जून तक श्रीमद् भागवत कथा तथा श्री नानीबाई का मायरा का आयोजन होगा। आयोजन समिति सदस्य सुरेश काकानी (उज्जैन) ने बताया कि श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ ३० मई को प्रातः ८.३० बजे से बड़ा मंदिर रावला चौकसे सती माता मंदिर तक निकली भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। इसमें ३० मई से ५ जून तक प्रतिदिन प्रातः ८.३० बजे से ११.३० बजे रामस्नेही संप्रदाय के संतश्री दिग्विजयरामजी महाराज के श्रीमुख से भागवत कथा का आयोजन होगा। इसी प्रकार ३० मई से ४ जून तक प्रतिदिन सायं ७.३० बजे से १०.३० बजे तक दीदी कनकलता जी पाराशर (कनकश्री) के श्रीमुख से मायरा कथा का आयोजन होगा। दोनों कथाओं का समापन ५ जून प्रातः १०.३० बजे हवन व महाप्रसादी के साथ होगा। श्री काकानी ने उक्त जानकारी देते हुए सभी धर्मप्रेमियों से इस अवसर का लाभ लेने की अपील की। श्री काकानी ने बताया कि चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा हाईवे के बीच हमीरगढ़ स्टेशन से सतीमाता के स्थल (बनास नदी रोड) पहुंचा जा सकता है।

बालाजी टायर वर्ल्डस शोरूम का शुभारंभ

भीलवाड़ा. पुर रोड स्थित जलदाय विभाग के ऑफिस के सामने बालाजी टायर वर्ल्ड टायर एवं सर्विस फ्रेंचाइजी का शुभारंभ गत ८ मई को कंपनी के रीजनल सेल्स मैनेजर सिडनी ग्रीन व संचालकों ने फीता काटकर किया। पार्टनर राजेश दरगड़ व भावेश दरगड़ ने बताया बालाजी टायर वर्ल्ड पर नए टायर ट्यूब, व्हील एलाइनमेंट, व्हील बैलेंसिंग, विदेशी मशीन से ऑटोमेटिक टायर फिटिंग, नाइट्रोजन हवा, ट्यूबलेस टायर रिपेयरिंग आदि की सुविधा उपलब्ध है। शोरूम पर विशेष योग्यता प्राप्त टेक्नीशियन सेवाएं देंगे। यह शहर का पहला वातानुकूलित शोरूम है। इस अवसर पर कंपनी के सेल्स मैनेजर द्वारा संचालकों को डीलरशिप प्रदान की गई। शुभारंभ पर ग्राहक दिनेश मूंदड़ा व शरद भदादा का भी सम्मान किया गया। श्रीगोपाल दरगड़ द्वारा सभी अतिथियों का आभार माना गया। शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं ट्रांसपोर्टर उपस्थित थे।

बाहेती द्वारा निर्मित प्रवचन हॉल लोकार्पित

जयपुर. अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ द्वारा मानसरोवर स्थित ग्राम धोलाई में संचालित श्री श्री गिरधारी दाऊजी मंदिर (इस्कॉन टेम्पल) प्रांगण में प्रवचन हॉल का निर्माण प्रमुख समाजसेवी एवं हास्य सम्राट आरडी बाहेती द्वारा कराया गया। इसका लोकार्पण जयपुर के महापौर डॉ. अशोक लाहोटी ने किया। उल्लेखनीय है कि नवनिर्मित इस विशाल प्रवचन हॉल के निर्माण में ५० लाख रुपए की लागत आई। प्रवचन हॉल में बंशी पहाड़पुर के पत्थर पर नक्काशी का कार्य मकराना के कारीगरों द्वारा किया गया। हॉल में स्थित कलात्मक खिड़कियों में लगे स्टेन ग्लास पर नयनाभिराम धार्मिक पेंटिंग्स का कार्य ऑस्ट्रेलिया के कारीगर द्वारा २ वर्ष की अवधि में पूरा किया गया। बाहेती परिवार के प्रदीप-प्रीति, अशोक-मंजू, संजय-सुजाता बाहेती सहित अन्य रिश्तेदारों ने लोकार्पण में भाग लिया। इस अवसर पर इस्कॉन (राजस्थान) की गवर्निंग बॉडी के कमिश्नर गोस्वामी गोपालकृष्ण महाराज, क्षेत्रीय महासचिव देवकीनंदन दास, जयपुर अध्यक्ष प्रभु पंचरत्नदास, परिचालन समिति की चेयरमैन ज्योति माहेश्वरी सहित मोहश्वरी समाज जयपुर के अध्यक्ष सत्यनारायण काबरा, उपाध्यक्ष सत्यनारायण काबरा, सचिव संजय माहेश्वरी, उद्योगपति देवकीनंदन जाजू, रत्न व्यवसायी किशनदास घाटीवाला, शिवरतन चितलांगिया, बजरंग जाखोटिया, बजरंग बाहेती, वल्लभ चितलांगिया, बिहारी साबू, चंद्रमोहन शारदा सहित शहर के कई गणमान्यजन मौजूद थे।

गोरक्षण संस्था में माहेश्वरी

धामनगांव रेलवे. स्थानीय गोरक्षण संस्था के पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से चयन हुआ। इसमें अध्यक्ष नंदकिशोर फूलचंद राठी, उपाध्यक्ष गिरीशबाबू (बंडूभाऊ) पुखराज मूंधड़ा एवं सचिव संजयबाबू ठाकुरदास राठी चुने गए।

आपके जीवन में सुख हो
लेकिन शांति ना हो
तो समझना कि आप गलती से
सुविधा को सुख समझ बैठे हैं।

कृतिका को स्वर्ण पदक

बेलमपल्ली. आदिलाबाद जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष मूलचंद चितलांगी की पौत्री व प्यारेलाल तथा अनिता चितलांगी की सुपुत्री कृतिका ने बीबीए सेकंड सेमेस्टर में ९.९३ सीजीपीए प्राप्त कर कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके लिए बद्रुका कॉलेज हैदराबाद में उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

अक्षत को ९१ प्रतिशत अंक

इंदौर. समाज सदस्य संजय व मीना बल्दवा के सुपुत्र अक्षत ने कक्षा दसवीं की परीक्षा ९१ प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की। इस परीक्षा की तैयारी अक्षत ने बिना किसी कोचिंग के मात्र रिकॉर्डर के सहयोग से की। इसमें मुख्य रूप से इन्हें अपनी मां का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सेजल मालू की टीम को विश्व में आठवां स्थान

बैंगलुरु. टीम आर्किस ने एयरक्राफ्ट स्पर्धा में विश्व स्तर पर आठवां स्थान हासिल किया। टीम आर्किस दयानंदसागर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग बैंगलुरु की टीम है। यह टीम सन २०१३ से हर साल इस स्पर्धा में भाग लेती है। इस साल स्पर्धा के लिए बनाए गए एयरक्रॉफ्ट की पूरी डिजाइन सेजल गिरीश मालू ने की थी। यह स्पर्धा सोसायटी ऑफ ऑटोमोटिब्ज इंजीनियर्स अमेरिका के द्वारा हर वर्ष में दो बार आयोजित होती है।

शैजल ने प्राप्त किए चार स्वर्ण पदक

दांडेली. दांडेली (कनार्टक) निवासी समाज सदस्य रवि पसारी व शीतल पसारी की सुपुत्री शैजल पसारी ने रानी चेनम्मा यूनिवर्सिटी, बेलगावी की सन २०१६-१७ की बीकॉम फाइनल की परीक्षा विवि (यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान (रैंक) प्राप्त करने के साथ ही ३ विषयों में सर्वोत्तम अंक प्राप्त कर ४ स्वर्ण पदक प्राप्त किए हैं। शैजल ने ९३.७५ प्रतिशत अंक के साथ विशेष योग्यता प्राप्त कर विवि में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस सफलता पर दांडेली माहेश्वरी समाज ने उन्हें बधाई दी है।

मनुष्य का अमूल्य धन,उसका व्यवहार है
उस धन से बढ़कर, संसार में कोई और धन नहीं
पैसा आता है चला जाता है, पैसा आपके हाथ में नहीं है
पर व्यवहार आपके हाथों में है,
व्यवहार कुशल बने रहिये, सदैव प्रसन्न रहें....

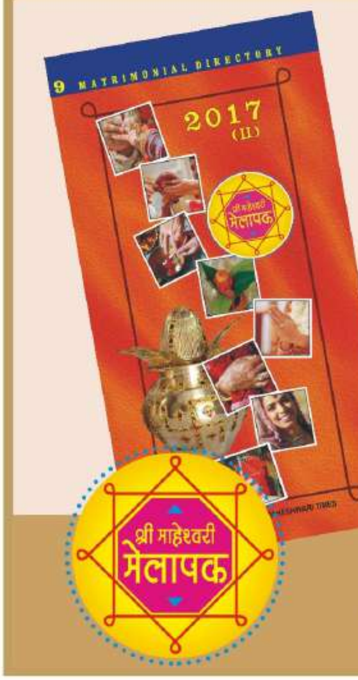

फिर लिखेगी सफलता का नया इतिहास
3000 से अधिक रिश्ते जोड़ने के पश्चात अब

श्री माहेश्वरी मेलापक

माहेश्वरी समाज की विवाह योग्य युवक–युवतियों की
विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री
'श्री माहेश्वरी मेलापक 2018'
अब प्रकाशन की ओर
जिसमें आपको मिलेंगे आपके अनुरूप रिश्ते
प्रोफेशनल व हाइटिक युवक–युवतियों की पहली पसन्द

बायोडाटा प्रकाशन हेतु आज ही संपर्क करें
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
दूरभाष : 0734-2526561, 2526761, मोबाइल : 094250-91161
E-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com

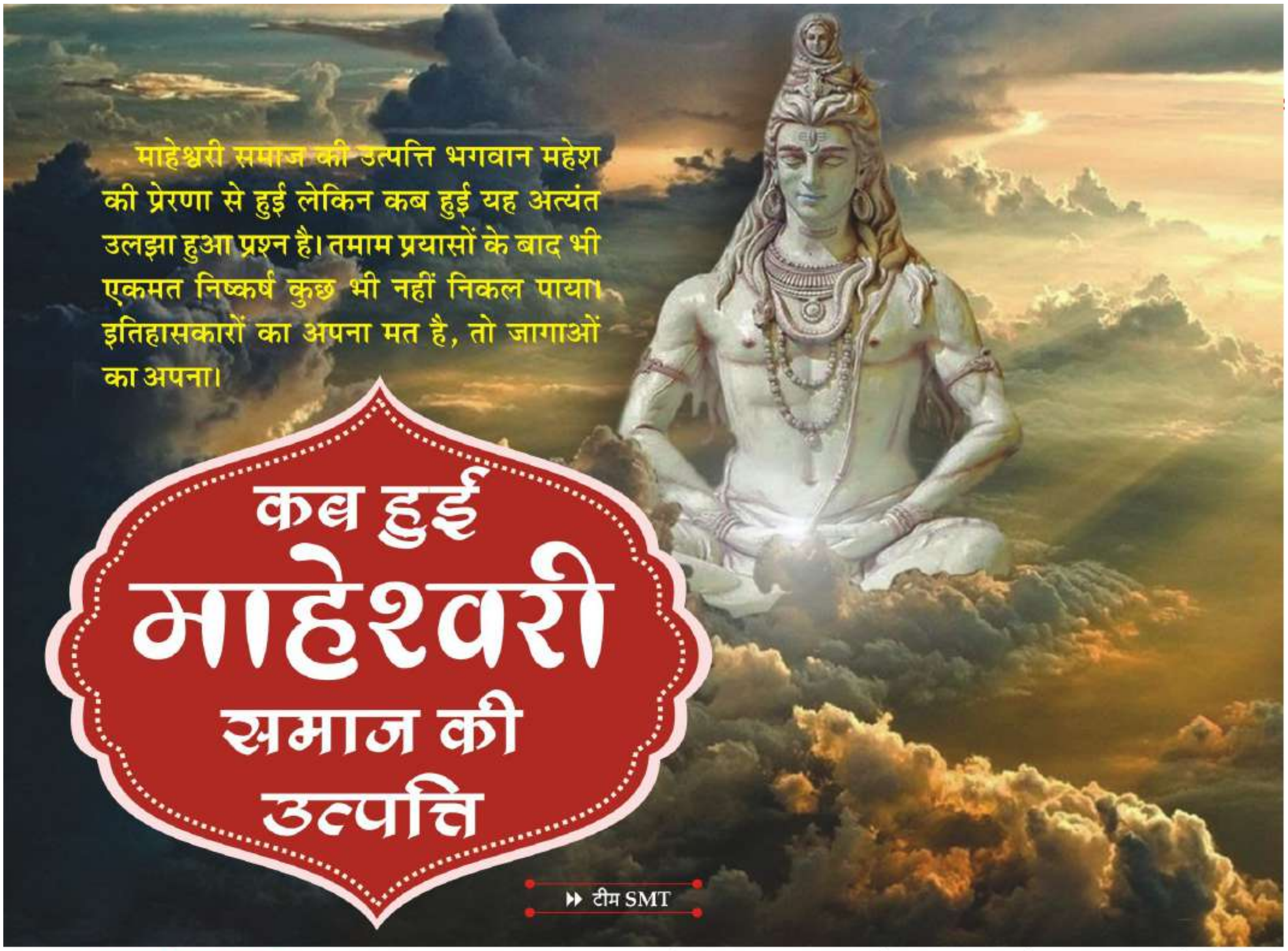

माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति भगवान महेश की प्रेरणा से हुई लेकिन कब हुई यह अत्यंत उलझा हुआ प्रश्न है। तमाम प्रयासों के बाद भी एकमत निष्कर्ष कुछ भी नहीं निकल पाया। इतिहासकारों का अपना मत है, तो जागाओं का अपना।

कब हुई माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति

टीम SMT

पुरातात्विक तथ्य

जिस तरह भारतवर्ष के इतिहास को जानने के लिए सैकड़ों वर्षों से पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा खोज जारी रही, उसी प्रकार माहेश्वरी समाज के विद्वतन भी अपनी इस तेजस्वी जाति के इतिहास को जानने में पीछे नहीं रहे। पुरातात्विक खोजों का आधार विभिन्न शिलालेख, ताम्रपत्र आदि हैं। इतिहास जानने में प्रमुख परेशानी पुरातत्वेत्ताओं के सामने यह आती है कि ये पुरातात्विक प्रमाण उन्हें क्षतिग्रस्त मिले। विदेशी आक्रमणों व प्रकृति की विपदाओं ने कई शिलालेखों को नष्ट कर दिया। फिर भी माहेश्वरी जाति के विद्वानों ने अपने स्तर पर अवश्य ही प्रयास किए। इस कार्य में कई पुरातत्ववेत्ताओं का मार्गदर्शन भी लिया गया। माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति के पुरातात्विक आंकड़ों से स्वयं समाज के विद्वतजन संतुष्ट नहीं हैं। इसके अनुसार संवत् ८००-१००० के लगभग उत्पत्ति मानी जाती है।

पौराणिक कथा

पौराणिक कथाओं में माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति का काल तो नहीं दर्शाया गया है लेकिन इसकी उत्पत्ति की कथा का वर्णन अवश्य ही है। पौराणिक कथा में उत्पत्ति का जो काल दर्शाया गया है, वह जैन और बौद्ध धर्म की उत्पत्ति का प्रारंभ काल है। यह काल विक्रम संतव् ७५२ से अधिक पहले का नहीं माना जा सकता। इतिहासकारों के मत से यही वह काल था जिसमें प्रारंभिक स्तर पर जैन व बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। वैसे इतिहासकार माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति को लेकर प्रचलित कहानी में उल्लेखित घटनाक्रम को आदि शंकराचार्य से संबद्ध भी करते हैं।

जागाओं की बहियों के तथ्य

कुछ जागाओं और भाटों की बहियों से हमें ज्ञात होता है कि माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति संवत् ३७७ में खंडेला ग्राम में हुई थी। इसमें भी किवदंती में उपरोक्त पौराणिक वृत्तान्त ही दिया गया है। सूरजमल मुकुंदलाल नामक जागा के वंशज अपनी बहियों के आधार पर माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति का काल ४७०० वर्ष पूर्व का बताते हैं। ये अपने पास संवत् व ईसवीं के प्रारंभ के पूर्व की आदिकालीन वंशावलियां अपने पास होने का दावा करते हैं। ये वंशावलियां भोजपत्र पर एक विशिष्ट स्याही से लिखी गई हैं और इनमें काल गणना की पद्धति वैदिक है। अर्थात इन बहियों में युग-युगादि के अनुसार काल गणना की गई है।

खांपों की उत्पत्ति

मान्यताओं के अनुसार उपरोक्त कथा वृतान्त में राजकुमार सुजानकुंवर के साथी उमराव जिनकी संख्या ७२ थी। इनसे उत्पन्न वंश ही ७२ खांप के रूप में जाने जाते हैं। राजकुमार सुजानकुंवर शिव के श्राप से जागा बने और उनके वंशजों ने जागा कर्म का ही निर्वाह किया। ऐसा कहा जाता है कि कालांतर में ओसवालों में से कुछ लोग माहेश्वरी बने। इस प्रकार ओसवाला जाति से दो खांप व एक क्षत्रिय जाति से एक खांप की वृद्धि हुई और कुल खांप की संख्या ७२ से ७५ हो गई।

PETERS PRINCE PHENYLE

Disinfectant
Best
By Test

Manufacturers of Disinfectants & Antiseptics:

NATH PETERS HYGEIAN LIMITED

REGD. OFFICE: 17-1-200, SAIDABAD, HYDERABAD - 500 059 T. S. INDIA
PHONE NO: 040- 24534-523/524/525 FAX: +91-40-24530299
E-mail: sales@nathpeters.com Website: www.nathpeters.com
CIN NO. U24110TG1992PLC014256
An ISO 9001:2008 Certified Company

For Distributorship Enquiries Please Contact
Mr. Raju on Cell No. 09701343335

।। जय महेश ।।

महेश नवमी की हार्दिक शुभकामनाएं

।। जय महेश ।।

NSK- RHP Bearings

Authorized Indenting Agents & Distributors in India

SONI INTERNATIONAL

3, Varalaxmi Market, 62 M.G. Road,
Secunderabad- 50003
Ph : 040-27710757, 27718113 Mo. : 98490-51176

www.soninsk.com E-mail : info@soni-international.com

हार्दिक शुभकामनाएं............

Dalia's™
High in Quality, Rich in Taste

श्री निवास एंड ब्रदर्स

SRINIVAS & BROTHERS

किराणा एवं सूखे मेवे व सभी किस्म के मुरब्बे तथा अचार एगमार्क शहद उपवन ब्रेड-ए
सच्चा साबू एगमार्क साबुदाना सुपर कोकिला मेहंदी

14-7-371/17, बेगम बाजार, राजाबहादुर बिल्डिंग के सामने, हैदराबाद-500012
फोन-24745570, 24606726, 24615438
e-mail : contact@dalias.in web : www.dalias.in

"माहेश्वरी" प्रतीक चिन्ह
आदर्शों की अभिव्यक्ति

माहेश्वरी समाज के लिए यह दिन बहुत धार्मिक महत्व का होता है। इस उत्सव की तैयारी कई दिन पूर्व ही शुरू हो जाती है। जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन उमंग और उत्साह के साथ होता है। जय महेश के जयकारों की गूंज के साथ चल समारोह निकाले जाते हैं, महेश नवमी के दिन भगवान शंकर और मां पार्वती की विशेष आराधना की जाती है। समस्त माहेश्वरी समाज इस दिन भगवान शंकर और मां पार्वती के प्रति पूर्ण भक्ति और आस्था प्रकट करता है। जगत कल्याण करने वाले भगवान शंकर ने जिस तरह क्षत्रिय राजपूतों को शिकार छोड़कर व्यापार या वैश्य कर्म अपनाने की आज्ञा दी। यानि हिंसा को छोड़कर अहिंसा के साथ कर्म का मार्ग बताया। इससे महेश नवमी का यह उत्सव यही संदेश देता है कि मानव को यथासंभव हर प्रकार की हिंसा का त्याग कर जगत कल्याण, परोपकार और स्वार्थ से परे होकर धर्म करना चाहिए।

कैसा है हमारा प्रतीक चिह्न

ॐ कमल की बीच पंखुड़ी पर अंकित है ॐ। अखिल ब्रह्मांड का द्योतक, सभी मंगल मंत्रों का मूलाधार, परमात्मा के अनेक रूपों का समावेश किए सगुण-निर्गुणाकार एकाक्षर ब्रह्म आदि से सारे ग्रंथ भरे पड़े हैं। हमारा समाज आस्तिक एवं प्रभु पर विश्वास एवं श्रद्धा रखने वाला है। अतः ईश्वरीय श्रद्धा का प्रतीक है "ॐ"।

बिल्व पत्र- त्रिदलीय बिल्व पत्र हमारे स्वास्थ्य का द्योतक है। भगवान महेश के चरणों में अर्पित है, श्रद्धा युक्त बिल्व पत्र, जो शिव को परम प्रिय है।

सेवा- समाज का बहुत बड़ा ऋण हमारे ऊपर रहता है। अतः ये नहीं सोचें कि समाज ने हमें क्या दिया वरन समाज को हम क्या दे रहे हैं। ऐसी सेवा भावना होना चाहिए जैसे माता पुत्र की सेवा करती है, परंतु बदले में कुछ नहीं चाहती। सेवा में अनेक समस्याएं आती हैं। जिन्हें हम सुलझा सकते हैं।

त्याग- त्याग की महिमा से तो हिंदुओं के ही नहीं संसार के समस्त धर्मों के शास्त्र भरे पड़े हैं। हमारे पूर्वज सादगीपूर्ण जीवन अपनाकर बची पूँजी समाजोपयोगी कार्य में लगाकर स्वयं को धन्य मानते थे।

सदाचार- मानव जीवन में सदाचार का बहुत ऊंचा स्थान है। जिस व्यक्ति में, परिवार में, समाज में चरित्रहीनता, व्यसनाधीनता, अनैतिकता, गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार आदि बड़े पैमाने पर व्याप्त हों तो उस समाज की उन्नति नहीं हो सकती और जब समाज प्रगति नहीं करता, तो उस देश की प्रगति नहीं होती। अतः व्यक्ति का सदाचारी होना आवश्यक है।

आदर्शों के बिना हम कुछ नहीं

सेवा, त्याग, सदाचार युक्त यह बोध चिह्न सिर्फ बोध चिह्न नहीं, अपितु समाज को गौरवान्वित करके जीवन में एक नई शक्ति प्रदान करने का द्योतक है। अतः इस बहुद्देशीय बोध चिह्न को हम अपने जीवन में भी स्वीकार करें। याद रखें कोई भी जाति या संप्रदाय अपने संस्कारों के कारण ही अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। केवल जन्म लेने मात्र से ही हम पूर्ण माहेश्वरी नहीं हो जाते। इसके लिए इन आदर्शों को आत्मसात करना भी जरूरी है। हमारे ये आदर्श ही वह शक्ति हैं, जिनके बल पर हमारे पूर्वजों ने अपनी सफल व्यावसायिक यात्रा का सिर्फ प्रारंभ ही नहीं किया, अपितु इसमें शिखर की ऊंचाई को भी छुआ।

माहेश्वरी शब्द महेश अर्थात शंकर और वारि यानी समुदाय या वंश से मिलकर बना है। भगवान महेश ने हमें जो आदर्श दिए उनका पालन ही हमें माहेश्वरी बनाता है। हमारा प्रतीक चिह्न इन्हीं आदर्शों की अभिव्यक्ति है।

टीम SMT

कैसे करें भगवान महेश की पूजा

महेश नवमी के दिन सुबह जल्दी उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करें व शिव मूर्ति के समीप पूर्व या उत्तर में मुख करके बैठ जाएं, हाथ में जल, फल, फूल और गंध, चावल लेकर इस मंत्र से संकल्प लें "मम शिवप्रसाद प्राप्ति कामनया महेश नवमी निमित्तं शिव पूजनं करिष्ये"।

यह संकल्प करके माथे पर भस्म का तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला धारण करें। उत्तम प्रकार के गंध, फूल और बिल्वपत्र आदि से भगवान शिव पार्वती का पूजन करें। यदि किसी कारणवश शिवमूर्ति का सान्निध्य प्राप्त न हो सके तो भीगी हुई चिकनी मिट्टी को "हराय नमः" से ग्रहण करके "माहेश्वराय नमः" मंत्र का स्मरण करते हुए हाथ के अंगूठे के आकार की मूर्ति बनाएं। फिर "शूल पाणये नमः" से प्रतिष्ठा और "पिनाकपाणये नमः" से आह्वान करके "शिवाय नमः" से स्नान कराएं और पशुपते नमः से गंध, फूल, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करें।

इस प्रकार पूजन करने के बाद उद्यापन करके शिव मूर्ति का विसर्जन कर दें। इस प्रकार महेश नवमी के दिन भगवान शिव का पूजन करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होती है।

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

THE PACKAGING PEOPLE

Kraft Paper Mill
Shriniwas Board and Paper Pvt Ltd, Dewas

Corrugated Box:
Shree Packers (MP) Pvt Ltd, Ujjain an ISO 9001-2008 Certified Co
Vyanktesh Corrugators Pvt Ltd,Ujjain an ISO 9001-2008 Certified Co
Automatic 3/5 Ply Plant

HDPE Container & Accessories
Arpit Plastics Pvt Ltd, Ujjain
Shriji Polymers Pvt Ltd, Ujjain
Caps & Bottle for Pharmaceuiticals
(President's Award Winning Unit)

Manufacturers of All types of Corrugated Boxes, Dye Cut Boxes, Laminated and Offset Printed Cartons for Domestic & Export for Textile, Cosmetics, Engineering, Automobile, Pharmaceuticals, Food & Beverages , DMF approved facility for Bottles and CR Caps.

Contact Number:0734-2527320-23 Fax Number:0734-2519691
Email:anand@packingpeople.com Website:www.packingpeople.com

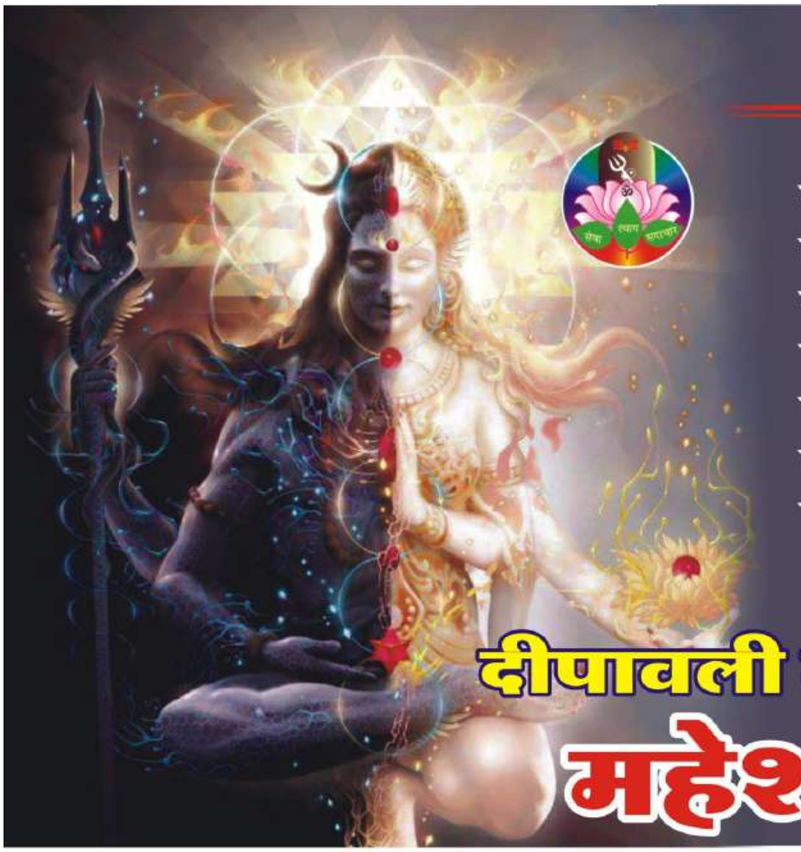

माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति पर्व होने के बावजूद महेश नवमी वह उल्लास का पर्व नहीं बन पाया, जिसकी आवश्यकता थी। आखिर ऐसा क्यों? और क्या करें इसके उल्लास में चार चांद लगाने के लिए? आईये करें चिंतन!

▸▸ श्रीराम माहेश्वरी वाराणसी

दीपावली की तरह मनाएं महेश नवमी

अपने समाज का प्रादुर्भाव दिवस महेश नवमी इस वर्ष २१ जून २०१८ को है। पूरे देश में तथा विदेशों में भी अपने समाज के स्थानीय संगठन महेश नवमी समारोह आयोजित करते हैं। कार्यकर्ताओं के उत्साहपूर्ण प्रयास से महेश नवमी के कार्यक्रमों में समाजबंधुओं की भागीदारी बढ़ी है। कार्यक्रमों की गुणवत्ता में निखार स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विविधता के साथ-साथ कार्यक्रम के माध्यम से कोई न कोई संदेश देने की दृष्टि विकसित हो रही है। इस सराहनीय उपलब्धि के बावजूद महेश नवमी अपने घरों में एक त्योहार के रूप में स्थापित नहीं हो पाई है। परिवार के सभी सदस्य महेश नवमी मनाने के लिए समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने नहीं जाते हैं, कुछ जाते हैं, कुछ घर पर ही रुक जाते हैं। लगता है महेश नवमी मनाने की परंपरा समाज के संगठनों ने शुरू की और हम लोग उसी में रम गए। इसलिए अनजाने ही घर में महेश नवमी मनाने का विचार अंकुरित नहीं हो पाया।

हमने ही नहीं दिया अधिक महत्व

वास्तव में परिवार के किसी सदस्य का जन्मदिन मनाने से अधिक महत्व हमें अपने समाज प्रादुर्भाव दिवस मनाने को देना चाहिए। जिस तरह होली-दिवाली-विजयादशमी के त्योहार अपने घरों में मनाए जाते हैं, उसी तरह महेश नवमी को भी एक त्योहार के रूप में प्रत्येक माहेश्वरी के अपने-अपने घरों में मनाया जाना चाहिए। राज तंत्र अथवा संगठनों द्वारा जो उत्सव मनाए जाते हैं, किसी भी कालखंड में उनमें शिथिलता अथवा व्यवधान आने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। इसके कई उदाहरण इतिहास व वर्तमान में मौजूद हैं। एक त्योहार के रूप में महेश नवमी घर में मनाने से सभी सदस्यों की इसमें भागीदारी होगी। इससे माहेश्वरी भाव अधिक पुष्ट होगा। इस पावन दिवस को त्योहार के रूप में अंगीकार करने से यह परिवार में सामाजिक संस्कार की नींव को मजबूत करेगा। अन्य त्योहारों की भांति घर में महेश नवमी को एक त्योहार के रूप में स्थापित करने के लिए होली, दीपावली व विजयादशमी जैसे उत्साह की जरूरत है।

ऐसे दें उल्लासित स्वरूप

अपने मित्रों-रिश्तेदारों को तथा समाजबंधुओं को इस अवसर के उपलक्ष्य में शुभकामना संदेश प्रेषित किए जाएं। घर के प्रवेश द्वार पर फूल पत्ती, सजावटी वंदनवार, रंगोली, बिजली से सजावट करें। स्थानीय संगठन इसके लिए प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं। व्हाट्अप द्वारा उनके चित्र मंगवाकर पुरस्कृत किया जा सकता है। परिवार के सभी सदस्य मिलकर एक साथ घर में महेश वंदना करें, प्रसाद वितरित करें। अन्य त्योहारों की भांति महेश नवमी पर भी रसोई में कुछ विशिष्टता रखी जाए। घर के सभी सदस्य अपने से बड़ों को प्रणाम करें। परिवार में अर्थोपार्जन करने वाले सदस्य बड़ों को उनकी आवश्यकता/अभिलाषा के अनुरूप उपहार भेंट करें। परिवार प्रमुख छोटों को अन्य त्योहारों की भांति इस दिन भी त्योहारी दें। परिवार के सदस्यों के साथ अपने आवास-प्रतिष्ठान के कर्मचारियों व सेवकों को भी त्योहारी दी जाए। बच्चों को उपहार दिया जाए जिससे उनके मन में महेश नवमी के लिए आकर्षण जागृत हो, उनमें माहेश्वरी भाव का बीजारोपण हो। किसी रिश्तेदार को सहयोग की आवश्यकता हो तो इस दिन उसका सहयोग करें, किसी कारण से तत्काल सहयोग संभव न हो तो उसका सहयोग करने का संकल्प करें। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जिनका सहयोग किया जा रहा है उनका स्वाभिमान आहत न हो। समाज के किसी प्रकल्प अथवा सेवा निधि को आर्थिक सहयोग भेंट करें। भेंट राशि की संख्या से अधिक महत्व इस भाव का है कि हमने सेवा राशि अर्पित की। महेश नवमी के उपलक्ष्य में इस दिन अथवा महेश नवमी के पूर्व किसी सुविधाजनक दिन सामूहिक रूप से कारसेवा की जाए। सिख समाज की इस अनुपम परंपरा को निभाते हुए अपने समाज द्वारा स्थापित भवन / धर्मशाला / अतिथिगृह, समाज के किसी प्रकल्प, किसी मंदिर अथवा किसी सार्वजनिक स्थल का कारसेवा हेतु चयन किया जा सकता है। अपने परिवार के पुरखों का श्रद्धा स्मरण करते हुए परिवार के प्रति उनके योगदान को याद किया जाए। स्थानीय संगठन के माध्यम से अपने क्षेत्र के श्रद्धा-पुरुष, प्रादेशिक व राष्ट्रीय संगठन के माध्यम से प्रादेशिक व राष्ट्रीय स्तर पर श्रद्धा पुरुषों का स्मरण किया जाए। समाज के प्रति इनके समर्पण, योगदान से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराया जाए। व्यक्तिगत स्तर पर अथवा संगठनों के माध्यम से पौधोरापण भी किया जाए।

सभी माहेश्वरी बन्धुओं को
महेश नवमी पर्व की
हार्दिक मंगलकामनाएँ एवं बधाई
आर.डी. बाहेती
प्रदीप बाहेती
With Best Compliments From...
R.D. Baheti RDB GROUP Pradeep Baheti
HOTEL ★★★
RDB PALACE 3 Star Facility
RDB GROUP
SD-4 A, Kabir Marg, Bani Park, Jaipur-16. Ph. 2208536/7
TATA
RDB Highway Services (P) Ltd.
Telco Authorised Service Station
25 km. N.H. 8, Hardhyanpura Bagru, Jaipur
RDB LAND DEVELOPERS (P) LTD.
Group Housing, Commercial, Residential Plot & Flats
RDB House, KE-9, Kabir Marg, Bani Park, Jaipur-16
HP
Petrol Pumps At:
• Amer Road, Jaipur # 2635796
• 25 km. N.H. 8, Bagru, Jaipur # 2865196
• Surya Nagar, Tonk Road, Jaipur # 2722970
Regd. Off. : RDB House, KE-9, Kabir Marg, Bani Park, Jaipur - 302016. Ph. No. 2201249, 2202664, 2202798, 2203678, 2206435 • Fax : 0141-2203630, 2207537
E-mail : rdbjpr@datainfosys.net, rdbcars@sify.com ♦ Work Shop : RDB Auto Complex, Bagru N.H. 8, Jaipur. Ph. 2865222, 2865244
Volkswagen. Das Auto.
Vento
Polo
Volkswagen Ajmer
36, Near Fire Station, Opp. Birla City Water Park, NH - 8, Sanderiya, Ajmer - 305001
Phone: 0145 - 2695186 • Fax: 0145 - 2695286 • Mobile: 9782880000 • Email: sales@vw-rdbcars.co.in
NISSAN
SHIFT_ the way you move
Grand
NISSAN
Call 1800 209 4080 | www.nissan.in
Grand Nissan
70/1, Basni Baghela, NH-65, Pali Road, Jodhpur - 342005.
Tel.: 0291-2729888, 9782001750
E-mail : sales@grandnissan.co.in
• Ashok Baheti • Sanjay Baheti • Aditya Baheti • Arjun Baheti •Aayush Baheti

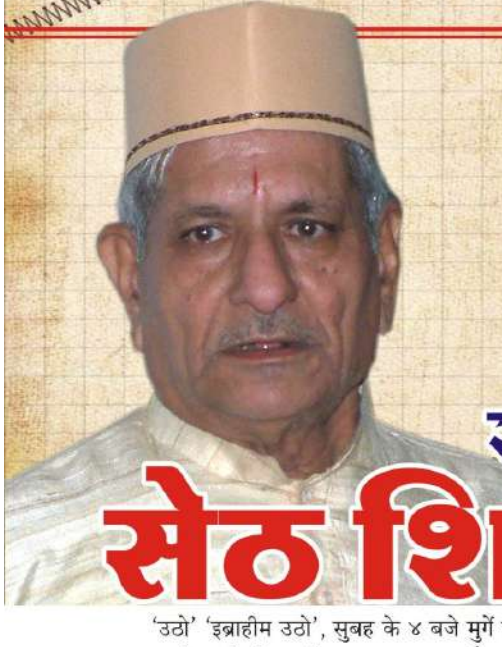

व्यक्ति बड़ा धन से तो बनता है लेकिन केवल धन से ही नहीं, इसके लिए उसके मन में मानवीय संवेदनाओं की भी आवश्यकता होती है। जब कोई आर्थिक रूप से समृद्ध इन संवेदनाओं से ओत-प्रोत होता है, तो वह कितना अधिक जनकल्याण कर सकता है इसका ही उदाहरण हैं चंद्रपुर निवासी सेठ शिवराज सारडा।

▸▸ डॉ. जुगलकिशोर सोमानी, चन्द्रपुर

खुशियों के दीप जलाते सेठ शिवराज सारडा

'उठो' 'इब्राहीम उठो', सुबह के ४ बजे मुर्गे की बांग के साथ इस आवाज को सुनते ही इब्राहीम हड़बड़ाकर उठ बैठा। आंखें मलकर देखा तो सामने खुद सेठजी शिवराज सारडा खड़े थे। एक हाथ में चाय की प्याली और दूसरे में पारले जी का पैकेट। सेठजी ने कहा 'इब्राहीम उठो, रमजान का महीना शुरू है, तुम्हारे रोजे शुरू हैं, चाय बिस्कुट खा लो। रोजा शुरू होने को है।' शाम को ही इब्राहीम अपने मालिक की वसूली के संदर्भ में अंकीसा आया था। वापस जाने का प्रबंधन नहीं होने के कारण वह दुकान में ही रात को सो गया था। बातों-बातों में ही अपने रोजा रखने का जिक्र उसने सेठजी से कर दिया था। सेठजी ने इस बात को ध्यान में रखकर प्रातः चार बजे खुद ही चाय बिस्कुट का प्रबंध कर उसे उठा दिया। यह इब्राहीम के लिए अनपेक्षित था। गदगद होकर इब्राहीम सेठजी को सिर्फ ताकते रह गया। सोचने लगा... 'बड़ा आदमी होना अच्छी बात है पर अच्छा आदमी होना बहुत ही बड़ी बात है।' ऐसे कई किस्से सेठजी की सहृदयता से जुड़े हैं, जो कई लोगों ने प्रत्यक्षदर्शी बनकर महसूस किए हैं। तभी तो एक संपन्न व्यवसायी होने के बावजूद सेठजी की प्रतिष्ठा जितनी संपन्नता के कारण है, उससे अधिक उनकी अच्छाई के कारण। वे स्वभाव से इतने सरल, सहज व संवेदनशील हैं कि कोई कह ही नहीं सकता कि ये इतने बड़े व्यक्ति होंगे। आखिर संपन्नता तो व्यक्ति की सरलता को सहज ही लील लेती है। लेकिन उन्होंने कभी ऐसा होने नहीं दिया।

चुनौतियों के बीच जीवन की शुरुआत

सेठ शिवराज सारडा का जन्म चुन्नीलालजी और मोहिनी देवी के इकलौते पुत्र के रूप में हुआ था। राजस्थान के मुंडवा (जिला नागौर) में दादुपंथी स्कूल से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर वे अपने उद्यमी पिता के साथ अंकीसा आ गए। तत्कालीन चंद्रपुर जिले की सिरोंचा तहसील में अंकीसा एक छोटा सा गांव है। सिरोंचा से ३० किमी दूर इस दुर्गम क्षेत्र में पिताजी का छोटा सा व्यवसाय था। पारिवारिक स्नेही रामचंदर करवा (मामाजी) के यहां रहकर उन्होंने अपनी मैट्रिक तक की शिक्षा पूरी की। उसके बाद तत्कालीन पीयूसी की परीक्षा उत्तीर्ण की। हिंदी, मराठी, अंग्रेजी, तेलगू, उर्दू के साथ मोड़ी (आदिवासी) भाषा पर भी उनका प्रभुत्व रहा। पढ़ाई के साथ वे परिवार के व्यवसाय में भी पूरी मदद करते थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनकी इच्छा सरकारी नौकरी करने की थी पर पिताजी एवं पारिवारिक आग्रह के अनुसार अंकीसा आकर उन्होंने अपने पिता का व्यवसाय को संभाला। जब वे २१ वर्ष के थे तभी पिताजी का देहांत हो जाने के कारण परिवार एवं व्यवसाय की पूरी जिम्मेदारी ही निभाना पड़ी।

छोटे से व्यवसाय को बनाया वटवृक्ष

जब उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय को संभाला तब वह अत्यंत लघु स्वरूप में था, लेकिन सेठजी की तीक्ष्ण व्यावसायिक सोच से उसे वृहद वृटवक्ष का स्वरूप लेने में मात्र कुछ वर्ष ही लगे। क्षेत्र के लोगो की जरूरतों को ध्यान में रखकर सूई से सोने तक का व्यापार उनके दुकान से होता था। व्यापार के प्रति उनका दृष्टिकोण कभी भी पूर्णतः आर्थिक नहीं था। गांव की सभी समस्याओं पर चर्चा व निवारण, पारिवारिक कलहों को दूर करना आदि कई कार्य सेठजी के माध्यम से होते थे। इसी कारण लोग उनकी दुकान को समस्या निवारण केंद्र समझते थे और सेठजी को न्यायाधीश के रूप में मान्यता देते थे। सेठ शिवराज की अंकीसा स्थित दुकान आज के किसी मॉल या सुपर बाजार से कम नहीं थी। किराना, कपड़ा, दवाई, कृषि केंद्र, लोहा, सीमेंट, बर्तन, क्रॉकरी, मिट्टी का तेल, डीजल से लेकर सोने तक सारी चीजें उनकी दुकान में मिल जाती थीं। सारी चीजें रखने में नफा कमाना उद्देश्य गौण रहता था। लोगों को आवश्यकता की सारी चीजें उपलब्ध होनी चाहिए, यही उनकी सोच थी। विश्वसनीयता इतनी कि १५० किमी के परिक्षेत्र से लोग दैनंदिनी चीजों के अलावा त्योहार व शादी की सारी खरीदी उनकी दुकान से ही किया करते थे। बरसात में रास्ते बंद हो जाते थे, इसलिए २५० किमी दूर चंद्रपुर से सारी चीजों की खरीदी पहले ही कर के उचित व्यवस्था किया करते थे। दूरदराज का क्षेत्र होने के कारण वैद्यकीय सेवाएं गांव में नहीं थी। अतः अच्छी मान्यता प्राप्त कंपनियों की दवाइयां भी रखते थे। इन्हें लेने लोग आंध्रप्रदेश (तेलंगाना), मप्र (छग), अहेरी (१०० किमी) और सिरोंचा से अंकीसा आते थे। दवाई का ज्ञान होने के कारण छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज भी कर दिया करते थे। दुकान में १५-१६ कर्मचारी रहते थे, पर सभी के साथ उनका व्यवहार पारिवारिक था।

किसानों के सच्चे मित्र

सेठ शिवराजजी व्यवसायी होने के साथ ही सामाजिक दायित्व निभाने वाले एवं किसान हितैषी के रूप में भी ख्यात थे। अपने व्यवसाय के साथ ही गांव की समस्याओं के प्रति सदैव सजग थे। सुधारवादी विचारों को उन्होंने हमेशा ही स्वीकार किया। सेठजी की दुकान गांव के

किसानों का सलाहकार केंद्र था। शाम को आकाशवाणी (रेडियो) की खबरें सुनने सभी लोग दुकान पर इकट्ठे होते थे। खाद बीज की नई कंपनियां उनकी दुकान के माध्यम से ही जानकारी किसानों तक पहुंचाती थी। सहकार के माध्यम से किसानों की उपज बेची जाती थी और सेठजी द्वारा सारा हिसाब-किताब रखकर पैसों का बंटवारा किया जाता था। किसानों को सहकारी संस्था के माध्यम से व्हर्जेनिया तंबाकू का उत्पादन कर उसे सही दर पर बेचने का कार्य अंकीसा में हुआ है। किसानों को बीज और खाद लेकर फसल निकलने पर ही उसका भुगतान लिया जाता था। किसानों का सेठजी पर इतना विश्वास था कि कौनसी फसल लेना और कब बेचना इसके निर्णय भी किसान सेठजी की सलाह से लेते थे। किसानों का इतना विश्वास होने के बावजूद सेठजी ने कभी साहूकारी नहीं की। अड़चनों में आर्थिक मदद वे जरूर करते थे, पर शोषण नाम का शब्द उनके शब्दकोष में नहीं था

सभी अपने और वे सभी के

सेठ शिवराजजी को लोग सम्मान से 'शिवराज महाराज' कहते थे। इसके पीछे उनकी सामाजिकता थी। गांव में शादी हो तो बर्तन, चद्दरें, चाय के मग, ग्लासेस, बिजली के बल्ब आदि वापरो और वापिस करो के सिद्धांत पर दुकान से दिए जाते थे। शादी की सारी खरीदी दुकान से तो होती थी पर जो चीजें, यहां पर नहीं मिलती थीं, जैसे रेडियो, साइकिल, घड़ी वगैरह वे भी सेठीजी द्वारा बुलवाई जाती थी। इतना ही नहीं उस समय बिजली नहीं होने के कारण दुकान में जो पेट्रोमॅक्स जलते थे, वह भी शादी के लिए दिए जाते थे। सेठजी कभी-कभी तो कंठील के उजाले में अपना काम करते और पेट्रोमॅक्स शादियों में दे दिया करते थे। जब तक सेठजी अंकीसा में रहे, तब तक उन्होंने गांव के किसी झगड़े को पुलिस स्टेशन या कोर्ट में जाने नहीं दिया। सेठीजी की न्यायप्रियता का भान सभी के द्वारा रखा जाता था। वे अपने गांव एवं अपने क्षेत्र के विकास के प्रति कटिबद्ध थे। उन्होंने बिजली लाने में अथक प्रयास किए। गांव में टेलीफोन हो इसलिए पाँच कनेक्शन स्वयं के नाम से लेकर इस दिशा में सराहनीय कार्य किया। गांव में मंदिर का निर्माण किया और आज भी इसकी देख-रेख व व्यवस्था में उनका उल्लेखनीय योगदान रहता है। गांव में रहने की व्यवस्था न होने के कारण धर्मशाला का निर्माण किया और उचित व्यवस्था की। जब तक सेठजी गांव में थे तब तक कभी भी ग्राम पंचायत के चुनाव नहीं हुए। सभी को साथ लेकर आम सहमति से ही पंचायत का गठन कराया। लोग भी उनके शब्दों का आदर करते थे। आदिवासी और गरीबों के कल्याण हेतु सरकारी दवाखाना (पीएचसी) खोलने के लिए अथक प्रयास किए।

चंद्रपुर में भी चलाई सेवा यात्रा

बच्चों की शिक्षा, उनके भविष्य और समय परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सेठजी ने अपने परिवार को १९८१ में चंद्रपुर स्थानांतरित कर लिया। चंद्रपुर में भी उनकी सेवा यात्रा सतत रूप से चलती रही। उन्हीं के नेतृत्व में १९८३ में माहेश्वरी सेवा समिति का गठन किया गया और वे संस्थापक अध्यक्ष बने। महेश भवन के निर्माण में तन-मन और धन से सहयोग दिया और सर्वाधिक धनराशि देकर भवन को अपने दिवंगत माता-पिता को समर्पित किया। श्रीनाथजी हवेली के ट्रस्टी बने और सेवा व सहयोग दिया। श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, श्री मार्कंडा देवस्थान, गौरक्षण, शांतिधाम, पुरातन पांच देऊल देवस्थान, मोक्षधाम आदि कई प्रतिष्ठित संस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग देकर निरंतर सामाजिक कार्य करते रहे। संस्कृत भाषा की उन्नति हेतु संस्कृत पाठशाला स्थापित करने में सहयोग दिया और संस्कार और संस्कृति की रक्षा हेतु उल्लेखनीय कार्य किया। साथ ही चंद्रपुर में विद्याविहार कान्व्हेंट की स्थापना में भी अहम भूमिका अदा की। उनके परिवार में दो पुत्रियां कौशल्या और सरस्वती के साथ पांच पुत्र रामकिशोर, दामोदर, भगवानदास, ब्रिजगोपाल और पवनकुमार हैं। जिन्हें जीवन-यापन की बेहतरीन शिक्षा दी और वे आज अपने परिवार का नाम रोशन कर रहे हैं। सेठजी के साथ-साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बंसतीदेवी का भी अंकिसा गांव में काफी सम्मान था। दुकान के सहायकों को अपने पुत्र जैसा प्रेम करती थी। रोजाना गांव के गरीब लोगों को सब्जी, दुध और छाछ का वितरण करती थी। कभी अपने पैसे और प्रतिष्ठा का अहंकार नहीं किया। उनके प्रति भी लोगों के मन में अगाध श्रद्धा है।

शिक्षा के लिए दी स्कूल की सौगात

खुद पढ़े-लिखे होने के कारण सेठजी शिक्षा का महत्व समझते थे। अतः अपने गांव अंकीसा में उन्होंने शिक्षा का विकास किया। अंकीसा के आसपास के २५ गांवों में शिक्षा केंद्र नहीं थे, इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंने सन् १९६० में व्यंकटेश्वर शिक्षण संस्था की स्थापना की और वे इस संस्था के सचिव बने। उन्होंने लगातार ४० वर्षों तक सचिव के रूप में ही कार्य किया और अध्यक्ष का सौभाग्य गांव के बुजुर्गों और मित्रों को दिया। संस्था द्वारा संचालित स्कूल भवन का निर्माण कर उन्होंने पांचवीं से दसवीं तक कक्षाएं प्रारंभ की। दूरदराज से आने वाले छात्रों की कठिनाई को ध्यान में रखकर उन्होने छात्रावास भी शुरू किया। भोजन की व्यवस्था भी करवाई, स्कूल में जाकर बच्चों की पढ़ाई के बारे में वे हमेशा पूछताछ करते। शिक्षकों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी समस्याओं को सुनते थे किंतु कभी उन्होंने अपने सचिव होने का रौब नहीं जमाया। सभी को अच्छी शिक्षा मिले यही उनका उद्देश्य था। आज इस विद्यालय के छात्र देश-विदेश में हैं, अच्छी कंपनियों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। वर्तमान में विद्यालय में करीब १२०० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। श्रीनिवास हाईस्कूल के नाम से अति दुर्गम इलाके में १९६० में स्थापित यह विद्यालय सेठजी के तन-मन-धन द्वारा ही वर्तमान स्वरूप तक पहुंचा है।

10 माह से थमे लोहार्गल तीर्थ कायाकल्प के पहिये

लोहार्गल राजस्थान के झुंझनू जिला में खंडेला से २५ किमी दूर स्थित वह स्थल है जो माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति का कारण बना था। यह समाज का वही उत्पत्ति स्थल है, जहां भगवान महेश ने हमारे पूर्वजों से सूर्यकुंड में उनके शस्त्र डलवाकर उन्हें क्षत्रिय से वैश्य धर्म प्रदान किया था। यह हमारे लिए किसी तीर्थ से कम नहीं होने के बावजूद लंबे समय तक उपेक्षा का शिकार रहा। फिर अभा माहेश्वरी युवा संगठन ने इसके विकास का बीड़ा उठाया और लगभग अधिकांश निर्माण पूर्ण हो चुका है, लेकिन अर्थ की कमी से फिर से गत १० माह से निर्माण कार्य के चक्के थम से गए हैं।

▸▸ टीम SMT

माहेश्वरी समाज अर्थात लक्ष्मीपुत्रों का वह समाज जो विश्व की संपन्नतम् जातियों में से एक है। हमारे इस समाज की उत्पत्ति की कहानी भगवान महेश (शिव) से जुड़ी है। हमारे पूर्वजों को ऋषि श्राप से भगवान शिव ने मुक्त कर क्षत्रिय से वैश्य बनाया था। यह घटनाक्रम जहाँ हुआ वह स्थान लोहार्गल माना जाता है। जो राजस्थान के झुंझनू जिले में खंडेला से २५ किमी दूर है। इस पौराणिक घटनाक्रम के अनुसार यह स्थल समाज का उत्पत्ति स्थल है और इस नाते माहेश्वरी समाज के लिए यह तो एक अत्यंत पावन तीर्थ की तरह महत्वपूर्ण है। इसके बावजूद यह लंबे समय से उपेक्षा का शिकार ही बना रहा। लक्ष्मी पुत्रों का उत्पत्ति स्थल और फिर भी समाज के लिए ही अनजान।

पुराणों में भी विशेष महत्व

माहेश्वरी जाति का उत्पत्ति स्थल लोहार्गल स्थल स्कंध पुराण में वर्णित है। सृष्टि की स्थापना के साथ ही लोहार्गल की भी उत्पत्ति मानी जाती है। पुराणों में सृष्टि के प्रारंभ में इसका नाम 'ब्रह्म हृदय' त्रेतायुग में 'शंख पद्म' व द्वापर से अब तक इसका नाम 'लोहार्गल' प्रचलित है। लोहार्गल में ही भगवान परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का नाश करने का प्रायश्चित

करने के लिए भगवान शिव का यज्ञ किया था। यज्ञ स्थल पर ही कुंड है, इसलिए यह सूर्य का ऊर्जा क्षेत्र है। सूर्य कुंड एवं सूर्य मंदिर के साथ यहां पर मलयकेतु पर्वत भी है, तो सुमेरू पर्वत का पोता है। ब्रह्मादि नाम का चौबीस कोस में फैला हुआ यह अमृत कुंड यहां स्थित है, जिसमें स्नान करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यमराज द्वारा भगवान विष्णु से प्रार्थना करने पर उनके आदेश से मलयकेतु पर्वत उड़कर आया और इस कुंड को ढंक दिया। किवदंती है कि आज भी कई बार इस पर्वत पर गायों के रंभाने और ऋषि-मुनियों के मंत्रोच्चार की आवाजें सुनाई देती हैं। इसके अलावा यहां मालकेतु मंदिर, बनखंडी, ज्ञानवाणी, भीमकुंड, द्रौपदी कुंड व प्राचीन रघुनाथजी का मंदिर है।

भवन निर्माण में राजनीति न हो

भवन निर्माण में वास्तव में अर्थ की कमी आ रही है, लेकिन हम इसके लिए प्रयासरत हैं। इस मुद्दे को समाज के समर्थजन राजनीतिक मंच न बनाकर सहयोग करें तो इसका निर्माणमात्र ६० दिनों में पूर्ण हो सकता है। अतः मैं तो समाज हित में सभी से आगे आकर समाज के गौरव को मूर्तरूप दिलवाने में सहयोग की अपील करता हूँ। **- प्रदीप बाहेती**

अध्यक्ष, लोहार्गल भवन निर्माण समिति,
अभा माहेश्वरी युवा संगठन ट्रस्ट

ऐसे चली विकास यात्रा

लक्ष्मीपुत्रों का उत्पत्ति स्थल होने के बावजूद लोहार्गल उपेक्षा का शिकार बना हुआ था। इस स्थिति से इस पवित्र स्थल को उबारकर इसे माहेश्वरी समाज के पंचम तीर्थ का स्थान देने का आह्वान श्री माहेश्वरी टाईम्स लंबे समय से कर रही थी। इसे गौरवशाली रूप देने का बीड़ा अभा माहेश्वरी युवा संगठन ने उठाया और वहाँ सर्वसुविधायुक्त आकर्षक भवन निर्माण का संकल्प लिया। लगभग १० वर्ष पूर्व अभा माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा महासभा के पूर्व सभापति पद्मश्री बंशीलाल राठी के करकमलों से यहाँ भवन निर्माण का भूमिपूजन किया गया। इसका निर्माण अभा माहेश्वरी युवा संगठन ट्रस्ट अंतर्गत लोहार्गल भवन निर्माण समिति द्वारा किया जा रहा है। भवन निर्माण समिति अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी जयपुर निवासी समाजसेवी प्रदीप बाहेती निभा रहे हैं। श्री बाहेती की जिम्मेदारी तो सिर्फ भवन निर्माण की ही रही है, लेकिन उन्होंने अर्थ संग्रह के लिए भी समाज में अलख जगाया। समाजजनों को लोहार्गल तक पहुँचाने के लिए श्री बाहेती के नेतृत्व में प्रतिवर्ष सूर्य सप्तमी पर जयपुर से लोहार्गल तक लोहार्गल दर्शन यात्रा निकाली जाती है। इसके पीछे श्री बाहेती व उनके सभी साथियों का लक्ष्य लोहार्गल धाम के प्रति जनजागृति उत्पन्न करना व इसे समाजजनों के मन में एक पावन तीर्थ की तरह प्रतिष्ठित करना है।

कैसा बन रहा है भव्य भवन

यहां आने वाले माहेश्वरी बंधुओं की सुविधा के लिए ५० बाय ५० फीट का डबल ऊंचाई के स्वागत कक्ष, ६० बाय ६० फीट का सत्संग भवन तथा ४० बाय २६ फुट में भोजन कक्ष का निर्माण भी करवाया जा रहा है। बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिए संपूर्ण सुविधायुक्त २२ एयर कंडीशन कमरे होंगे। यहां समूह में रुकने लिए पुरुष व महिलाओं हेतु अलग से डोरमेट्री भी निर्माणाधीन है। सेवकों व ड्राइवरों के लिए पृथक कमरे होंगे। परिसर में एक विशाल शिवालय भी अपना स्वरूप ले रहा है। यहां लाइब्रेरी व बच्चों के लिए खेलकूद कक्ष भी होगा। सुरम्य प्राकृतिक वातावरण को मद्देनजर रखते हुए इसे धर्मशाला का स्वरूप न देकर रिसोर्ट का रूप दिया जा रहा है, जो कुदरत के करीब होने का अहसास दिलाएगा। संपूर्ण योजना का अधिकांश कार्य पूर्ण हो चुका है। इस भवन के निर्माण में लगभग ५ करोड़ रुपए का खर्च अनुमानित है। प्रथम चरण में ४ करोड़ व द्वितीय में १ करोड़ रुपए खर्च होंगे।

मात्र ७५ लाख की कमी से भवन अपूर्ण

भवन का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। अब सिर्फ इसे पेंट करना, इंटीरियर, फर्नीचर, एयर कंडीशनर तथा जनरेटर लगाए जाना शेष हैं। इन सभी के लिए ७५ लाख रुपए की आवश्यकता है, जिसके लिए बैठक चल रही है। मात्र इस राशि की कमी से गत १० माह से निर्माण थम सा गया है। फंड की कमी की इस समस्या के पीछे लोग दबी जुबान में वित्त संग्रहणकर्ता महासभा सभापति श्याम सोनी तथा ट्रस्ट अध्यक्ष रमेश तापड़िया काठमांडू (नेपाल) की निष्क्रियता को एक कारण मान रहे हैं। फिर भी प्रयास थमे नहीं हैं। कोशिश तो यही है कि इसे आगामी ४ माह में पूर्ण कर समाज को समर्पित कर दिया जाए।

आप भी बन सकते हैं सहयोगी

आप भी सामर्थ्य अनुसार राशि संस्था को प्रेषित कर सकते हैं। यह राशि चेक या ड्रॉफ्ट के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है अथवा निर्माण संस्था के आईसीआईसीआई बैंक अकाउंट नंबर ६७५००१४५४०८७ में सीधे भी जमा की जा सकती है। यह राशि ८० जी के अंतर्गत आयकरमुक्त है। यहाँ राशि का कोई बंधन नहीं है। समाजजन अपनी सामर्थ्य अनुसार सहयोग प्रदान कर सकते हैं। आपका यह सहयोग समाज की गौरव पताका को सतत रूप से फहराएगा।

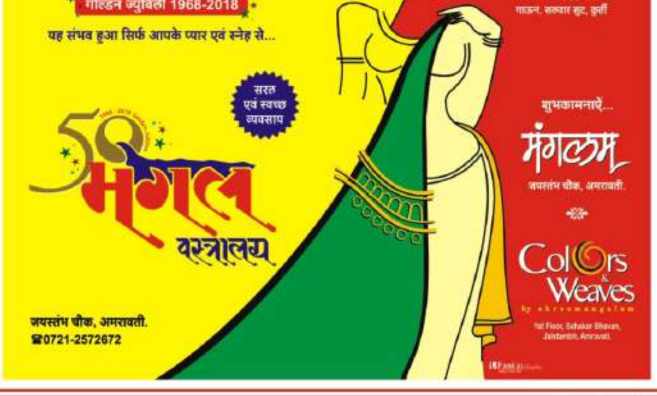

संगठन की रीढ़ है कार्यकर्ता

कोई भी संगठन अपने कार्यकर्ताओं की उपेक्षा से नहीं चल सकता। आखिर कार्यकर्ता ही तो संगठन की रीढ़ हैं। इनके बिना संगठन के औचित्य की सफलता कभी संभव नहीं।

▸▸ **कृष्णचंद टवाणी**, मदनगंज-किशनगढ़

किसी भी महत्वपूर्ण योजना को मूर्तरूप देकर साकार करना हो तो वह एक व्यक्ति द्वारा संभव नहीं हो सकता। यदि उसे संगठित होकर किया जाए तो वह योजना एवं कार्य शीघ्र व अच्छे तरीके से पूरा किया जा सकता है। इसके लिए ही सामाजिक संगठनों की आवश्यकता होती है। सामाजिक संगठन जितना सुदृढ़ होगा उतना ही कार्य अच्छा होगा। संस्था संगठन का भवन या कोष सुदृढ़ हो, इससे संगठन सुदृढ़नहीं हो सकता। संगठन का प्राण व धन होते हैं, उसके पदाधिकारी व उसके कार्यकर्ता। यदि वे निष्ठावान हैं तथा उनका संस्थान प्राणवान है तो संस्था प्रभावी व तेजस्वी हो सकती है। पदाधिकारी संस्था के हृदय होते हैं, तो कार्यकर्ता रीढ़ होते हैं। यदि संस्था के पास समर्पित, उद्यमी तथा सद्चरित कार्यकर्ता होंगे तो वह संस्था समाज का कल्याण व उत्थान कर सकती है।

पद सिर्फ सेवा के लिए

सामाजिक संस्थाओं के पद सेवाभाव से कार्य करने के लिए होते हैं, न कि किसी प्रकार के लाभार्जन के लिए। यदि कार्यकर्ता पूरी निष्ठा के साथ अपने पद के दायित्व को पूरा करते हैं, तो वह संस्था शीघ्र ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर तेजस्वी बन जाएगी। कार्यकर्ता ही संस्था की छवि को निखार सकते हैं। जिस संस्था के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता संस्था के कार्यों को लगन व उत्साह से नहीं करते तथा संस्था के कार्यों के लिए अपना समय व श्रम नहीं देते हों, वह संस्था बेजान हो जाएगी और थोड़े समय में ही उसका कार्य बंद हो जाएगा। केवल सम्मान या नाम प्रतिष्ठा के लिए किसी संस्था में पद ग्रहण करने का क्या औचित्य है?

टीम वर्क से ही सफलता

संस्था का कार्य तभी सुचारु रूप से संचालित होगा जब उसके पास समयबद्ध कार्यक्रम होगा, पर्याप्त अर्थ सुलभ होगा। समुचित रूप से हिसाब रखा जाएगा, समर्पित कार्यकर्ता होंगे तथा वह आपस में टीम वर्क से कार्य करेंगे। पदाधिकारियों का कर्तव्य है कि संगठन के वार्षिक कार्यक्रम तथा बजट का नियोजन करें। एक वर्ष के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रमों के आयोजनों का निर्धारण होने के पश्चात उसके लिए अर्थ की व्यवस्था कैसे होगी?

कार्यक्रम की बनाएं योजना

जो कार्यक्रम बनाए हैं उनको अच्छी तरह संपन्न करने की जिम्मेदारी प्रत्येक पदाधिकारी की होती है इसलिए पदाधिकारियों को कार्यक्रम निर्धारण करते समय ऐसे कार्यक्रमों को ही चुनना चाहिए, जो सहजता से संपन्न हो सके तथा जिससे समाज का हर परिवार लाभान्वित हो सकें। पदाधिकारियों को संगठन के संचालन तथा दैनिक आवश्यकताओं के लिए कितना रुपया प्रति वर्ष चाहिए, इसका अनुमानित बजट बनाया जाए तथा बजट के अनुसार ही आय-व्यय पर पूरा नियंत्रण रखा जाए। संगठन के अध्यक्ष व सचिव का महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह समाज की वर्तमान समस्याओं का गहन अध्ययन करके उनके निराकरण हेतु उचित कदम उठावें एवं समस्याओं का समाधान उचित ढंग से करें। किसी विशेष कार्य के लिए पृथक समिति का गठन कर अन्य सदस्यों को भी उसका दायित्व सौंपना चाहिए।

समयबद्ध हो मूल्यांकन

अध्यक्ष व सचिव का दायित्व है कि वह संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी अवश्य करें। जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, वह समय में तथा उसी बजट में पूरा हुआ या नहीं। जिन-जिन सदस्यों ने कार्य पूरा करने में सहयोग दिया, उनको सम्मानित करना या उनको धन्यवाद पत्र भेजना भी एक कुशल अध्यक्ष की जिम्मेदारी होती है। यदि कार्य समय में पूरा नहीं हुआ या बजट से अधिक खर्च हुआ तो उसके क्या कारण हैं? यह मालूम कर भविष्य में ऐसा न हो इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। आज जब हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं तो हमें अब आगे बढ़ना है। विश्व में अन्य समाजों के साथ प्रगति करना है। नए युग की अपेक्षाओं के अनुरूप हमें हमारे समाज को भी प्रगतिशील बनाना है किंतु हमें यह करते वक्त अपनी संस्कृति को भी नहीं भूलना चाहिए। संत तुलसीदास जी ने कहा है-

"तुलसी या संसार में भांति भांति के लोग।
सबसे हिलमिल चालिये नदी नाव संयोग।।"

अहम की जगह हो समन्वय भावना

कार्यकर्ता में अहं की भावना की बजाए समन्वय की भावना होना नितांत आवश्यक है। अधिक नाम, अधिक प्रशंसा कैसे हो? कार्यकर्ताओं मे यह भावना आज ज्यादा बढ़रही है। थोड़ा सा वर्क करके उसका अधिक दिखावा करना तथा अधिक सम्मान चाहना यह सच्चे कार्यकर्ता के लिए अवगुण हैं। सच्चे कार्यकर्ता बिना किसी पद के कार्य करते हैं। निष्ठावान, परिश्रमी, समर्पित कार्यकर्ताओं का अभाव आज प्रत्येक संगठन में है। सामाजिक संगठनों को उन्नत व प्रगतिशील बनाना है तो पहले कार्यकर्ता को स्वयं चरित्रवान व पारदर्शी बनना पड़ेगा। स्वयं से अधिक संगठन को महत्व देना होगा। समय का सदुपयोग करना होगा तथा पूर्ण उत्साह से संगठन के कार्यों में तन,मन, धन से सहयोग देना होगा, तभी समाज में आपकी स्मृति एवं प्रतिष्ठा स्थायी बन सकेगी।

सफेद दाग मरीजों के लिए खुश खबरी

अब सफेद दाग असाध्य नहीं

अब तक हजारो मरीजों ने लिया लाभ

पूर्णतः
आयुर्वेदिक पद्धति से
उपचार

महाराष्ट्र की प्रसिद्ध एवं
एकमात्र
सफेद दाग रोग विशेषज्ञ

डॉ. स्नेहा राठी

बी.ए.एम.एस, पी.जी.सी.एस.डी.

Gurumaa Ayurvedic Skin Clinic

गुरुमाँ आयुर्वेदिक स्कीन क्लीनिक

दूसरा माला, वसंतशिला टॉवर,
लोकमत भवन के सामने, धनतोली, नागपुर (महा.)
मो. – 91-93730-67760
Email : drsnehagrathi@gmail.com

महासभा कार्य का आत्मनिरीक्षण

कंगन बनाम काम को आरसी?

▸▸ रमेश काबरा, मुम्बई

एक नवोढ़ा को ससुराल से कंगन बनाकर दिए गए-जिसे उसने पहने और शीशे में उन कंगनों को देखने लगी-कंगन कैसे लगते हैं? तभी पास खड़ी एक प्रौढ़ा ने कहा-बेटी हाथ कंगन को आरसी की क्या जरूरत है? वह तो खुद अपनी आंखों से देख सकती हो। पर उस नवोढ़ा को अपनी आंख से ज्यादा उस आरसी पर भरोसा था। इसलिए वह बार-बार कंगन को और खुद को ही देख रही थी। तब आरसी को मजबूर होकर बोल पड़ा- मुखड़ा क्या देखे दर्पण में? जो शक्ल भगवान ने दी है, वही तो दिखेगी। शीशा शक्ल थोड़े ही बदल सकता है, रूप में परिवर्तन या अभिवृद्धि तो नहीं कर सकता। जो सच्चाई है उसे समझने की कोशिश करो। पता नहीं आरसी की बात उस नवोढ़ा की समझ में आई या नहीं। पर पास वाली प्रौढ़ा को बात समझ में आई थी-उसका पिछला अनुभव जो था।

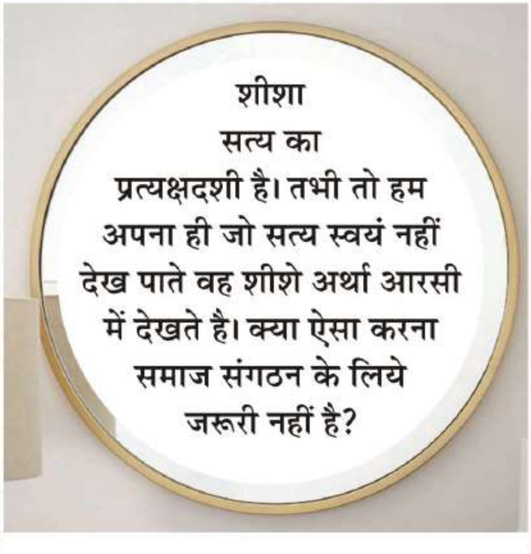

अब महासभा जैसी संस्था को क्या कहा जाए? नवोढ़ा, प्रौढ़ा या वृद्धा? वह अपने कंगन कहां और कैसे देख रही है? नवोढ़ा के पास चढ़ती उम्र थी, पर अनुभव नहीं था, इसलिए कंगन को आरसी में देख रही थी। पर यहां तो महासभा रूपी वृद्धा जिसे लगभग ११० साल पूरे हो चुके हैं-उसे भी तो अपने कंगन जांचने चाहिए। पिछले ११० वर्षों से केवल कंगन पहने-पहने शीशे (प्रस्तावों) के आगे मतवाली हो रही है। उसे देखना है कि क्या ये कंगन सही हैं, उन्हें परखने की उम्र है? पहनने के बाद कैसी दिखती है दुनिया को? यहां कंगन को काम और प्रस्तावों के अर्थ में लेते हैं। पिछले १०० वर्षों से घिसे-पीटे उन्हीं प्रस्तावों को पारित करने के नाम पर दोहराये जा रहे हैं- ११० वर्षों में ५ पीढ़ियां बदल चुकी हैं। उनमें से किसी ने भी आरसी बनाम शीशे की यह बात नहीं सुनीं? नहीं समझी? प्रस्ताव जो कर रहे हैं, वे क्या व्यावहारिक हैं? समय गति से उपयोगी हैं, उनके पालन की पहली जिम्मेदारी किसकी?

दूसरी बात पिछले ११० वर्षों से जो प्रस्ताव पारित करते आए हैं, उनकी क्या प्रतिक्रिया समाज में आई? समाजजन ने उन्हें अपनाया या नहीं अपनाया? केवल थोड़ा पीछे मुड़कर देखना ही काफी होगा। मतलब कि शीशे से परे हटकर अपनी असली छबि को देखना क्या जरूरी नहीं?

तीसरी बात जो हम निर्णय या प्रस्ताव पारित करते हैं, वे कहीं अमल में भी आते हैं? उनके अमल की पहली जिम्मेदारी किसकी है? स्वयं महासभा के सदस्य कार्यसमिति, कार्यकारी मंडल वाले पहले अपनी सक्रियता खुद बताएं, फिर अपने इलाके में जाकर बताएं और काम करें। समाज का जनसमर्थन प्राप्त करें। क्या इस ओर किसी ने इस मीटिंग में स्वयं से या दूसरे से प्रश्न पूछा है? जांचा है स्वयं को? किसी ने उस काम को अपनी कृति को कभी आरसी में देखने का प्रयास किया है?

चौथी बात-११० वर्ष पुरानी फैशन बदल गई, तब की नवोढ़ा जो कपड़े पहनती थी, वह आज की वृद्धा नहीं पहनती। मतलब कि वक्त में जो बदलाव आया है, उसके साथ-साथ तब की जो समस्याएं थीं, वे तो रही हीं, परंतु उसके साथ-साथ नई समस्याएं खड़ी हो गईं, उनकी कहीं सजगता तो नोंध ली गई, कोई सक्रियता दिखाई गई?

पांचवीं बात- बदलते समय के साथ दिशा-निर्देश देना एक काम है तो दूसरा महत्वपूर्ण काम केवल निर्देश नहीं बल्कि पूरी सक्रियता के साथ उन पर लग जाना, उसके लिए उत्साहपूर्ण वातावरण बनाना, प्रयास करते रहना आदि काम किसे करने होंगे? प्रस्ताव आप करोगे और काम क्या दूसरे लोग करेंगे? यह भी एक गलतफहती दूर करनी होगी, कंगन नवोढ़ा पहनेगी और उसके लिए आरसी कोई दूसरी प्रौढ़ देखेगी? मतलब साफ है जो कंगन पहनेगी वही उसे खुद की आंख से आरसी (समाज) में देखे-मतलब कि जो प्रस्ताव निर्देश करेगा वही उसके लिए सक्रिय प्रयास भी करेगा और करना भी चाहिए। अब प्रश्न है कि समयबाह्य काम को देखना और छोड़ना तथा सामायिक कामों को महत्व देना और जिम्मेदारी के साथ पकड़ना, जिनमें वे तमाम समस्याएं जो समाज को स्पर्ध करती हैं, जो समाज को तकलीफ देती हैं या जिससे समाज में विपन्नता आती है, तो उनका काम क्या है? वे हैं केवल समयबाह्य रिवाज, धन के अहम से बिगड़े हुए रिवाज, दिखावे की फजूलखर्ची, कष्ट देने वाली या समाज को तोड़ने वाली प्रथाएं- दुष्प्रभाव डालने वाले रिवाज, जिसकी सूची बहुत बड़ी है, यहां देना केवल रिपीटेशन होगा। उन पर प्रयास करने का प्राथमिकता से प्रयास

होने चाहिए जो नहीं हुए। एक बार नवोढ़ा की मुग्धावस्था को मान भी लें कि पर्दा प्रथा आपके कारण हटी या कम हुई (देहातों में अभी-भी कायम है) तो उससे समाज को लाभ या नुकसान कितना हुआ या रहा? पर्दा चला तो कोई आर्थिक नुकसान नहीं था, पर्दा हटा तो कोई लाभ नहीं हुआ। मतलब साफ है पर्दा के निकलने से किसी परिवार या व्यक्ति का शारीरिक आर्थिक हानि लाभ नहीं था और आज हटा तो उसके लिए तालियां बजाने या खुश होने की उतनी आवश्यकता नहीं है, उसे एक काल परिवर्तन के रूप में ही लेना चाहिए।

परंतु आज तो दूसरी खर्चीली कुप्रथाएं शुरू हो चली हैं जिनसे न सिर्फ जीवन कष्टमय हुए हैं, बल्कि हत्याएं तक होने लगी हैं। उन पर ध्यान देने की प्राथमिकताएं से जरूरत है। यह उस मुग्धा नवोढ़ा बनाम वृद्धा को कैसे कोई समझाए?

माहेश्वरी महासभा की सोमनाथ बैठक में प्री वेडिंग शूटिंग पर रोक लगाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इससे पहले जिस तरह शादियों में बेहिसाब खर्चे हो रहे हैं, ५० से १०० तरह के व्यंजन बनाये जा रहे हैं, समाज में अंतरजातीय विवाह हो रहे हैं उनके परिवार वाले उस शादी का भव्य रूप से रिसेप्शन देते हैं, शादी के कार्ड भिजवाते हैं, इस पर कोई चर्चा नहीं करता। समाज में जिस प्रवृत्ति को रोकना चाहते हो, उसे सर्वप्रथम उच्च पदों पर बैठने वाले सर्वप्रथम त्याग करें। व्यक्ति अपने गुणों से ऊपर उठता है, ऊँचे स्थान पर बैठने से नहीं। जो समाजबंधु महासभा के इतने बड़े शीर्ष पद पर रह चुके हों वो ही अगर इतने बड़े आयोजन कर के खुद का महिमा मंडन नहीं करना चाहिए। दबी जुबान में हर पदाधिकारी इस बात का विरोध तो करते हैं, लेकिन समाज के मंच से इस पर कोई खुलकर नहीं बोलना चाहता है।

प्री-वेडिंग शूट के अलावा शायद इन बातों पर भी कुछ चर्चा-सुझव आते, एक दिशा-निर्देश महासभा के मंच से आता तो ज्यादा अच्छा रहता। महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भी वो ही बात की कि सिर्फ प्रस्ताव या बंदी लाने से काम नहीं होगा, इससे पहले समाज के नेताओं को इसे अपनाना चाहिए। कुछ समझदार कार्यकर्ताओं ने जिम्मेदारी ली। नतीजा वे गंदे हथकंडे, कुटील दाव पेंच, द्वेषपूर्ण हरकतें आदि तो बंद हुई, परंतु काम के नाम पर वही निष्क्रियता रही। जिसके लिए भी दो कारण हैं। प्रथम तो वे लोग जो पिछले कई वर्षों से गुटबाजी के आधार पर महासभा में हावी थे। दूसरा प्रमुख कारण है जो अन्य लोग नए शामिल हुए हैं, उन्होंने भी अपनी जिम्मेदारी संस्था में केवल नाम शामिल कराने तक ही समझ रखी है, ऐसा नहीं कि उन कामों के लिए जमकर प्रयास करें, सक्रियता से काम करें। यह सोचने समझने बनाम आरसी देखने का वक्त आ गया है। अगर महासभा को अपनी सुंदरता कायम रखनी है, जो कि करीब ११० वर्ष की वृद्धा के लिए कहा जाता है, वापस दूधिया आ सकते हैं वापस नवयौवन प्राप्त होने लगता है-तो यह शतायु महासभा के लिए भी संभव है, वह फिर से नवोढ़ा बन सकती है। तब ये कंगन अप्रस्तुत नहीं होकर शृंगार का सही प्रसाधन बन सकेंगे। यह तभी हो सकेगा जबकि वह वैसी इच्छा करे-वैसा प्रयास करे। जिससे कि उसमें नवीनता आए, नया खून आए। नया जोश आए। केवल पहनने के लिए, आई हुई नई जवानी या नई सुंदरता किस काम की? उसके लिए जो आरसी का वह जवाब ही काफी होगा। मुखड़ा क्या देखें दर्पण में। अंतः जरूरी है कि अपने कायाकल्प को सार्थक बनाएं। अपने कार्यक्रमों का कायाकल्प करें।

महेश नवमी के पावन पर्व पर
सभी समाजबन्धुओं को
हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ

M/s. Thakurdas
Sukhdeo ji Malani

"Sukhshri"
Bhiwapurkar Nagar,
Near New A.P.M.C., Amravati (M.S.)

B.O.-324, 325, 326 Mahavir Plaza,
Dawa Bazar, Jaistambh Chowk,
Amravati (M.S.)

विलुप्ति की ओर बढ़ता माहेश्वरी समाज कारण व उपाय

माहेश्वरी समाज की सामाजिक जनगणना को देखा जाए तो गत १० वर्षों में यह अत्यंत तेजी से घटी है। यदि यही रफ्तार रही तो कुछ दशकों बाद समाज विलुप्त हो जाएगा। जरूरत है इस विषय पर चिंतन की कि क्यों घट रही है, जनसंख्या और क्या करें हम? इस गंभीर विषय पर इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंधड़ा ने जानी है समाज के प्रमुख चिंतकों से उनकी राय। प्रस्तुत हैं विचारों के प्रमुख अंश -

घटती बालिकाओं की संख्या

निर्विवाद रूप से इस समस्या का कारण तो स्पष्ट है और वो है समाज में पुरुषों की तुलना में घटती स्त्री जाति की संख्या। यह एक ऐसी समस्या है कि यदि इसे आज गंभीरता से नहीं लिया गया तो माहेश्वरी समाज विलुप्ति के कगार पर खड़ा होगा। आज पूरा देश बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के नारे के साथ आगे बढ़ रहा है। इसका अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि हमें बेटी के जन्म को प्राथमिकता देनी है और उनकी संख्या बढ़ानी है। हमारी संस्कृति में पुत्र जन्म का मोह सबको होता है और मैं इस मोह को छोड़ने के लिए नहीं कह रहा परंतु मेरा मानना है कि पुत्री जन्म के मोह को भी बढ़ाना तो हमारे बसे में है। क्यूं न हम बेटियों के जन्म को बढ़ाकर, उन्हें पढ़ाकर और उन्हें स्वावलंबी बनाकर इस मजबूत माहेश्वरी समाज की नींव को और मजबूत करने का भगीरथ प्रयास अभी से शुरू कर दें। यदि आने वाली पीढ़ी की उत्पत्ति माहेश्वरी कुल से होगी तभी तो माहेश्वरी कुलवृक्ष आगे बढ़ेगा और ये तभी संभव होगा जब समाज में पुरुषों एवं महिलाओं की संख्या का संतुलन बना रहे। मेरा तो ये पूरे समाज से आग्रह है कि नवयुगल बेटियों को तो अवश्य जन्म दें। पूरा समाज एकजुट होकर यदि बेटियों की संख्या बढ़ाने का संकल्प ले तो हम अभी से इस समस्या को उठने से पहले ही उखाड़ फेंक सकते हैं। इस समस्या का उल्लेख सोमनाथ में आयोजित हमारी सभा में भी किया गया था और इस पर घोर चिंतन भी किया गया था। वहाँ पर हमने पूरे समाज के सामने इस समस्या को उजागर करके ये प्रस्ताव भी रखा कि जिस परिवार में दो से अधिक बेटियों का जन्म हो, उस भाग्यशाली परिवार को विशेष सम्मान से सम्मानित किया जाए।

– **त्रिभुवन काबरा**
प्रदेशाध्यक्ष गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा

महंगाई एक बड़ा कारण

जनसंख्या घटने के दो कारण है, एक शहरीकरण व दूसरा सबसे महत्वपूर्ण महंगाई। शहरों में परिवार समिति होते गए पहले हम दो हमारे दो की सोच थी, फिर हम दो हमारा एक और अब तो बच्चा हो ही नहीं, यह सोच बन गई है। पहले गांवों में जनसंख्या संतोषप्रद थी, लेकिन अब गांव वाले भी शहर में आ गए और गांव भी गांव नहीं बचे। इन सबका कारण महंगाई है, जिसके कारण मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए अधिक बच्चों का लालन-पालन कठिन कार्य है। ऐसी स्थिति में दो ही सूरत में जनसंख्या का घटना थम सकता है, या तो जापान की तरह हमारी सरकार जनसंख्या वृद्धि के लिए आर्थिक सहयोग दे या फिर महासभा। वैसे दोनों ही स्थिति कठिन हैं। इस मुद्दे पर वास्तव में गहन चिंतन की जरूरत है।

– **सुरेश राठी**, जोधपुर

चिंतन का विषय घटती जनसंख्या

माहेश्वरी समाज की घटती जनसंख्या समाज के लिए चिंतन व मनन का विषय है। समय रहते माहेश्वरी समाज को जागना होगा। भारतवर्ष की १३० करोड़ की आबादी वाले देश में हम अब १२ से लगभग ७-८ लाख पर आ गए हैं। देश की आबादी बढ़ रही है, हम घट रहे हैं, ऐसे में हमें सावधान होना होगा। अभी समय है, विचार करें व अपने समाज के अस्तित्व को बचाने के लिए गंभीर चिंतन करें, अन्यथा आने वाले ८०-१०० वर्षों में हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। इसके कारणों में तीन प्रमुख हैं, एक हमारे ३० प्रतिशत बच्चे देश के बाहर जा रहे हैं। हमारी बच्चियां उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान अंतरजातीय विवाह कर रही हैं। एक लड़की के अंतरजातीय विवाह से एक परिवार खत्म हो जाता है। दूसरा उच्च शिक्षित बच्चे व बच्चियां बड़ी-बड़ी नौकरी में लगे हुए हैं, लड़कियां अपने व्यक्तिगत विकास में बच्चों परिवार को बढ़ाने में बाधा समझती हैं। इसी प्रकार कुछ दंपति एक बच्चा पैदा करके अपने परिवार की इतिश्री समझ लेते हैं। अतः जरूरी है कि सामाजिक विशेषज्ञों से हमारी जाति की श्रेष्ठता का सर्वे करवाया जाए व युवा वर्ग को उनका महत्व समझाया जाए व समाज की घटती संख्या का प्रचार प्रसार किया जाए। जींस की परंपरा, संस्कार-संस्कृति की श्रेष्ठता का क्या महत्व है। इसका विश्लेषण भी करवाया जाए। इसका प्रचार-प्रसार किए जाए। बचपन से बच्चों में जातीय प्रेम की भावना भरी जाए। युवाओं व युवतियों को प्रोत्साहित किया जाए। लेखों, चर्चा, परिचर्चा, सामाजिक मंच के माध्यम से युवा पीढ़ी को समाज की ओर आकर्षित किया जाए। युवा पीढ़ी को समाज के मंच पर स्थान दें व सभाओं में उनकी परस्थिति को महत्वपूर्ण बनाकर बालकों को अपने धर्म के प्रति आकर्षित करें।

– **रामगोपाल मूंदड़ा**,
सूरत (गुजरात)
निवृत्तमान उपसभापति
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

विलुप्तता की ओर बढ़ता समाज

यह एक निर्विवाद सत्य है कि हमारे समाज की जनसंख्या का ग्राफ तेजी से नीचे की ओर जा रहा है। आज ५० से ६५ वर्ष की आयु वर्ग के ज्यादातर सदस्यों के ४-५ भाई बहन मिलेंगे लेकिन स्वयं के २ या ३ संतान मिलेंगे। और नीचे की आयु वर्ग के लोगों की मानसिकता तो अपने परिवार को एक संतान तक ही सीमित करने की हो गई है। यदि यही स्थिति कायम रही तो अगले ५०-६० वर्षों में हमारे समाज की स्थिति भी पारसी समुदाय जैसी हो जायेगी।

इसका मूल कारण समाज के सदस्यों की मानसिकता में परिवर्तन है। इसके मूल कारण २ हैं। पहला तो ७० के दशक में सरकार द्वारा जनसंख्या वृद्धि दर में कमी लाने हेतु देश के गांव-गांव तक परिवार नियोजन के संदेश का प्रचार जिसने लोगों को अपना परिवार २-३ संतान तक सीमित करने के लिये प्रोत्साहित किया एवं दूसरा, समाज में संयुक्त परिवार प्रथा का तेजी से विघटन जिसके कारण लोगों को कठिनाई महसूस होने लगी ज्यादा बच्चों के लालन पालन में।

अब मूल कारण मानसिकता में परिवर्तन है तो निवारण भी वही है। आज इस बात की जरूरत है कि हमारे सामाजिक संगठन-पुरुष या महिला-समाज के हर कार्यक्रम में घटती हुई जनसंख्या दर एवं इससे संभावित विलुप्तता की ओर बढ़ रहे समाज के खतरे की चर्चा करें। साथ ही समाज के पुरुष एवं महिला संगठन लोगों की परिवार नियोजन की मानसिकता बदलने की कोशिश करें। इसके अलावा संयुक्त परिवार प्रथा के हमारे समाज में पुन: प्रचलन की मानसिकता हो इसका प्रयास भी करना चाहिये जिससे अधिक संतान होने पर पालन की कठिनाई महसूस करने की मानसिक सोच में भी बदलाव आयेगा। हम यह भलीभांति जानते हैं कि संयुक्त परिवार में पहले ४-५ बच्चे भी कब बड़े हो जाते थे मां-बाप को मालूम भी नहीं पड़ता था और आज १-२ बच्चों को बड़ा करने में भी मां-बाप को अथक परिश्रम करना पड़ता है।

- मदनमोहन पेड़ीवाल
निवृत्तमान प्रदेशाध्यक्ष
गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा

विवाह संबंध में देरी एक कारण

हमारे समाज की दिन-प्रतिदिन आबादी घट रही है। यह एक बहुत बड़ी चिंता का विषय है। यदि घटती आबादी की रफ्तार इसी तरह चलती रही तो हमारा समाज अगले ५०-६० साल बाद शायद पारसी समाज की तरह ही रह जाएगा। मेरा ऐसा मानना है कि हमारे समाज की घटती आबादी का मुख्य कारण हमारे बच्चों का विवाह संबंध देर से होना है। हम सब जानते हैं कि आज से ३५-४० साल पहले लड़कियों के विवाह अधिकतम २०-२१ साल की उम्र तक हो जाया करते थे, जो आजकल कम से कम २५-२६ साल में होता है। इसका नतीजा यह है कि उनके बच्चे देरी से होते हैं। अंतर्जातीय विवाह दूसरा कारण है। लड़कियों का विवाह दूसरी जाति में होने से जनसंख्या पर असर होना स्वाभाविक ही है। लड़कियों का विवाह देर से होने का कारण उनकी शिक्षा तथा कॅरियर कहा जाता है। मैं उनकी शिक्षा के पक्ष में ही हूं, लेकिन लड़कियों का विवाह २२-२३ साल की उम्र में हो जाना चाहिए। हमारे समाज बंधुओं को भी सोच बदलनी होगी क्योंकि लड़कियों का एजुकेशन विवाह के पश्चात ससुराल में भी हो सकता है। इससे काफी हद तक अंतर्जातीय विवाह की समस्या कम हो जाएगी।

- श्यामसुंदर राठी
आणंद (गुजरात), माहेश्वरी महासभा
कार्यसमिति सदस्य

जनसंख्या वृद्धि हो पर चिंतन

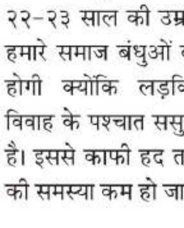

आज हमारा माहेश्वरी समाज किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। अन्य समाज बंधुओं की अपेक्षा माहेश्वरी बंधु धार्मिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक ही नहीं बल्कि बड़े-बड़े पदों पर भी आसीन हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है। हां, माहेश्वरी समाज की जनसंख्या निरंतर घटती जा रही है, जो सचमुच चिंता का विषय है। आधुनिकता की होड़ में आज की युवा-पीढ़ी एक-दो बच्चों पर ही परिवार पर विराम लगा देती है। अगर माहेश्वरी समाज की जनसंख्या के बढ़ोत्तरी के विषय में समाधान निकालना है तो युवा-पीढ़ी को समझाना होगा कि अगर आप आर्थिक और शारीरिक रूप से संपन्न हो तो परिवार को एक या दो बच्चों पर मत समेटिये। युवा-पीढ़ी की परिवार नियोजन की आधुनिक सोच का परिणाम उन्हें वृद्धावस्था में दिखाई देगा जब परिवार में बुआ-मौसी-चाचा-मामा के रिश्ते दिखाई ही नहीं देंगे। तब उन्हें उनके जीवन का तीसरा और चौथा पड़ाव अकेलेपन के कारण तन्हा और असहाय महसूस होगा। अपनों की कमी खलेगी और उस समय पछतावे के सिवाय उनके पास कोई चारा ना होगा। हमें सामाजिक और पारिवारिक परिवेश में भी युवाओं में दो से अधिक बच्चे पैदा करने के फायदों को बताना होगा। यह काम आसान नहीं पर इतना मुश्किल भी नहीं है। अच्छे व्यावसायिक सामाजिक वक्ताओं के मार्गदर्शन में युवा-पीढ़ी के लिए संवाद और संभाषण कार्यशालाएं आयोजित करनी होंगी जो उन्हें निकट भविष्य में परिवार-नियोजन से होने वाली समस्याओं को समझाकर परिवार-विस्तार के फायदों से अवगत कराए।

-**श्रीमती चंद्रा बूब**, जोधपुर

केवल जागरुकता ही समाधान

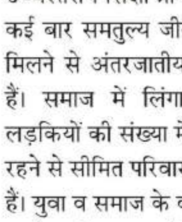

वर्तमान दौर में परिवेश में बहुत परिवर्तन आया है। न सिर्फ लड़के बल्कि समाज की लड़कियां भी हाईली एजुकेटेड हो रही हैं। कोई मेडिकल, इंजीनियरिंग तो कोई सीए जैसी उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। ऐसे में कई बार समतुल्य जीवनसाथी समाज में न मिलने से अंतरजातीय विवाह करना पड़ते हैं। समाज में लिंगानुपात भी गिरा है, लड़कियों की संख्या में कमी आई है। व्यस्त रहने से सीमित परिवार की ओर अग्रसर हुए हैं। युवा व समाज के वरिष्ठ वर्ग में एक ऐसी जनरेशन गेप उत्पन्न हो गया है कि वरिष्ठों की बात का वह प्रभाव नहीं रहा। इन स्थितियों

के कारण वास्तव में समाज की जनसंख्या खतरनाक ढंग से घट रही है। इसे विलुप्ति की ओर बढ़ता कदम कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, लेकिन इसका समाधान भी समझाइश के सिवा कोई अन्य है ही नहीं। जरूरत इस बात की है कि हम युवा वर्ग की काउंसलिंग कर उनमें जागरुकता उत्पन्न करें। अन्यथा यह स्थिति तो और भी भयावह ही होगी।

- विनोदकुमार माहेश्वरी, मोदीनगर, वरिष्ठ समाजसेवी

चिंतन का प्रमुख विषय बनाएं

माहेश्वरी समाज की कुल मौजूदा संख्या में होती कमी एक चिंतनीय विषय है। यह मनुष्य जाति का ऐसा अग्रणी समाज है जो हर विषय पर अग्रणी सोच रखता है। मेरा मानना है कि हमारे समाज में घटती जनसंख्या के विषय पर समाज के लोगों का ध्यान नहीं जा रहा है। यदि समाज जन इस विषय पर भी चिंतन करेंगे, ध्यान देंगे तो अग्रणी सोच रखने वाले समाजजन इस समस्या से अवश्य ही पार पा जाएंगे। समाज के सभी महिला-पुरुषों से मेरी अपील है कि इस विषय पर खुद भी सोचें व आने वाली पीढ़ी को भी जागरूक करें और इस चिंतनीय सोच पर चर्चा करे, ताकि समाज निरंतर कायम रह सके और प्रगति करता रहे।

- सीमा कोगटा, जिला महामंत्री भीलवाड़ा महिला संगठन

कारणों से ही मिलेगा समाधान

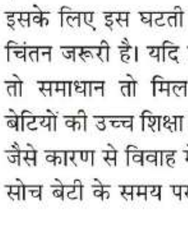

वास्तव में देखा जाए तो माहेश्वरी समाज की घटती जनसंख्या समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा है। इससे भविष्य में समाज का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। लेकिन सिर्फ इस भय को व्यक्त करने भर से कुछ नहीं होगा। इसके लिए इस घटती जनसंख्या के कारणों पर चिंतन जरूरी है। यदि इन पर हम केंद्रित हो गए तो समाधान तो मिल ही जाएगा। वर्तमान में बेटियों की उच्च शिक्षा व फिर कॅरियर की तलाश जैसे कारण से विवाह में देरी हो रही है। यहाँ हमें सोच बेटी के समय पर विवाह व बहू को पढ़ाने की बनानी होगी। इसके बाद लड़कों की चाह में हो रहे गर्भपात को भी जनजागृति से रोकना होगा। शिक्षा व कॅरियर के चक्कर में बच्चे समाज की मुख्यधारा से दूर जा रहे हैं, वे पारिवारिक उत्सवों तक में शामिल नहीं हो पाते। इससे संस्कारों का क्षरण हो रहा है। यह संस्कारों का क्षरण ही अंतरजातीय विवाह का कारण बन रहा है। ऐसे विवाह भी समाज की जनसंख्या को घटाने के प्रमुख कारण हैं। अतः कोशिश हो कि बच्चों को समय-समय पर सामाजिक कार्यक्रम में अवश्य लाएं।

सुरेश बिड़ला, भीलवाड़ा

यही तो दोहरा खतरा

यदि देखा जाए तो न सिर्फ माहेश्वरी समाज बल्कि अन्य समाज में भी हम दो हमारे दो और हम दो हमारे एक वाली सोच लगभग दो दशकों से गंभीर रूप से चली आ रही है। इसकी शुरुआत तो बच्चों की उच्च शिक्षा में आ रही आर्थिक परेशानियों के कारण हुई थी लेकिन फिर धीरे-धीरे यह एक फैशन ही बन गया।

याद रखें यह सोच गरीब परिवार की स्थितियों से उभरी हुई है। वे परिस्थितिवश ऐसा फैसला लेते हैं, लेकिन हमारे जैसे संपन्न समाज में तो यह विडंबना से कम नहीं है। हमें तो अपना व्यवसाय संभालने व उसके विस्तार के लिए अधिक सहयोगियों की आवश्यकता होती है। हमारे लिए बच्चों का लालन-पालन बड़ी समस्या नहीं है, फिर हमारी पीढ़ी भ्रमित क्यों हो रही है। ऐसा करके हम तो दोहरा खतरा मोल ले रहे हैं, एक तो विलुप्ति का और दूसरा व्यावसायिक जगत में अपने वर्चस्व को खोने का। इन स्थितियों को हमें अपने बच्चों को समझाना होगा कि उन्हें संतान के लालन-पालन में तो कुछ वर्षों की परेशानी ही आएगी लेकिन वे समय रहते सतर्क नहीं हुए तो वह क्षति होगी, जिसकी प्रतिपूर्ति संभव नहीं।

- दिलीप बाहेती भीलवाड़ा

खो रहे हैं रिश्तों की मिठास

सीमित परिवार की आधुनिकतम सोच तीन बच्चों से प्रारंभ हुई, फिर दो, एक व अब कई दंपतियों में एक भी नहीं तक जा पहुंची है। मानव जीवन का हम अर्थ ही खो बैठे हैं। इसका सही उद्देश्य समाज व देश को अपना योगदान देना है, पर हम क्या दे रहे हैं? ऐसा भविष्य जिसमें हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए बुआ, मौसी, मामा, काका, ताऊ तो ठीक भाई-बहन तक के रिश्ते भी दुर्लभ हो जाएंगे? जरा सोचें कितना भयानक होगा वह भविष्य जिसमें हमारी परेशानी में हमें सांत्वना के दो बोल बोलने वाला कोई अपना ही नहीं होगा। आज हम अपने पारिवारिक उत्सवों में जो आनंद महसूस करते हैं, वह अपने रिश्तों के कारण है, जो हमारे माता-पिता की पीढ़ी की देन है। हमारी संतान के यहां होने वाले आयोजनों में यह आनंद रहेगा? यदि हम अपनी भावी पीढ़ी को मात्र रिश्तों व अपनों का महत्व ही समझा पाए तो हमारा घटती जनसंख्या से बढ़ रहा विलुप्ति का खतरा स्वतः समाप्त ही हो जाएगा। आवश्यकता है कि समाज संगठन ऐसे आयोजन करें, जिससे हम इनके महत्व को समझ सकें।

दिनेश मालीवाल, भीलवाड़ा

कन्या का जन्मोत्सव मनाएं

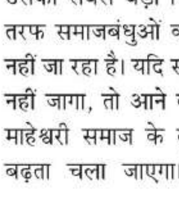

उद्यमशीला, संस्कारवान, बुद्धिमान, व्यावसायिक चातुर्य, दानशीलता जैसे गुणों से भरपूर हमारे इस श्रेष्ठ माहेश्वरी समाज के सामने आज उसकी आबादी उसकी सबसे बड़ी चिंता है। फिर भी इस तरफ समाजबंधुओं का ध्यान पूर्ण रूप से नहीं जा रहा है। यदि समाज का शीर्ष-नेतृत्व नहीं जागा, तो आने वाले कुछ ही वर्षों में माहेश्वरी समाज के लुप्त होने का खतरा बढ़ता चला जाएगा। अब हर माहेश्वरी

दम्पति को इस विषय में गहनता से सोचना चाहिए। जो आंकड़े सामने आ रहे हैं, उनसे स्पष्ट है कि आज जिस तरह से पारसी समाज लुप्त होने की कगार पर है, वैसी ही स्थिति माहेश्वरी समाज की ना हो जाए। इस चुनौती से निपटने का तरीका समाजबंधुओं को सोचना चाहिए। आज हालात यह हैं कि किसी घर में भाई नहीं है, तो किसी घर में बहन गैर मौजूद है। संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। संबंध विच्छेद की समस्या विकराल होती जा रही है। हम अपनी संस्कृति को खोते जा रहे हैं। हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा। हमें समाज बंधुओं और विशेषकर युवा पीढ़ी को इस गंभीर संकट से बेझिझक आगाह करना होगा। यही एक ऐसा समाज है जिसमें श्रेष्ठ उद्योगपति और गंभीर चिंतक एक ही मंच पर मौजूद रहते हैं। जिस तरह समाज में आज प्री-वेडिंग, शादी विवाह आदि उत्सव पर की जाने वाली फिजूलखर्ची आदि के विरोध में सकारात्मक कदम उठाए जा रहे हैं, उसी तरह माहेश्वरी समाज की घटती जनसंख्या पर भी समाज चिंतकों को गौर करना चाहिए। समाज में कुछ संस्थाएं अभी इसमें आगे आई हैं। अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन (पुष्कर), कन्या जन्म को प्रोत्साहित करने के लिए ३ कन्याओं के जन्मदाता को प्रोत्साहन राशि एवं फिक्स डिपॉजिट प्रदान करती हैं। समाज की घटती आबादी को देखते हुए हम दो और हमारे तीन का अवलंबन करें। हमारे पूर्वजों की तो ५-७-१० तक संताने होती थीं। गर्भपात एक जघन्य और क्रूर अपराध है। अतः ऐसा क्रूर कार्य कदापि ना करें। कन्या जन्म पर भी उत्सव मनाएं।

नारायणदास दम्माणी, बीकानेर (राजस्थान)

'कृति विकृत क्यूँ?'

जब कुम्हार सृजन के संकल्प को मन में रख ,
अपने ख्वाबों को हकीकत में बदलता है।
सोचता नहीं है क्या मिलेगा,
विश्वास रखता है सर्वोत्तम बनेगा।
आशा से उसको थपथपाता है।
अपने जीवन का उद्देश्य बनाता है।
अपने अविरल भावों से आकार देता है।
आँधी से लड़ने हेतु मजबूत बनाता है।
तन्मयता से भावों की गहराई टटोलता है।
यह कृति सर्वश्रेष्ठ बने हेतु उच्च विचारों से सींचता है।
कृति विकृत हो ये तो संभव नहीं।
फिर क्यों लोग यहाँ ऐसे भी होते हैं?
पहन अमन की पोशाक नापाक इरादे रखते हैं।
दुनिया को सीधे दिखते हैं पर राहों के काँटे होते हैं।
जुबाँ पर मीठे होते हैं पर तरकश में तीर रखते हैं।
क्यूँ दंगे-फसाद के सिलसिले यूँ ही चलते रहते हैं।
क्यूँ वृद्धाश्रम बनते रहते हैं।

- डॉ. शैलजा एन भट्टड़

बात चलती है

कवि अशोक भाटी, उज्जैन

नानी से सुनते
कथा कहानी
नई पुरानी
सबसे सुंदर
नानी का घर
माँ का मायका
गजब जायका
खाये चटकारे ले
अम्मा अब्बा
नानी के हाथ का
बना अचार मुरब्बा
नानी बनाये
नातिन की चुटिया
बिछा अंगने मे
पुरानी खटिया
नानी का चलता
खूब करिश्मा
नाना नानी का
एक ही चश्मा
यानि एक नजरिया
एक ही दृष्टि
जिससे देखी
सारी सृष्टि
दिया परीक्षा
अंतिम पेपर
और चल दिये
नानी के घर
नानी भी अंतर्यामी
मुंडेर कौवा
बोल रहा है
मन नानी का
डोल रहा है
सोच रही है लेटे-लेटे
आखिरी बस से
आ जाएंगे
बेटी के, बेटी बेटे
न तार न चिट्ठी
कोई फोन नही
थी मोबाइल की
रिंग टोन नहीं
फिर भी भविष्य
जता देती थी
नानी की हिचकी
सबकुछ
बता देती थी
आम इमली
सत्तू दलिया
अमरूद बैर से
लबालब डलिया
नाना पे दिखाती
मोहक झूठा तैश
मामा मामी को
सख्त निर्देश
सच में ...
नानी के घर
आनंद बहुत
आनंद क्या
परमानंद बहुत
अशोक भाटी ?
बात चलती है
मौसम नानी के यहां
जाने का भी है

आंकड़े बताते हैं कि प्रतिवर्ष विश्वभर में ६० लाख से अधिक लोग तंबाकू से रोगग्रस्त होते हैं और ६ लाख से अधिक मरते हैं। इस हकीकत को जानते हुए भी लोग इसका नशा करना बंद नहीं करते। यह बहुत बड़ा कटू सत्य है। आखिर क्यों हम स्वयं नशे की इस लत में मौत की ओर कदम बढ़ाते हैं।

▸▸ हरिप्रकाश राठी, जोधपुर

परिन्दा आसमान छूने में जब नाकाम हो जाये

अभी कुछ दिनों पहले, कार्यवश, मैं हमारे शहर की ऐसे भवन में गया जहां अनेक महत्वपूर्ण कार्यालय हैं। प्रथम तल के आधे मोड़ पर कुछ खाली स्थान था, वहां बैठे चार-पांच लोग गुटखा पाउच खोल-खोलकर खा रहे थे, बेतरतीब थूक भी रहे थे। मैंने गौर से दीवार को देखा, दीवार पूरी पिचकारियों से सटी थी, वस्तुतः इन पिचकारियों ने दीवार का मूल रंग ढंक लिया था। मैंने वहां बैठे लोगों से कहा, 'आप यह गुटखा क्यों लेते हैं, इसे छोड़ क्यों नहीं देते' तो उनमें से एक ने उत्तर दिया, 'अंकल! हें इसकी इतनी लत हो गई है कि हम बीवी छोड़ सकते हैं, गुटखा नहीं।' जो कुछ मैंने सुना वह आम न हो पर जो कुछ मैंने देखा ऐसे दृश्य देशभर में आम हैं। अन्य देशों में विशेषतः यूरोप व अमेरिका जैसे देशों में बेहतर सिविकसेंस के चलते यूं पिचकारियां न छूटती हो पर यदि विश्वभर के प्रति व्यक्ति तंबाकू प्रयोग के आंकड़े देखें तो तंबाकू उपभोग चाहे वो सिगरेट पीने से हो, बीड़ी-हुक्का-सिगार आदि के प्रयोग से हो, चूना-कत्था-तंबाकू के मिश्रण से हो अथवा अत्यंत सस्ती दरों पर उपलब्ध गुटखे-छैनी खाने की आदत से हो, कोई किसी से कम नहीं है। अगर कोई आदत वैश्विक मानसिकता में पसरी हो, यह जानते हुए भी कि यह एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य अवरोधक है तो यह तथ्य सचमुच महत्वपूर्ण है कि आखिर व्यक्ति नशा क्यों करता है? क्यों वह नशे के बिना नहीं रह सकता? क्यों नशा मुंह चढ़कर बोलता है? क्या सचमुच नशे से व्यक्ति को सुख मिलता है?

वास्तव में क्या है नशा

वस्तुतः नशा छलावा है, क्षणभर का भटकाव है। उस क्षणभर के रिलीफ, बॉडीलेसनेस की तरफ लपककर मनुष्य अपना सब कुछ गंवा बैठता है। नशा हमारे भीतर है। यह काम का नशा, कला का नशा, सामाजिक कार्य करने का नशा, राष्ट्रभक्ति का नशा आदि में भी रूपांतरित हो सकता है लेकिन आम व्यक्ति इन उच्चतर आयामों की तरफ नहीं बढ़ता अथवा फिर अनेक बार बढ़कर असफल हो जाता है तो सुपीरियर, उच्चतर न प्राप्त करने की कुंठा में इनफिरियर, निम्नतर की ओर लपकता है। किसी ने कहा भी है कि नशा अगर बोतल में होता तो बोतल न नाच उठती। नशे से बुरी नशे की लत है विशेषतः तंबाकू उत्पादों की लत तो बहुत बुरी है। ऐसे नशेड़ियों को नशे के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं, नशा उनका प्राणाधार बन जाता है। वे फिर तृप्त ही नहीं होते। एक बार नशे की ओर लपकते ही अंततः नशा उसे अपने नागपाश में ले लेता है। पहले से पैठी कुंठा तब और सघन हो उठती है जो उसे पुनः नशे की ओर धकेलती है। ऐसे नशेड़ियों पर कविवर हरिवंशराय बच्चन की पंक्तियां सटीक उतरती हैं- मुझे पिलाने को लाये हो इतनी थोड़ी सी हाला, मुझे दिखाने को लाये हो एक यही छिछला प्याला, इतनी पी लेने से अच्छा सागर की ले प्यास मरूं, सिंधुतृषा दी जिसने रचकर बिंदु बराबर मधुशाला'।

आंकड़े भयानक

आर्थिक, सामाजिक, कानूनी एवं स्वास्थ्य हजार्ड होते हुए भी विश्वभर में प्रतिवर्ष तंबाकू उत्पादों से रोगग्रस्त होने वाले लोगों की संख्या साठ लाख से ऊपर है। यह कितना विषादजन्य आंकड़ा है कि प्रतिवर्ष इन उत्पादों के प्रयोग से छः लाख से ऊपर लोग मरते है, इनमें से अधिकांश यानी ८० प्रतिशत अविकसित देशों के दरिद्र एवं निम्नवर्गीय लोग हैं। यह सभी लोग वैश्विक स्वास्थ्य सेवाओं,

अस्पतालों पर बेजा प्रभार नहीं तो और क्या हैं? आज विश्वभर में एक भी राष्ट्र ऐसा नहीं है जो तंबाकू उत्पादों के प्रयोग की कीमत नहीं चूका रहा। आज जितने लोग स्मोकिंग से मर रहे हैं, उतने ही लोग उस धुएं के प्रभाव से मर रहे हैं, जो पीने वाले वातावरण में छोड़ते हैं। तंबाकू एवं इससे संबंध उत्पादों के बेशुमार उपभोग के चलते आज विश्वभर में तंबाकू उत्पादों का गैरकानूनी कारोबार चरम पर है।

हृदय रोग जैसी बीमारी भी कारण

तंबाकू के बढ़ते प्रयोग से हृदय रोग भी विश्वभर में बढ़ता जा रहा है। एक आकलन के अनुसार विश्वभर के बारह प्रतिशत हृदय रोगों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारण तंबाकू का सेवन है। यह एक चौंकाने वाला आंकड़ा है। इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं वर्ल्ड हेल्थ फेडरेशन ने वर्ष ३१ मई २०१८' वर्ल्ड नो टोबाको डे' का थीम 'टोबाको ब्रेक्स हर्ट 'यानी' तंबाकू दिल तोड़ता है' रखा है। उच्च रक्तचाप के बाद तंबाकू का सेवन ही हृदय रोग का दूसरा अहम कारण है। तंबाकू उत्पादों का नित्य सेवन अन्य रोगों के साथ सीवीडी अर्थात हृदय रोग धमनियों में अवरोध का मुख्य कारण बन रहा है। इस जागृति को फैलाने हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन का विश्व भर में बैठकें, अयोजित करने का प्रस्ताव है। यहां मैं लिखना चाहूंगा कि वर्ष १९८७ प्रस्ताव पारित करने के बाद वर्ष १९८८ से प्रतिवर्ष 'विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व तंबाकू निषेध दिवस मना रहा है एवं हर वर्ष इसकी थीम भिन्न होती है यथा वर्ष २००६ का थीम 'तंबाकू एक छुपी मौत है' तथा वर्ष २००८ का 'टोबाको फ्री यूथ' यानी जवान लोगों को इसके चंगुल से छुड़ाना था क्योंकि इसका सर्वाधिक शिकार यही वर्ग है।

जनजागरण को बनाएं प्रभावी

आदत प्रयास से कहीं अधिक उसे समझने से छूटती है। समझाने के यह प्रयास अत्यंत मारक होने पर ही कारगर होंगे। मेरी एक कहानी 'चोट' जिस पर अनेक स्कूलों में नाटक मंचित हो चुके हैं का कथानक यूं था कि एक बच्चा पिता को नित्य शराब पीते हुए देखता है। नियम से उसका पिता सांझ ढले सड़क की ओर खुलती खिड़की के पास बैठकर नशा किया करता था। एक दिन उस बेटे को एक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेना था, उस दिन वह शराबी बनकर हाथ में बोटल लिये, बेतरतीब चाल से अपने पिता के पास गया तो पिता चीखा, 'यह क्या बन गया है रे?' उसने बताया, 'पापा! आज प्रतियोगिता में मैं शराबी बनूंगा, मुझे आपकी तरह शराबी बनना अच्छा लगता है।' पिता अपने बेटे को एक बहुत बड़ा आदमी बनाना चाहता था। उसका यह नशा शराब के नशे से भी चढ़कर था। लेकिन ऐसा सुनते ही शराबी पिता के औसान जाते रहे एवं उसने अपनी बोतल उठाकर दीवार पर दे मारी। उसके बाद उसने कभी शराब नहीं पी। तंबाकू निषेध के लिये भी हमारे विज्ञापन प्रभावी, मारक हों। तंबाकू उत्पादों के प्रयोग पर कठोर कर हो, सार्वजनिक प्रयोग पर पेनल्टी हो जैसा कि श्रीलंका में सार्वजनिक स्थान पर गुटखा खाने एवं सिगरेट पीने पर २५०० रुपए का दंड है तो समस्या से कुछ हद तक निजात मिल सकती है।

सभी देशवासियों को महेश नवमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

बनवारीलाल जाजू
अध्यक्ष- गीता भवन ट्रस्ट, इन्दौर
भू.पू. उपसभापति- अ.भा. माहेश्वरी महासभा

Indore Ice & Cold Storage Pvt. Ltd.

आलू एवं किराना वस्तुओं के संरक्षण हेतु आधुनिक कोल्ड स्टोरेज

Regd. Off. : 115-B, Industrial Estate, Indore (M.P.) - 452005
Cold Storage : A.B. Road, Post-Rajendra Nagar, Indore (M.P.) - 452012
Phone : Cold St. 2330810, 2330564, Regd. **Off.** : 2421014, 2421114
Residence : 2516540-41-42, **E-mail :** indoreice@yahoo.co.in

जनसेवा को ही बनाएं प्रभु सेवा

वर्तमान में पुरुषोत्तम मास चल रहा है। पुरुषोत्तम मास अर्थात आध्यात्म का मास, जिसमें सिर्फ धर्म की गंगा ही बहती है। इस समय कई स्थानों पर कथा, प्रवचन आदि का धार्मिक आयोजन हो रहा है और इस पर मुक्त हस्त से खर्च हो रहा है। ऐसे में विचारणीय है कि क्या आध्यात्म अर्थ सिर्फ यहीं तक सीमित है।

▸▸ओमप्रकाश मूंदड़ा, जीरापुर

जीवन में निरंतरता को बनाए रखने में कहीं न कही आध्यात्म की अपनी भूमिका है। यदि हम भारत वर्ष में हैं तो यह भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यह देश तो कहलाता ही है, देवभूमि। जहाँ श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध जैसे कितने ही अवतारी पुरुषों ने लाखों, करोड़ों सालों से जनमानस को धर्म और आध्यात्म की राह दिखाई है। इस देश की जीवन पद्धति ही धर्म, विज्ञान, और आध्यात्मक का मिला-जुला समावेशता।

हमारे कैलेंडर में भी आध्यात्म के सूत्र

समयकाल की गणना हेतु हमने जो हिंदी कैलेंडर अपनाया है, उसे देखें तो हर तीसरा दिन (तिथि) धर्म और त्याग की ओर प्रेरित करता दृष्टिगोचर होता है। एकादशी, प्रदोष, पूर्णिमा, अमावस्या का तो महत्व है ही। इसी प्रकार हमने संपूर्ण वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए हर तीसरे वर्ष एक मास की अधिक वृद्धि की, जो अधिमास, मलमास या पुरुषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। हालांकि चंद्र गति के अनुसार कालगणना में संतुलन बनाए रखने हेतु इसका हर तीसरे वर्ष समायोजन किया जाता है। किंतु इसमें भी हमने धर्म को धारण करने का मार्ग ढूंढलिया और संपूर्ण माह उस परम सत्ता को मान्यता देते हुए प्रभु स्मरण को समर्पित कर दिया।

आध्यात्मिक माह है अधिक मास

एक स्वघोषित नियम में हमने अपने को बांध लिया कि क्षुद्र जीवन की भागदौड़ और आपाधापी में जो हम लगे हुए हैं, उससे विरत होकर सिर्फ प्रभु ध्यान करेंगे, प्रभु स्मरण करेंगे जप करेंगे, तप करेंगे, त्याग करेंगे, सेवा करेंगे और परमार्थ करेंगे। सार यह है कि सर्वशक्तिमान की प्रेरणा से स्वहित त्यागकर परहित की ओर उन्मुख होंगे। गरीब, कमजोर, दबे-कुचले, दीन-हीन, दुःखी, सर्वहारा वर्ग की सेवा सुश्रुषा करेंगे। ताकि समाज से दुःख, अशिक्षा, गरीबी, तकलीफें दूर हों और ये दुनिया स्वर्ग की भाँति समरस, समभाव की जीती-जागती तस्वीर बन जाए।

जनकल्याण को बनाएं प्रभु सेवा

जिस प्रकार भौतिक जगत में दिन रात, सुख-दुःख, अच्छाई-बुराई, प्रकाश अंधकार का अस्तित्व है, उसी प्रकार इसी जगत में सक्षम-अक्षम, ताकतवर-कमजोर, ज्ञानी-अज्ञानी का भी अस्तित्व है। इनमें जो सक्षम, ताकतवर और ज्ञानी हैं उनका कर्तव्य बनता है कि समाज में अपने से कमजोर और दीन व्यक्ति को सहारा दें। उसकी सहायता करें। उसे समाज में सम्मान से जीने में उसकी मदद करें। स्वयं उस परम सत्ताधीश ने भी यही कहा है कि मैं लाचार, कमजोर, दीन-हीन और गरीबों में बसता हूँ। कमजोरों की सेवा करो, मेरी सेवा हो जाएगी। अर्थात नर सेवा ही नारायण सेवा है। रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे पुरोधा इसी ध्येय वाक्य का अनुसरण कर अमर हो चुके हैं।

धर्म शब्द का वास्तविक अर्थ समझें

किंतु वर्तमान के इस भौतिक युग में कुछ समर्थ लोग अज्ञानतावश इसके अर्थ का अनर्थ करने की ओर अग्रसर है। धर्म के मार्ग पर चलते हुए मानवता की सेवा के स्थान पर प्रभु नाम के बहाने अपनी ताकत, अपने अर्थ का निकृष्ट प्रदर्शन करने में लगे हैं। लक्ष्मी के इन पुजारियों में एक होड़, एक प्रतियोगिता सी शुरू हो गई है कि किसका आयोजन कितना बेहतर। ऐसे में सेवा भाव का मूल उद्देश्य तो कहीं खो गया है और आरंभ हो गया है, कभी न खत्म होने वाला अर्थ और ताकत का ये भौंडा प्रदर्शन जिसमें किसी का हित नहीं। न स्वयं का, न समाज का। किसी भी धार्मिक आयोजन के पार्श्व में पीड़ित मानवता की सेवा ही मूल उद्देश्य होना चाहिए।

पाठक मंच

'आपकी आवाज'

यदि आप समाज के किसी भी संगठन की कार्यप्रणाली से असंतुष्ट हैं, किसी योजना का लाभ आपको नहीं मिल पा रहा है या संगठनात्मक व्यवस्था में कमी को लेकर असंतुष्ट हैं, तो सप्रमाण जानकारी प्रेषित करें। हम आपकी बात जिम्मेदारों तक पहुँचाएंगे और उनके उत्तर प्राप्त होने पर उन्हें भी इस स्तंभ के माध्यम से प्रकाशित करेंगे।

क्या सामाजिक पत्रिकाएं व्यापार करती हैं?

६६ वर्ष पुरानी व लोकप्रिय सामाजिक पत्रिका "माहेश्वरी सेवक" के अप्रैल २०१८ के अंक में एक लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक है-क्या सामाजिक पत्रिकाएं व्यापार करती हैं? इस लेख को पढ़कर महासभा की कार्यप्रणाली पर दुःख हुआ। इस लेख की मुख्य विषय वस्तु कुछ शिकायतों पर आधारित है। प्रथम अपनी अभा माहेश्वरी महासभा की जहाँ भी अधिवेशन/मीटिंग होती है वहां पर वर्तमान में माहेश्वरी पत्रिका नागपुर के अलावा किसी अन्य सामाजिक/माहेश्वरी पत्रिका को समाचार संकलन हेतु आमंत्रित नहीं किया जा रहा है। क्या ऐसा करके अपनी महासभा समाज को पूरी जानकारी दे पाएगी? श्रद्धेय स्व. रामगोपाल माहेश्वरी के साथ ही पूर्व अध्यक्ष श्री बंशीलाल राठी, स्व. श्री चुन्नीलाल सोमानी, श्री रामपाल सोनी, श्री जोधराज लड्ढा सहित अनेक समाजसेवी बंधुओं ने भी माहेश्वरी समाज की अन्य पत्रिकाओं को सहयोग दिया और दे रहे हैं। तो अब कहीं कुछ गड़बड़ है? इस दुर्भाग्यपूर्ण समाचार पर मुझे बहुत ही दुःख है। समाज की सभी पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य माहेश्वरी समाज की भलाई, उन्नति व अपने समाज के विषय में आवश्यक जानकारी, समाचार देना ही है। अतः अन्य पत्रिकाओं से दुश्मनी नहीं होना चाहिए।

▸▸जयकिशन झंवर, कोलकाता

उज्ज्वल भविष्य के लिए करें, नियमित निवेश

उच्च शिक्षा

शादी

मकान

Start Early
+
Invest Regularly
=
CREATE WEALTH

स्वास्थ्य सुरक्षा

वृद्धावस्था सुरक्षा

Returns Sheet,
If investing ₹ 5000 per month

Period In years	Amount Invested	Maturity Amount, if return @		
		7%	12%	15%
10	6.00	8.70	11.61	13.93
15	9.00	15.94	25.22	33.84
20	12.00	26.19	49.95	75.79

Amount in Lakhs

ध्यान दें, किस तरह आपके द्वारा किया जा रहा छोटा निवेश एक बढ़ी धनराशि का रुप ले लेगा।

म्यूचअल फण्ड के जरिये Systematic Investment Plan (SIP) द्वारा निवेश कर धन अर्जित करें

Suresh Rathi

Since 1981

Wealth Creator thru Systematic Investment

EQUITIES • COMMODITIES • CURRENCY • DEPOSITORY • NBFC

Equities ~ Commodities ~ F&O ~ Currency Futures
Mutual Funds ~ IPOs ~ Internet Trading ~ Mobile Trading
Online Back Office ~ Mobile Back Office

SEBI REGN. NO.

BSE - INB 010976334	DERV - INF 010976334	NCDEX - MEM No.00898	IN-DP-CDSL-22-99
NSE - INB 230976335	F&O - INF 230976335	MCX - MEM No.35710	AMFI - ARN 20569

— Corporate Office —

Mahesh Hostel Complex, Opp. Bombay Motors, Chopasni Road, JODHPUR - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2797000 • 98287 54000 • info@sureshrathi.in • www.sureshrathi.com

— Registered Office —

11 & 12, 'A' Wing, 'Mithila' Apt., Opp. Jankalyan Bank, J.B.Nagar, Andheri (E), MUMBAI - 400 059
Tel. : 022-283 54000 • Fax : 022-28205533 • Mobile : 93224 54000 • E-mail : mumbai@sureshrathi.in

Mutual Fund Investments are subject to Market Risks. Please read the Scheme Information Document carefully before investing.

A PERSON WHO KEEPS PATIENCE IS SURE TO WIN IN SHARE MARKET

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जैसे जीवात्मा अपने जीवन में बाल, युवा और वृद्ध शरीर को प्रापत करती है वैसे ही मरणोपरांत वह नया शरीर प्राप्त करती है। आत्मा अजर-अमर है। केवल कर्म करना ही मनुष्य के वश में है, कर्म-फल नहीं। फिर क्यों मृत्यु भोज के नाम पर इतना दिखावा और आडंबर? क्या हम मूल संस्कृति से भटक रहे हैं?

क्या होता है मरने पर?

अभिषेक पसारी, इंदौर

संस्कार क्या है? सोलवा संस्कार-श्रोता धार्म-अंत्येष्टि संस्कार जिसका अर्थ है अंतिम संस्कार। शास्त्रों के अनुसार मनुष्य का देह त्याग करने के बाद उसका शरीर अग्नि को समर्पित करना। यह संस्कार है ना की बारह दिन उसका शोक, निवारण या अलग-अलग क्रियाएं करना। किसी शास्त्र में लिखा गया है। यदि गंभीरता से इसके बारे में अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि मानव ने धर्म और संस्कार के नाम पर मरणोपरांत की गतिविधियों का चयन किया है। प्राचीन काल में संचार एवं परिवहन के श्रेष्ठ विकल्प उपलब्ध नहीं थे। इसी कारणवश सवा महीने तक मृत्युजन के सगे-संबंधि परिवार वालों से मिलने, सूचना अनुसार मिलने आया करते थे। सहजता से जैसे-जैसे संचार एवं परिवहन में नए विकल्प आते गए यह अवधि बारह दिन, पांच दिन या तीन दिनों में समेट दी गई। सच तो है, जब विवाह जैसा प्रसंग भी एक या दो दिनों में समेट दिया गया है, तो फिर मरणोपरांत इस बारह दिन के ढोंग को बड़ावा क्यूं दिया जा रहा है? प्रियजनों की मौत उनके निकटतम परिवार के लिए हमेशा ही एक खालीपन बनाए रखेगी। कई बार मरने वाला इंसान जब देह और मन से कष्ट पा रहा होता है, तब उनके प्रियजन ईश्वर से उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं और यदि भगवान यह बात सुन ले, तो शोक करते हैं? आखिर इंसान चाहता क्या है? क्या यह दुनिया सिर्फ दिखावे की रह गयी है? स्वयं विचार कीजिए!

मृत्युभोज का क्या है रहस्य

जानवर तक अपने किसी साथी के मरने पर मिलकर वियोग प्रकट करते हैं परंतु मानव अपने साथी की मृत्यु पर मिलकर भोज करते हैं। मिठाइयाँ बनती हैं, १२ दिनों तक भोजन की व्यवस्थाएं जमाई जाती हैं। मूल परंपरा क्या थी? जो रिश्तेदार परिवार से मिलने आया करते थे वो कंद, मूल और सादी भोजन व्यवस्था अपने साथ लाया करते थे। दूर से आए गए रिश्तेदारों को मृत परिवार के पड़ोसी या उनके अन्य संबंधी भोजन के लिए अपने घर ले जाया करते थे। मृत व्यक्ति के घर बारह दिन तक भोजन नहीं बनता था। मरने वाले के परिवार वालों के लिए भी भोजन व्यवस्था अन्य सगे-संबंधी किया करते थे। १२वें दिन ब्राह्मण भोज के लिए घर में भोजन बनता था और ग्रहण किया जाता था। एक तरह से इसे शोक उठाना कहते थे। प्राचीनकाल में उपचार की व्यवस्था इतनी सुविधाजनक व सशक्त नहीं थी। अधिकांश घर मिट्टी एवं गोबर से बनते थे। हैजा, कालरा जैसी घातक बीमारियों का प्रकोप था। घर में मरने वाले व्यक्ति की देह से रोगाणु और विषाणु निकलते थे, जिससे गंभीर बीमारियों का खतरा रहता था। इसीलिए शुद्धि से पहले मृतक के परिजनों को स्पर्श करना या उनके घर जाना, या भोजन बनाना माना था। जिसे सूतक कहा जाता था। वह एक सुरक्षा कवच था। पक्के घरों में रहना, मृतक का अस्पताल में देह त्यागना और कई सारे सफाई के आधुनिक विकल्प होने के बावजूद हम किस डर के मारे, यह प्राचीन परंपरा निभा रहे हैं? स्वयं विचार कीजिए!

क्या यह सिर्फ दिखावा है

जिन परिवार वालों को प्रिय परिजनों के पास बैठने का, बातचीत करने का या उनकी मनोइच्छा पूर्ण करने का उनके जीते-जी समय नहीं मिलता था, अचानक उनके ना होने पर उसे शोक करने का समय कहां से मिल जाता है? यह डर कि उसे पाप ना लग जाए वह अपनी क्षमता अनुसार या कई बार उससे अधिक खर्च और गतिविधियाँ धर्म के नाम पर करता है। क्या डर से की गयी कोई भी क्रिया निष्पाप है? यदि मानव अपने प्रियजनों के साथ सुनहरा वक्त बिताता है, सुख-दुःख में साथी होता है और यादगार क्षण जीता है, तो फिर उसे अपने प्रियजनों की कमी कभी महसूस नहीं होती। इसे बैराग्य कहते हैं। मानव देह प्राप्त कर, यदि मनुष्य वैराग्य के पथ पर नहीं चल पाता, तो उसका जीवन विफल है। जन्म और मृत्यु दोनों ही सृष्टि की रचना है। तब फिर एक में सुखी और दूसरे में वियोग क्यूँ? स्वयं विचार कीजिए। मनुष्य अपने डर और समाज में प्रतिष्ठा दिखाने के लिए, क्या-क्या नहीं करता? अंतिम यात्रा भी इसी का एक अंश है। यदि मनुष्य डर के कारण नहीं प्रेम के कारण हर कार्य करे, तब उसे शांति मिलेगी नाकि मृत आत्मा को। आत्मा तो अमर है, शरीर त्यागते ही वस्त्र बदलने की तरह आत्मा नया शरीर धारण कर लेती है। शरीर एक दिखावा है। आत्मा सत्य है। देह मृत होता है नाकि आत्मा। मृतक की आत्मा की शांति के लिए किया जाने वाला कार्य उनके लिए नहीं, बल्कि खुद की शांति के लिए किया गया उपचार है।

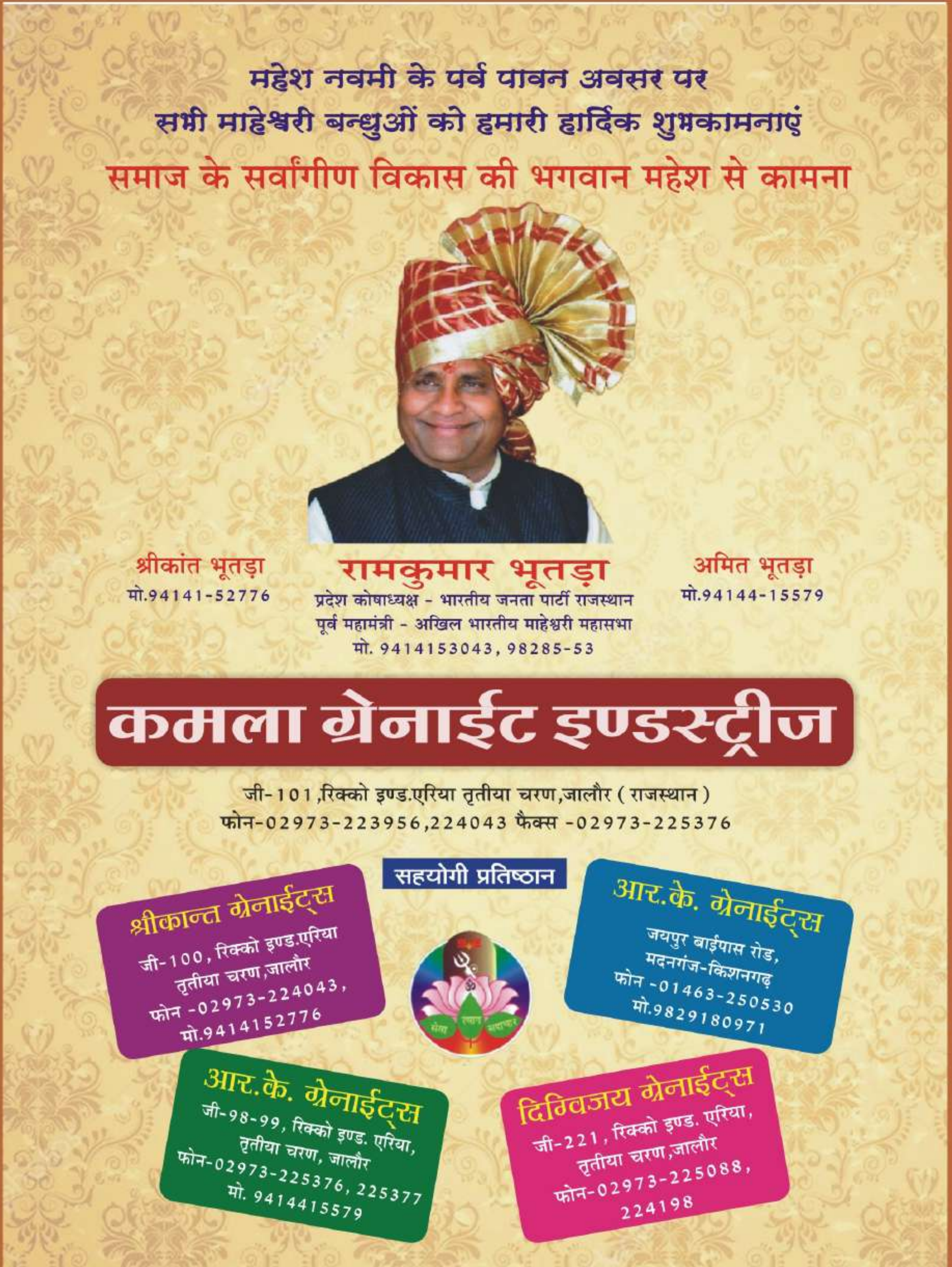

महेश नवमी के पर्व पावन अवसर पर
सभी माहेश्वरी बन्धुओं को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं
समाज के सर्वांगीण विकास की भगवान महेश से कामना
श्रीकांत भूतड़ा
मो.94141-52776
रामकुमार भूतड़ा
प्रदेश कोषाध्यक्ष - भारतीय जनता पार्टी राजस्थान
पूर्व महामंत्री - अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा
मो. 9414153043, 98285-53
अमित भूतड़ा
मो.94144-15579
कमला ग्रेनाईट इण्डस्ट्रीज
जी-101,रिक्को इण्ड.एरिया तृतीया चरण,जालौर (राजस्थान)
फोन-02973-223956,224043 फैक्स -02973-225376
सहयोगी प्रतिष्ठान
श्रीकान्त ग्रेनाईट्स
जी-100, रिक्को इण्ड.एरिया
तृतीया चरण,जालौर
फोन -02973-224043,
मो.9414152776
आर.के. ग्रेनाईट्स
जयपुर बाईपास रोड,
मदनगंज-किशनगढ़
फोन -01463-250530
मो.9829180971
आर.के. ग्रेनाईट्स
जी-98-99, रिक्को इण्ड. एरिया,
तृतीया चरण, जालौर
फोन-02973-225376, 225377
मो. 9414415579
दिग्विजय ग्रेनाईट्स
जी-221, रिक्को इण्ड. एरिया,
तृतीया चरण,जालौर
फोन-02973-225088,
224198

ग्रीष्म ऋतु का टॉनिक बेल फल

शीत ऋतु को बलवर्धक आहार लेने व ग्रीष्म को हल्का आहार लेने का मौसम माना जाता है। यही कारण है कि आयुर्वेद के विशिष्ट टॉनिक इस मौसम में नहीं लिए जाते, लेकिन भगवान शिव के प्रिय बिल्व के बेल फल ऐसे प्राकृतिक टॉनिक हैं, जो न सिर्फ इस मौसम में भी आपको तरोताजा रख सकते हैं, बल्कि मौसम की परेशानियों को भी कम कर वह राहत दे सकते हैं, जिससे आप इस मौसम का आनंद ले सकें।

» कैलाश लड्ढा, जोधपुर

गर्मी के मौसम में राहत देने वाले फलों में बेल का फल प्रकृति मां द्वारा दी गई किसी सौगात से कम नहीं है। कहा भी गया है 'रोगान बिलत्ति-भिनत्ति इति बिल्व।' अर्थात रोगों को नष्ट करने की क्षमता के कारण बेल को बिल्व कहा गया है। बेल सुनहरे पीले रंग का, कठोर छिलके वाला एक लाभदायक फल है। गर्मी में इसका सेवन विशेष रूप से लाभ पहुंचाता है। शांडिल्य, श्रीफल, सदाफल आदि इसी के नाम हैं। इसके गीले गूदे को बिल्व कर्कटी तथा सूखे गूदे को बेलगिरी कहते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग जहां इस फल के शरबत का सेवन कर गर्मी से राहत पा अपने आप को स्वस्थ्य बनाए रखते है वहीं भक्तगण इस फल को अपने आराध्य भगवान शिव को अर्पित कर संतुष्ट हाते हैं।

कैसे किया जाता है इसका प्रयोग

औषधीय प्रयोगों के लिए बेल का गूदा, बेलगिरी पत्ते, जड़ एवं छाल का चूर्ण आदि प्रयोग किया जाता है। चूर्ण बनाने के लिए कच्चे फल का प्रयोग किया जाता है वहीं अधपके फल का प्रयोग मुरब्बा तो पके फल का प्रयोग शरबत बनाकर किया जाता है। बेल व बिल्व पत्र के नाम से जाने जाना वाला यह स्वास्थ्यवर्धक फल उत्तम वायुनाशक, कफ-निस्सारक व जठराग्निवर्धक है। ये कृमि व दुर्गंध का नाश करते हैं। इनमें निहित उड़नशील तेल व इगेलिन, इगेलेनिन नामक क्षार-तत्त्व आदि औषधीय गुणों से भरपूर हैं। चतुर्मास में उत्पन्न होने वाले रोगों का प्रतिकार करने की क्षमता बिल्वपत्र में है।

कई कष्टप्रद रोगों में कारगर

बिल्वपत्र ज्वरनाशक, वेदनाहर, कृमिनाशक, संग्राही (मल को बांधकर लाने वाले) व सूजन उतारने वाले हैं। ये मूत्र के प्रमाण व मूत्रगत शर्करा को कम करते हैं। शरीर के सूक्ष्म मल का शोषण कर उसे मूत्र के द्वारा बाहर निकाल देते हैं। इससे शरीर की आभ्यंतर शुद्धि हो जाती है। बिल्वपत्र हृदय व मस्तिष्क को बल प्रदान करते हैं। शरीर को पुष्ट व सुडौल बनाते हैं। इनके सेवन से मन में सात्त्विकता आती है।

गर्मी के लिए तो वरदान

ये पेय गर्मी में जहां आपको राहत देते हैं, वहीं इनका सेवन शरीर के लिए लाभप्रद भी है। बेल में शरीर को ताकतवर रखने के गुणकारी तत्व हैं। इसके सेवन से कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि यह रोगों को दूर भगाकर नई स्फूर्ति प्रदान करता है। गर्मी में लू लगने पर इस फल का शर्बत पीने से शीघ्र आराम मिलता है। तपते शरीर की गर्मी भी दूर होती है। आंख में दर्द होने पर बेल के पत्तों की लुगदी आंख पर बाँधने से काफी आराम मिलता है। कई बार गर्मी में आंखें लाल-लाल हो जाती हैं तथा जलने लग जाती हैं। ऐसी स्थिति में बेल के पत्तों का रस एक-एक बूंद आंख में डालना चाहिए। लाली व जलन शीघ्र दूर हो जाएगी।

बिल्व एक लाभ अनेक

पुराने से पुराने आँव रोग से छुटकारा पाने के लिए रोज अधकच्चे बेलफल का सेवन करें। पके बेल में चिपचिपापन होता है इसलिए यह डायरिया रोग में काफी लाभप्रद है। यह फल पाचक होने के साथ-साथ बलवर्द्धक भी है। पके फल के सेवन से वात-कफ का शमन होता है। बच्चों के पेट में कीड़े हो तो इस फल के पत्तों का अर्क निकालकर पिलाना चाहिए। बेल की छाल का काढ़ा पीने से अतिसार रोग में राहत मिलती है। इसके पके फल को शहद व मिश्री के साथ चाटने से शरीर के खून का रंग साफ होता है, खून में भी वृद्धि होती है। बेल के गूदे को खांड के साथ खाने से संग्रहणी रोग में राहत मिलती है। पके बेल का शर्बत पीने से पेट साफ रहता है। बेल का मुरब्बा शरीर की शक्ति बढ़ाता है तथा सभी उदर विकारों से छुटकारा भी दिलाता है। गर्मी में गर्भवती का जी मचलाने लगे तो बेल और सौंठ का काढ़ा दो चम्मच पिलाना चाहिए। पके बेल के गूदे में काली मिर्च, सेंधा नमक मिलाकर खाने से आवाज भी सुरीली होती है। छोटे बच्चों को रोज एक चम्मच पका बेल खिलाने से शरीर की हड्डियाँ मजबूत होती हैं।

SHREE MAHARISHI VIDYA MANDIR

(RUN BY GURUKUL SHIKSHA SANSTHA)

Girish Chandak
President
Gurukul Shiksha Sanstha

FACILITIES OFFERED :

- Professional Staff Committed to quality child care.
- Pleasant and friendly environment
- Appropriate Teacher- Student ratio.
- Thematic Classrooms.
- Activity Oriented Teaching.
- Focus on gross motor skills and language development.
- Daily feed back to parents through sms.
- Digital Classroom.

Main Building : Datala Road, Chandrapur. Mob.: 7350118899 (P.H. To Std. XII)

Br. I : Behind Sai Mandir, Civil Lines, Chandrapur. Mob.: 8975665538 (P.H. To KG II)

Br. II : Ganesh Bhavan, Hanuman Mandir, Tukum, Chandrapur. Mob.: 7776098765 (P.H. To KG II)

आज की युवा पीढ़ी पूर्णतः कॅरियर ओरिएंटेड हो गई है। उनके लिए कॅरियर से बढ़कर कुछ नहीं। इसी सोच का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है, विवाह पर। विवाह की आयु अब इतनी बढ़ने लग गई है कि जो चिकित्सा शास्त्र के अनुसार भी उचित नहीं है। आईय देखें कॅरियर की दौड़ में कितना कुछ खो रहा है, युवा वर्ग।

श्यामसुंदर टावरी, अमरावती

जीवन की बर्बादी देरी से शादी

विवाह क्या है? विवाह एक संस्कार है, दो युवा दिलों का मिलना है, दो आत्माओं का पवित्र संगम है। दो परिवार आत्मीयता से निकट से जुड़ते हैं। विवाह संबंध तय करने का कार्य समाज की विवाह संस्था करती है। जिस जाति की विवाह संस्था जितनी सशक्त होगी, उस समाज का संगठन उतना ही मजबूत होगा। एकता, अखंडता, समरसता से समाज का विकास तेजी से होगा। परंपरा और संस्कृति का जतन करते हुए विधि-विधान के साथ वैवाहिक समारोह का आयोजन एक मांगलिक कार्य है। विवाह संबंध से मानव मंदिर को एक सशक्त धर्म का नीति युक्त अधिष्ठान मिलता है। विवाह का उद्देश्य वंश वेल वृद्धि करना और गृहस्थ जीवन को आनंदमय बनाना है। विवाहित जीवन में यौन संबंधों का उतना ही महत्व है, जितना शरीर के लिए भोजन का। यौन संबंध से दो भिन्न लिंगों में आकर्षण उत्पन्न होता है। यौन संबंधों के सही संपादन से ही दंपत्तियों में पूर्णता प्राप्त होती है और उसकी कोमल अनुभूति एक-दूसरे को बांधे रखती है। मानव और अन्य प्राणियों में यही मुख्य अंतर है। यौन संबंध के लिए हमउम्र साथी की आवश्यकता होती है। विवाह संबंध से एक मर्यादा निश्चित होती है।

इतिहास के आइने में विवाह की उम्र

माहेश्वरी सामाजिक कॉन्फ्रेंस सन् १९८४ में विवाह के लिए लड़की की आयु १४ वर्ष तथा लड़के की आयु १८ वर्ष तय की गई थी। बाल विवाह का निषेध किया था। तथापि ९/१० वर्ष की लड़की का विवाह कर दिया जाता था। १५/२० वर्ष की कन्या का विवाह ५०/५५ वर्ष के अधेड़ या विधुर के साथ होता था। कन्या विक्रय तथा बहुविवाह की प्रथा थी, लेकिन विधवा का पुनर्विवाह मंजूर नहीं था। अतः अबोध बालिकाओं को विधवा हो जाने पर घर की नौकरानी बनकर रहना पड़ता था। सन् १९०८ में अमरावती में संपन्न माहेश्वरी महासभा के अधिवेशन में इन विषयों पर चिंतन होकर जमकर विरोध हुआ। कलकत्ता में संपन्न १९२२ के अधिवेशन में लड़की का विवाह रजोदर्शन के पूर्व ना हो, हो गया हो तो मुकलावा नहीं देने का प्रस्ताव पारित हुआ। पंढरपुर में सन १९२७ के अधिवेशन में बाल, वृद्ध, बेमेल विवाह में समाज के प्रतिबंधक दल द्वारा विरोध स्वरूप पीकेटिंग का आंदोलन शुरू हुआ। देवलगांव में संपन्न सन १९३१ के अधिवेशन में विधवा चाहे तो पुनर्विवाह की अनुमति दी गई।

फिर बनवाया कानून

सन् १८९४ में सहारनपुर कॉन्फ्रेंस में लड़के-लड़कियों की उम्र तय करने का सिलसिला शुरू हो गया था। अजमेर के दीवान बहादुर श्री हरिविलास शारदा (सारडा) ने बाल विवाह का विरोध तभी से शुरू किया था। अतः उन्होंने गहन अध्ययन उपरांत इम्पीरियल लेजीसलेटिव असेंबली देहली के सदस्य के नाते शारदा एक्ट का मसौदा ३ जून १९२८ को पेश किया। इसे असेंबली में २३ सितंबर १९२९ को पारित किया गया, छह महीने बाद शारदा एक्ट अमल में आया। उसके बाद दो बार इसमें संशोधन किया गया है। वर्तमान में लड़की की उम्र कम से कम १८ और लड़के की कम से कम २१ वर्ष तय की गई है। उसी के साथ समाज ने निर्णय लिया कि कन्या के मां-बाप लड़के वालों से रुपया नहीं लेंगे। बिना कारण सगाई तोड़ना नहीं, वर से वधू की आयु ४ वर्ष कम हो तथा वृद्ध विवाह ना करने का निर्णय लिया। अत्यंत खेद की बात है कि सौ वर्ष पुराने प्रस्ताव आज पुनः प्रासंगिक होते जा रहे हैं।

वर्तमान में अधिक उम्र ही बनी समस्या

वर्तमान में प्रगतिशील जीवनशैली में कॅरियर और व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है। इसमें विवाह की उम्र गैर महत्वपूर्ण बनती जा रही है। यद्यपि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह उचित नहीं। लिविंग टू गेदर परिस्थितियों की मांग के साथ विवाह संस्था से विश्वास उठते जा रहा है। "छोटा दूल्हा बड़ी दुल्हन" मनोविज्ञान तौर पर सोच में भारी परिवर्तन आ रहा है। साथी की आवश्यकता प्रमुख है, पति की महत्ता कम होने लगी है। सौंदर्य और सौष्ठव के प्रति जागरूकता के कारण महिलाएं बड़ी उम्र को छिपाने में समर्थ हो गई हैं। बढ़ती उम्र के साथ-साथ परिपक्वता और स्वभाव में ठहराव आने लगा है। २५ वर्ष से ऊपर की लड़कियां और ३० वर्ष के ऊपर के लड़कों की संख्या में सतत वृद्धि हो रही है। अतः बड़ी आयु में मतभिन्नता बढ़ती जा रही है।

तलाक व घटती जनसंख्या

विलंब से विवाह करने वाले अधिकांशतः एक ही बच्चा चाहते हैं। जिस कारण इस दशक में माहेश्वरियों की जनसंख्या १६ लाख से ८ लाख पर आ गई है। यही क्रम जारी रहा और अंतरजातीय विवाह होते रहे तो सन् २०४०-५० में माहेश्वरी ढूंढना पड़ेगा। जो दो बच्चे चाहते हैं वहां भी जनसंख्या स्थिर हो जाएगी। माहेश्वरी जाति का अस्तित्व कायम रखना है, तो हम दो हमारे तीन पर आना होगा। बढ़ी उम्र से लड़के-लड़कियां

परिपक्व हो जाते हैं। आपस सामंजस्य तालमेल करने में अहम आड़े आता है। समझने, सुनने और समायोजन करने की आयु निकल जाती है। दिन-ब-दिन च्वाइस कम होते जाने से समाज के बाहर विवाह हो रहे हैं। हर चीज का एक समय होता है, यह प्रकृति का नियम है। विज्ञान और वैद्यकीय विशेषज्ञ भी कहते हैं कि अधिक उम्र में शादी शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करती है। अधिक उम्र में संतान होने या ना होने की समस्या पैदा हो जाती है। देर से शादी से यौन अपराध को बढ़ावा मिलता है। उम्र बढ़ने से मां बनने में परेशानी तो आती है, दादा-दादी, नाना-नानी बनने की इच्छा भी अधूरी रह सकती है।

सही उम्र में विवाह ही उचित

आज विवाह की बढ़ती आयु को समाज संगठन ने अत्यंत गंभीरता से लिया है। इस विषय पर समाजजन संगठन चिंतित हैं। जगह-जगह चर्चा सत्र लेकर प्रबोधन किया जा रहा है। बढ़ती उम्र के दुष्परिणामों से बचने के लिए लड़की का विवाह १८ से २१ वर्ष की उम्र में (या फर्स्ट डिग्री लेवल की पढ़ाई तक) तथा लड़के का विवाह २१ से २५ वर्ष की उम्र में होना चाहिए। इस पर सभी सहमत हैं। विवाह के उपरांत भी पढ़ाई ससुराल में जारी रह सकती है, ऐसे अनेक उदाहरण है। अब तो ससुराल वाले भी बहू को पढ़ाना चाहते हैं, प्रोत्साहन देते हैं। याद रखें शत-प्रतिशत अपनी पसंद का दूल्हा-दुल्हन मिलना कभी संभव नहीं। उम्र अधिक होने के बाद समझौता करना पड़ता है, आज ही इस बात को समझ लेंगे तो दाम्पत्य जीवन की अवधि बढ़ जाएगी। सामान्यतः लड़की १८ वर्ष और लड़का २१ वर्ष का हो, तो ही शादी कर देने का मन बना लें। बेटी उच्च शिक्षा ले रही हो तो प्रथम स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण होने तक राह देख सकते हैं। जन्म से मृत्यु तक सीखना ही है। बेटी को नहीं बहू को पढ़ाओ, चट मंगनी, पट ब्याह, झट तलाक में चिंतनीय वृद्धि हो रही है। अतः सावधान हो जाओ।

With Best Compliments
From

BALAJI PULSES

Hemant Maheshwari (Radheshyam)
7354144111 / 9425244267

Pranay Maheshwari
7773044111 / 9406096405

PRANAY MAHESHWARI

Durg Balod Road, Chandkhuri, Durg (C.G.)
Ph. : 0788-2625220
Email : balajipulses@gmail.com

महेश नवमी की हार्दिक शुभकामनाएं

Smt. Prakash Mundhra

Ram Gopal Mundhra

Mundhra Lighting Centre

Suppliers to State Electricity Boards, Power Corporations
& Thermal Power Plants and Railways
END SEAL Heat Shrinkable Cable Jointing Kits
11kv to 66 kv line materials
Since 1975

Corporate office
:Mundhra Chambers" # 87, 21st Main Road, Banashankari 2nd Stage,
Near BDA Complex, Bangalore - 560070
Phone : 26713802, 41222140, M.P : 093418 23353
Email : mundhralighting@gmail.com

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

लोकतंत्र री आवाज

खम्मा घणी सा हुक्म ... बात कर रियाँ हाँ आपा आज केंद्र सरकार री ...जो करीब चार साल पार कर पांचवे साल में प्रवेश कर रही है हुक्म अर्ज करणी चाहूं कि इण चार साल रो आपा मूल्यांकन करा की काईं चुनियोड़ा नेता लोकतंत्र री उण मर्यादाओं रो ध्यान रखे जो नेताओं री सता ने करण में मजूबत है इनों उत्तर है "नहीं" हुक्म इण देश मे जो भी सत्ता में आवे वो बड़ा बड़ा वादा करने आवे और कुर्सी मिलते ही आम जनता ने भूल जावे ... जण जनता रे दिमाग मे याँ ही बात आवे की शायद आपा विवेक ने खूंटी पर टांग ने वोट कर आया क्योंकि अबार कर्नाटक में जो तमाशो हुयो की सबसूं बड़ो दल फड़फड़ा रियो है और दूसरा छोटा दल मिल ने सत्ता बणाली ...

हुक्म पूरे देश री हालत देख ने याँ ही समझ मे आवे कि विपक्ष जो भी दल हुवे वाणों एक ही लक्ष्य की सरकार ने काम नही करण देवणो.. पेली चुनाव हुवता पांच साल शांति रेवती अब तो यूँ लागे हर छः महीने देश रे कोई राज्य में चुनाव या दल-बदल हुवता ही रेव्हे...

कुर्सी और पद रो लालच एक नापाक खेल बण गयो जिनमें आम जनता पिस री है पार्टी सत्ता में आवण वास्ते विपक्षी पार्टी पर दोषारोपण कर सता में आवे एक आम आदमी जो.. टैक्सपेयर, मतदाता रे नाते सरकार ने यों पुछणी चाह्वे कि पेट्रोल रा भाव आसमान पर चढ़ ने रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड तोड़ रियो है सरकार जो सत्ता में आवण सुं पेला लंबा चौड़ा भाषण देने सरकार ने निक्कमा कह ने वोट मांग री थी कि आप अगर म्हाणी सता आएगी तो वारा- न्यारा कर देवेला। पेट्रोल रा भाव न्यूनतम कर देवाला... भोली जनता रे साथे तो मानों खिलवाड़ कर दियो । अब आप ही बताओ याँ ही सब हुवता रेवेला तो देश तो तमाशो नही तो और कांई हुवैला ..

सही मायने में देखियों जावे तो इण दल-बदल पार्टी में लोकतंत्र रो तमाशो हो रियो है।

आज नहीं तो काल सरकार ने जनता री आवाज रो जवाब देणों ही पड़ेला ...

मुलाहिज़ा फरमाइये

बड़ी अजीब सी बादशाही है,
दोस्तों के प्यार में ।
ना उन्होंने कभी कैद में रखा,
न हम कभी फरार हो पाए..

तारीखों में .. धीरे धीरे .. व्यतीत हो रहे है हम....!!
आज है ... लेकिन हर क्षण..अतीत हो रहे है हम...!!

मुझे क्या? हमें क्या? तुम्हें क्या...!!!
और बस, रिश्ते धीरे धीरे खत्म...!!!

ऐसा लगता है नाराज़गी बाक़ी है अभी,
हाथ थामा है मगर, उसने हाथ दबाया नहीं.

बहुत मुश्किल काम है सभी रिश्तों को खुश रखना..!!
चिराग जलाते ही.. अंधेरे रूठ जाते है..!!

जिन्दगी को खुला छोड़ दो जीने के लिए .....
बहुत सम्भाल के रखी चीज़ वक्त पर नहीं मिलती

वो रम जाती है.....फकीरों में भी अक्सर.........
'दोस्ती' किसी दौलतमंद की
जायदाद नही होती.....!

दो शब्दों में कहे देता हूँ, इस दुनिया की कहानी...!
भोले को सब मूर्ख समझें और धूर्त को ज्ञानी...!!

▸▸ ज्योत्सना कोठारी, मेरठ

लड़के-लड़कियों के रिश्ते ढूँढना हुआ बेहद आसान
हमारी वेबसाइट है
इसका सही समाधान

High Status,
Middle Status,
NRI, Manglik, Non Manglik,
Biodata MBA, MCA, Doctor,
Engg. Biodata, CA, CS,
ICWA Biodata

Graduate,
Post Graduate Biodata
Professional Biodata
Businessman Biodata
Service Class Biodata

माहेश्वरी समाज के लिए
60 हजार से अधिक

जैन समाज के लिए
70 हजार से अधिक

अग्रवाल समाज के लिए
1 लाख से अधिक

Registration Free

Website
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agrawal2agrawal.org

Registration Free

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110060
Phones :011-25746867, M. : 093129 46867

खुश रहें... खुश रखें...

अपने मूल पर टिके रहे, जड़ों से नहीं कटे

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

हर मनुष्य के दो जन्म हुए हैं, एक शरीर के तल पर, दूसरे आत्मा के तल पर। हमने जन्म देने वाली स्त्री को माँ और जिस धरती के खंड पर जन्म लिया गया उसे मातृभूमि कहा है। अपने मूल पर टिके रहना, अपनी जड़ों से न कटना यह एक नैतिक दायित्व, मूल्य है। वर्षों में सब कुछ बदल जाता है, मूल्य नहीं बदलते। मातृभूमि के साथ-साथ आपका परिवार भी आपकी जड़ें हैं, आपकी पहचान है, इसलिए प्रेमपूर्वक उससे जुड़े रहें।

अपनी मातृभूमि से प्रेम करने के भाव का अर्थ है, जहां हमारा जन्म हुआ, उससे जुड़े रहना। आध्यात्मिक भाषा में यूं कहा जाए कि आत्मा के तल पर जन्म हुआ है तो आत्मा से जुड़े रहें, अपने भीतर उतरें, थोड़ें स्वयं के निकट बैठें। सारी दुनिया घूमें परंतु अपनी मातृभूमि, अपने परिवार को नहीं भूलें। वैसे ही शरीर पर टिकें, संसार में घूमें पर अपनी आत्मा को विस्मृत नहीं करें।

अमीर खुसरो ने फारसी में नुह सिपिहर नामक मस्नवी में लिखा है कि हिंदुस्तान मेरी मातृभूमि है। इसलिए इससे मुझे बहुत प्रेम है। हजरत पैगंबर ने भी फरमाया है, देश प्रेम धार्मिक निष्ठा का ही अंग है। अमीर खुसरो तो यहां तक लिख गए कि दिल्ली हजरते देहली है। देहली की खूबसरती यदि मक्का शरीफ सुन ले तो वह भी आदरपूर्वक हिंदुस्तान की तरफ अपना रुख मोड़ ले। इस्लामी दीन में मक्का शरीफ का रुतबा दुनिया जानती है। इसकी तुलना दिल्ली से करने की हिम्मत अमीर खुसरो ने इसलिए की थी कि वे मातृभूमि के प्रेम को दर्शाना चाहते थे।

भारत में इस्लाम की नींव मोहम्मद गौरी ने डाली थी। कई मुसलमान शासकों ने भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक दृश्य को तहस-नहस किया तो कई मुस्लिम बादशाहों ने इसे संवारा भी। इसीलिए बहुत कुछ गुजर जाता है पर जो रह जाता है, वह है मूल्य। खुसरो जैसे लोग उन्हीं मूल्यों पर अपनी कलम चलाते हैं। मातृभूमि से प्रेम का एक ऐसा भी अर्थ है कि अपने भीतर उतरो, यहीं खुदा है, ईश्वर है और वह सब कुछ है जैसा हम होना चाहते हैं।

खाना-खजाना

गट्टे का अचार

सामग्री- आधा किलो कैरी, नमक-८० ग्राम, कलौंजी आधी चम्मच, लौंग ८-१०, हींग आधा चम्मच, मैथीदाना पावडर आधा चम्मच, सौंफ पावडर ३० ग्राम, हल्दी, १ चम्मच राई दाल, ५० ग्राम मिर्च पावडर, ५० ग्राम तेजपान, तेल ३५० ग्राम

सामग्री- (गट्टे के लिए) बेसन आधा किलो, नमक स्वादानुसार, मिर्च २ चम्मच, हींग चुटकीभर, अचार का बना हुआ मसाला-२ चम्मच, मोयन के लिए तेल १ चम्मच

विधि- गट्टे की सारी सामग्री मिक्स करके जरूरत अनुसार पानी डालकर मध्यम कड़ा आटा गूंथ लें। अब उसके लंबे-लंबे रोल बनाकर उबलते पानी में पकाएं। पकने के बाद उसके छोटे-छोटे पीस कर लें व थोड़े से तेल में तल लें।

अचार के लिए- कैरी को किस लें, तेल गर्म करके उसमें सबसे पहले कलौंजी काली मिर्च डालें, कालीमिर्च पकने पर हींग व मैथी दाना डालें। गैस सिम करके उसमें नमक डालें। गैस बंद कर दें फिर सौंफ पावडर व राई दाल मिलाएं। आखिर में मिर्च पावडर मिलाकर अच्छे से मिक्स करें। पूरा ठंडा होने पर कैरी मिला लें। अब उस कैरी के अचार में तले हुए गट्टे डालें व अच्छे से मिक्स करें। ये अचार फ्रीज में १२ से १५ दिन टिकता है।

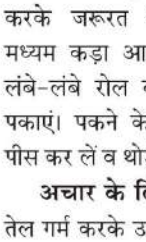

▸▸ पुनम राठी, नागपुर
9970057423

नारी के सतीत्व या आधुनिक दौर में जिसे प्रेम कहा जा सकता है, उसमें वह शक्ति है, जो दुर्भाग्य को भी बदलकर सौभाग्य बना सकती है। दुर्भाय पर सौभाग्य की विजय का पर्व ही है वट सावित्री व्रत। आईये देखें कब और कैसे मनाएं इसे?

▸▸ टीम SMT

सतीत्व का विजय पर्व वट सावित्री व्रत

वट सावित्री व्रत सौभाग्य और संतान सुख प्रदान करने वाला व्रत है। भारतीय संस्कृति में यह त्योहार आदर्श नारीत्व का प्रतीक बन चुका है। इस व्रत की तिथि को लेकर भिन्न मत हैं। स्कंद पुराण तथा भविष्योत्तर पुराण के अनुसार ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को यह व्रत करने का विधान है, वहीं निर्णयामृत आदि के अनुसार ज्येष्ठ मास की अमावस्या को व्रत करने की बात कही गई है। तिथियों में भिन्नता होते हुए भी व्रत का उद्देश्य एक ही है, सौभाग्य की वृद्धि और पतिव्रत के संस्कारों को आत्मसात करना। विष्णु उपासक इस व्रत को पूर्णिमा को करना ज्यादा हितकर मानते हैं।

इस व्रत में वट क्यों महत्वपूर्ण

वट सावित्री व्रत में वट और सावित्री दोनों का विशिष्ट महत्व माना गया है। पीपल की तरह वट या बरगद के पेड़ का भी विशेष महत्व है। पाराशर मुनि के अनुसार ''वट मूले तपोवासा''। पुराणों में स्पष्ट किया गया है कि वट में ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों का वास है। इसके नीचे बैठकर पूजन, व्रत कथा आदि सुनने से मनोकामना पूरी होती है। वट वृक्ष अपनी विशालता के लिए भी प्रसिद्ध है। वटवृक्ष दीर्घायु व अमरत्व बोध के प्रतीक के नाते भी स्वीकार किया जाता है। वट वृक्ष ज्ञान व निर्वाण का भी प्रतीक है। भगवान बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसलिए वट वृक्ष को पति की दीर्घायु के लिए पूजना इस व्रत का अंग बना।

क्या है पौराणिक वृत्तांत

कहते हैं भद्र देश के राजा अश्वपति की एक ही संतान थी, जिसका नाम था सावित्री। बड़े होने पर सावित्री ने साल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान का पति के रूप में वरण किया। अलपायु होने के बावजूद भी सावित्री उसके साथ विवाह करती हैं। नारद की सलाह के अनुसार सावित्री वट पूर्णिमा का व्रत करती है। जब उसे पता चलता है कि अब सत्यवान की आयु के कुछ ही दिन ही शेष हैं तो वह बरगद के पेड़ के नीचे बैठ अखंड व्रत शुरू कर देती है। जब यमराज सत्यवान के प्राण लेकर जाने लगते हैं, तब सावित्री उनका पीछा करती हैं। पति के प्राण के अलावा कोई और भी वर मांगने के लिए यमराज के प्रस्ताव को ठुकराकर सावित्री अपने दृढ़प्रतिज्ञ होने और पतिव्रता होने का लोहा मनवा लेती है। आखिर में यमराज को झुकना ही पड़ता है और इस तरह सत्यवान दीर्घायु को प्राप्त होता है। पति की दीर्घायु की कामना करते हुए, यमराज तक से अपने पति को वापस ले आने वाले मनोबल और इच्छा शक्ति का वरदान मांगते हुए ही यह व्रत किया जाता है।

कैसे करें यह व्रत

इस दिन निराहार रहकर शाम को पूजा के बाद भोजन किया जाता है। सभी सुहागिनें सज-धजकर बरगद के पेड़ की पूजा करती हैं। विधि पूर्वक पूजा करने के बाद जल चढ़ाया जाता है और सात सूत को हल्दी में रंगकर बरगद के चारों ओर तीन, सात, सत्रह या एक सौ आठ बार परिक्रमा करते हुए बांधा जाता है। इसके बाद सावित्री और सत्यवान की कहानी भी कही जाती है। वट वृक्ष का पूजन और सावित्री-सत्यवान की कथा का स्मरण करने के विधान के कारण ही यह व्रत वट सावित्री के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

एक अच्छी जिंदगी जीने के लिए यह स्वीकार करना भी जरूरी है कि... सब कुछ सबको नही मिल सकता..।

ज्येष्ठ अधिक मास १६ मई से १३ जून तक है। इस दौरान काम्य कर्म अर्थात किसी कामना से किए जाने वाले कर्म तो निषिद्ध हैं, लेकिन धार्मिक-आध्यात्मिक कार्यों का विशेष महत्व है। आईए देखें इसमें आप अपनी राशि के अनुसार कौन सा व्रत, दान या जप करें, जो आपके लिए विशेष पुण्यदायी हो।

▸▸ डॉ. महेश शर्मा, जयपुर

पुरुषोत्तम मास और आपकी राशि

मेष व वृश्चिक- इन दोनों राशियों का स्वामी मंगल है। अतः अधिक मास में निष्काम भाव से मंगल की वस्तुओं मूंगा, गेहूं, मसूर, लाल वस्त्र, कनेर पुष्प, गुड़, तांबा, लाल चंदन, केसर आदि का दान करें। मंगलवार का व्रत करें। भोजन में प्रथम ७ ग्रास (गेहूं, गुड़ तथा घी से बने हलवा या लड्डू) का भोग लगाकर ग्रहण करें। इसके पश्चात इच्छानुसार पदार्थ का सेवन करें। मंगल मंत्र ' ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः' का जप करें।

मिथुन तथा कन्या- इन राशियों का स्वामी बुध होने से इन्हें हरे मूंग, हरा वस्त्र, हरा फल, पत्र, केसर, कस्तूरी, कपूर, शंख, घी, मिश्री, धार्मिक तथा शास्त्र की पुस्तकों का दान करना चाहिए। बुधवार का व्रत करें। भोजन के पूर्व ५-७ तुलसी के पत्ते गंगाजल के साथ ग्रहण करने के पश्चात व्रत खोलें। जपनीय मंत्र ' ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।'

कर्क- स्वामी चंद्रमा के लिए बांस की टोकरी, साबुत चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, घी से भरा पात्र, चांदी, मिश्री, शर्करा, दूध, दही, खीर, स्फटिक माला इत्यादि का दान करें। सोमवार का व्रत करें। भोजन में प्रथम ७ ग्रास (दही, चावल या खीर) का भोग लगाकर ग्रहण करें। अन्य भोजन सामग्री ग्रहण करें। जपनीय मंत्र 'ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।'

सिंह- राशि स्वामी सूर्य के लिए माणिक्य, सवत्सागाय, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, लाल चंदन, गुड़, केसर तथा तांबा दान करें। रविवार का व्रत करें। सूर्यास्त से पूर्व भोजन करें तथा नमक का प्रयोग न करें। सूर्य मंत्र 'ॐ हीं ह्रों सूर्याय नमः' का जाप करें।

वृष तथा तुला- इन राशियों में जन्मे व्यक्तियों का राशि स्वामी शुक्र होने से इन्हें सफेद छींटेदार वस्त्र, सजावट-श्रृंगार वस्तु, सवत्सागाय, सफेद स्फटिक, साबुत चावल, सुगंधित वस्तु, कपूर, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, घी, शकर, मिश्री, दही, खीर आदि का दान करना चाहिए। गोशाला में दान दें। गाय की सेवा करें। तुलसी की पूजा करें। स्त्रियों का आदर सम्मान करें। शुक्रवार का व्रत करें। सफेद गाय तथा कन्या के दर्शन कर सम्मानित करें। छह कन्याओं को भोजन कराएं, जिसमें खीर होनी चाहिए। मंत्र जाप 'ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।'

मकर तथा कुंभ- इन दोनों का स्वामी शनि है। इन्हें शनि की प्रिय वस्तुओं तिल, तेल, कुलथी, उड़द, काला वस्त्र, काला पुष्प, जूता, कस्तूरी, नीलम, कटेला, स्टील या लौह पात्र, सप्त धान्य (जौ, गेहूँ, चावल, तिल, कागनी, उड़द, मूंग), आदि का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण, दीन-हीन, गरीब व्यक्ति, अपंग, बेसहारा आदि को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा सहित करना चाहिए। शनिवार के व्रत के दिन काले कुत्ते, भिखारी या अपाहिज को उड़द दाल, केला तथा तेल से बना भोजन अवश्य कराएं। 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।' मंत्र का जाप करें।

धनु तथा मीन- दोनों का स्वामी गुरु की वस्तुओं घी, शहद, शर्करा, हल्दी, पीत वस्त्र, पीत धान्य, शास्त्र पुस्तक, पुखराज, लवण आदि का निष्काम भाव से दान करें। कन्याओं को भोजन कराएं, वृद्धजन, विद्वान एवं गुरुओं की सेवा करें। गुरुवार के व्रत के दिन केले के वृक्ष का दर्शनकर पूजा करें। हल्दी मिश्रित जल से सींचे, घी का दीपक जलाएं। केलों का दान करें। स्वयं केले नहीं खाएं। जप मंत्र 'ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।'

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष- यह माह आपकी प्रतिष्ठा की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा।अतः धैर्य से कार्य करें। प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा-निष्ठा अवश्य रखें। मित्रों एवं परिवारजनों के साथ रहने का अवसर मिलेगा। लंबी यात्रा होगी। शुभ एवं मांगलिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे। प्रतियोगी परीक्षा, चुनाव, चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे, जीवन साथी के चयन, विवाह के योग प्रबल होंगे। संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी। हर्षोल्लासका वातावरण निर्मित होगा। दाम्पत्य जीवन सुखद होगा।

वृष- यह माह आपके लिये सुख समृद्धि देने वाला होगा। अपनो से मेल-जोल होगा। प्रेम संबंधों में अनुकुलता आएगी। विरोधी सक्रीय होंगे, वाणी पर नियत्रंण रखना होगा। स्थायी सम्पत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। धार्मिक यात्रा होगी। आय के स्थायी स्त्रोत की प्राप्ति के योग रहेंगे। नौकरी मिलेगी, प्रमोशन होगा, विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा। विवाह संबंध निर्धारित होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, भौतिक सुखों पर खर्च करेंगे।

मिथुन- यह माह आपके लिये उत्साहवर्धक एवं सुखद अनुभव देने वाला होगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेगें, संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ एवं मांगलिक कार्य होंगे। वाहन व स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे। विश्वास करना कष्टप्रद होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, जीवन की दिशा संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी, जनहित एवं सामाजिक कार्यों में भाग लेंगे। धार्मिक यात्रा होगी, वाणी पर नियंत्रण रखना परम आवश्यक होगा। कोई अप्रिय समाचार भी मिलेगा।

कर्क- यह माह आपके लिये चुनौती पूर्ण होगा। आप अपनी संपूर्ण क्षमताओं का दोहन करेंगे एवं सफलता भी अर्जित करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, परिवार में विवाह संबंध का निर्धारण होगा। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। किसी कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। जिससे लोकप्रियता प्राप्त होगी। मित्रों एवं परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग मिलगा। खर्च की अधिकता रहेगी। शुभ-मांगलिक कार्य, धार्मिक यात्रा पर खर्च के योग रहेंगे। स्थायी सम्पत्ति से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे।

सिंह- इस माह आपको संपत्ति से संबंधित कार्यों में ऋण के माध्यम से सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी, भाग्य के धनी सिद्ध होंगे। ससुराल-पत्नी-जीवन साथी के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आय के स्थायी स्त्रोत की प्राप्ति होगी। धार्मिक कार्यों पर खर्च करेंगे। अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। दान-पुण्य एवं गरीबों के लिये खर्च करेंगे। स्थान परिवर्तन के योग रहेंगे। पेट व गैस की तकलीफ रहेगी। विद्यार्थियों के लिये अच्छी सफलता मिलेगी।

कन्या- यह माह आपको मिश्रित फल देने वाला होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। पैतृक सम्पत्ति से संबंधित प्रकरणों में लाभ मिलेगा। रक्त विकार से कष्ट रहेगा। विवाद से बचे। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। आपके द्वारा दी गई सलाह से लोग प्रभावित एवं लाभांवित होंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। जलन-ईर्ष्या करने वालों की संख्या बढ़ेगी, किंतु किसी प्रकार की हानि-क्षति नहीं होगी। प्रेम प्रसंग बढ़ेंगे। विवाह संबंध होंगे। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

तुला- यह माह आपके लिये मौज-मस्ती एवं परिवारजनों के साथ व्यतीत होगा। अधिकारियों से अच्छे संबंधों का लाभ मिलेगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता एवं रुके कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। धार्मिक मांगलिक कार्यों में सफलता मिलेगी। लंबी यात्रा होगी। धन के मामलों में लापरवाही नहीं बरतें, विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। नौकरी-व्यापार में पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक- यह माह आपको शांति महसूस कराएगा। कार्य क्षमता में वृद्धि, प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी। धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में वर्चस्व बढ़ेगा। विवाह संबंधित प्रकरण बनेंगे। संतान सुख की प्राप्ति के योग रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखना आवश्यक होगा। अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। नृत्य कला एवं संगीत में रुचि बढ़ेगी। विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा। स्थायी सम्पत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। शुभ एवं मांगलिक कार्यों में भाग लेंगे।

धनु- यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक फलदायी रहेगा। प्रत्येक कार्यों में सफलता मिलेगी। आय के नये स्त्रोत की प्राप्ति होगी। स्वार्थी लोगों से दूरी बनाये रखें, माता-पिता एवं बड़ों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। मकान-वाहन का सुख प्राप्त होगा। धार्मिक -मांगलिक समारोह का आनंद लेंगे। पुराने मित्रों से भेंट होगी। जीवन साथी के साथ समय व्यतीत करें। विश्वास में धोखा मिल सकता है। सावधानी रखें। विवेक-धैर्य-हिम्मत से कार्य लेने से बड़ी सफलता मिलेगी।

मकर- यह माह आपके लिये मान-सम्मान में वृद्धि देने वाला रहेगा। रुके कार्य पूर्ण होंगे। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति होगी। भौतिक सुख-सुविधा, मौज-शौक, मस्ती पर खर्च करेंगे। विवाह संबंध तय होगा। ससुराल से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। धार्मिक यात्रा के अवसर मिलेंगे। अचानक धन की प्राप्ति होगी। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। आत्म विश्वास की प्रबलता बनाये रखें। हड्डी, दांत, पांव एवं पेट से संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

कुंभ- यह माह आपके ज्ञान प्राप्ति एवं आत्म विश्वास बढ़ाने वाला रहेगा। अत्यधिक भावुकता से गलत निर्णय ले सकते हैं। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। मित्र एवं परिवारजनों से स्नेह सहयोग मिलेगा। वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। कला, सम्पादन, प्रकाशन से जुड़े कार्यों में यश, कीर्ति मिलेगी। अचानक धन लाभ होगा। अतिथि सत्कार पर व्यय करेंगे। सम्पत्ति के कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान के कार्यों में महत्वपूर्ण सफलता मिलेगी। शिक्षा से संबंधित कार्यो के लिये यात्रा करना होगी।

मीन- यह माह आपको सुखद अनुभव प्रदान करने वाला होगा। ऊर्जावान होंगे। अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर सफलता अर्जित करेंगे। वैवाहिक जीवन सुखद होगा एवं जीवन साथी की निकटता महसूस करेंगे। नौकरी में पद-प्रतिष्ठा-पदौन्नति मिलेगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। सुस्वाद व्यंजनों का लुफ्त उठाएंगे। वाणी से लोकप्रियता मिलेगी। ईश्वर एवं गुरुकृपा अनुभव होगी। सत्संग, संत, गुरु का सानिध्य प्राप्त होगा। सम्पत्ति सुख एवं वाहन सुख में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे।

नहीं रही महिला संगठन की कार्यालय मंत्री श्रीमती सुषमा मूंदड़ा

अखिल भारतवर्षीय महिला संगठन के नेतृत्व को दांये हाथ की तरह अपने कुशल प्रबंधन का सहयोग दे रही ठाणे निवासी श्रीमती सुषमा मूंदड़ा नहीं रहीं। श्रीमती मूंदड़ा राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगडानी की कार्यालय मंत्री के रूप में संगठन को अपना समर्पित सहयोग प्रदान कर रही थीं।

अभा महिला संगठन अपनी सेवा गतिविधियों के द्वारा वर्तमान में एक कीर्तिमान बना रहा है। इसमें यदि श्रीमती गगडानी का सफल नेतृत्व है, तो श्रीमती मूंदड़ा का कुशल कार्यालय प्रबंधन भी शामिल है। वर्तमान में संगठन शर्बत वितरण के द्वारा महेश नवमी के पावन अवसर पर विश्व कीर्तिमान बनाने जा रहा है। ऐसे में श्रीमती मूंदड़ा का साथ छुटना संगठन के लिए एक बहुत बड़ा आघात है। जैसे ही गत १६ मई को उनके देहावसान की खबर फैली वैसे ही शोक की लहर पूरे संगठन ही नहीं बल्कि समस्त स्नेहीजनों में छा गई। आज महिला संगठन राष्ट्रीय अध्यक्ष की कार्यालय मंत्री के साथ ही महाराष्ट्र प्रदेश महिला संगठन के उपाध्यक्ष पद की भी जिम्मेदारी निभा रही थीं। ठाणे जिला महिला संगठन की आप ५ वर्ष तक अध्यक्ष भी रही थीं।

बचपन से रहीं ऊर्जावान

श्रीमती मूंदड़ा का जन्म १३ जुलाई १९५५ को नांदेड़ (महाराष्ट्र) के प्रतिष्ठित काबरा परिवार में हुआ। आप ३ भाई बहनों में सबसे बड़ी थीं। बचपन से ही श्रीमती मूंदड़ा कितनी ऊर्जावान रहीं उसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि खेलकूद में भी हमेशा उन्होंने अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व किया। पढ़ाई में भी इतनी प्रतिभावान कि शायद ही कोई परीक्षा हो, जिसमें उन्हें विशेष योग्यता प्राप्त न हुई हो। ३१ जनवरी १९७५ में ठाणे निवासी घनश्याम मूंदड़ा के साथ परिणय बंधन में बंध गईं। ससुराल में भी बड़ी बहू की सफल भूमिका निभाकर वे सबकी चहेती बन गई थीं। १० नवंबर २००७ को यूएसए में पति के देहावसान से जैसे उन पर वज्रपात हो गया, लेकिन जिम्मेदारी तो निभानी थी, अतः किसी तरह शीघ्र ही संभली और परिवार तथा समाज की जिम्मेदारियों के प्रति समर्पित हो गईं।

उच्च प्रबंधन क्षमता की धनी

आप एक अच्छी चिंतक व लेखिका तो थीं ही, साथ ही आप में हमेशा से उच्च प्रबंधन की क्षमता भी रही। अतः आपने माहेश्वरी महिला मंडल ठाणे की पत्रिका 'महेश वाणी' की संपादक की सफलतापूर्वक जिम्मेदारी भी निभाई। इसके साथ आप महिला व बच्चों से संबंधित कई सामाजिक प्रकल्पों की संस्थापक व प्रेरक रहीं। इनके मिलनसार स्वभाव ने उन्हें संपर्कों के विस्तार में सहयोग दिया तो वहीं उनकी परिपक्वता ने व्यवहार कुशल बनाया। आप रानीगांव गोशाला की ट्रस्टी तथा श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र की सदस्य भी थीं। राष्ट्रीय विपदा के समय सहयोग के लिए जनजागरण में भी आप पीछे नहीं रहीं। श्रीमती मूंदड़ा का देहावसान वास्तव में अभा माहेश्वरी महिला संगठन के लिए किसी भीषण आघात से कम नहीं है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

अर्थ – इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

संगठन की कुशल प्रबंधक व सबकी चहेती

श्रीमती सुषमा घनश्याम जी मूंदड़ा

विनम्र श्रद्धांजलि

जन्मदिवस 30/07/1955
देवलोकवास 16/05/2018

अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन,
महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन
ठाणे जिला माहेश्वरी महिला संगठन

श्री संतोषकुमार दरगढ़

आगरा. आर्य विद्वान और वैदिक लेखक श्री संतोषकुमार दरगढ़का स्वर्गवास ८० वर्ष की अवस्था में गत ४ अप्रैल को हो गया है। आपने प्राच्य साहित्य परिषद के माध्यम से वेदों के प्रचार हेतु ६० से अधिक पुस्तकों का लेखन, संपादन एवं प्रकाशन किया था। आर्य समाज आगरा हिंग की मंडी के प्रधान एवं आर्य केंद्रीय सभा आगरा के मंत्री रहे। आप अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र, दो पुत्री, नाती, नातिनी आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री रामनारायण तोषनीवाल

जिंतूर. एलदरी कैंप निवासी श्री रामनारायण तोषणीवाल का गत दिनों ९३ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप अपने पीछे ब्रिजगोपाल तोषनीवाल (संगठन मंत्री महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा) सहित तीन पुत्र व पुत्री सरोज-घनश्यामदास गट्टानी (अध्यक्ष परभणी जिला माहेश्वरी महिला संगठन) आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्री नंदलाल बहेडिया

भीलवाड़ा. समाज सदस्य कैलाशचंद्र, सुभाषचंद्र (सांसद भीलवाड़ा) राधेश्याम, राजेंद्र बहेडिया के पिताजी श्री नंदलाल बहेडिया का ९१ वर्ष की उम्र में देवलोकगमन गत १३ मई को हो गया है। श्री बहेडिया अत्यंत सरल स्वभाव के धार्मिक, मिलनसार व व्यावहारिक व्यक्ति थे।

श्रीमती सुषमा मूंदड़ा

ठाणे. अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यालयीन मंत्री, महाराष्ट्र प्रदेश महिला संगठन की उपाध्यक्ष जिला माहेश्वरी महिला संगठन ठाणे की भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीमती सुषमा मूंदड़ा का विगत दिनों देहावसान हो गया। आप बहुत ही कर्मठ समाजसेवी थी। आपके दुखद निधन पर अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन, महाराष्ट्र प्रदेश महिला संगठन एवं ठाणे जिला माहेश्वरी महिला संगठन ने विनम्र भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।

श्री श्यामलाल केला

पुणे. समाज के वरिष्ठ समाजसेवी श्री श्यामलाल केला का गत ६ मई को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पुत्र सुरेश, प्रकाश, अरुण, संजीव, सुमित, आदित्य, अक्षय आदि से भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्री गोपीकृष्ण बावरी

सुसनेर. समाज के ९८ वर्षीय वरिष्ठ समाजसेवी श्री गोपीकृष्ण बावरी का गत दिनों देहावसान हो गया। आपने साईं मंदिर निर्माण के लिए पैतृक भूमि दान की थी। आप धान मंडी अध्यक्ष, समाज अध्यक्ष, शिशु मंदिर अध्यक्ष, शांति समिति अध्यक्ष नगर निगम पार्षद आदि अनेक पदों पर सेवा दे चुके थे। आप अपने पीछे ३ पुत्र व पुत्रियों के पौत्र व नाती आदि से भरे-पूरे संयुक्त परिवार को छोड़ गये हैं।

श्रीमती गोदावरीदेवी लखानी

नापासर. समाज की वरिष्ठ श्रीमती गोदावरीदेवी लखानी धर्मपत्नी श्री बालमुकुंद लखानी का गत २७ अप्रैल को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती बादामदेवी तोषनीवाल

भीलवाड़ा. पुराना शहर निवासी अखेराम तोषनीवाल की धर्मपत्नी एवं गोविंदराम, बालमुकुंद, दिलीप तोषनीवाल की माता श्रीमती बादामदेवी तोषनीवाल का स्वर्गवास गत २२ अप्रैल को हो गया। श्रीमति तोषनीवाल धार्मिक, मिलनसार, व्यावहारिक महिला थी। आप कुछ समय से अस्वस्थ थीं।

श्रीमती मनोरमादेवी मूंदड़ा

भोपाल. समाज सदस्य रमेश मूंदड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती मनोरमादेवी का गत १ मई को देहावसान हो गया है। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं। आप उज्जैन के समाजसेवी श्री पुरुषोत्तमजी काबरा की बड़ी पुत्री थी।

श्री सत्यनारायण बंग

दांडेली. समाज के वरिष्ठ श्री सत्यनारायण जी बंग दाडेली (कर्नाटक) का ८२ वर्ष की आयु में गत २९ मार्च को स्वर्गवास हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपकी पत्नी राजकुमारी बंग भी दो सत्र तक कर्नाटक प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन की सचिव रह चुकी हैं।

पाठकों से विनम्र निवेदन

देश-विदेश के निवासरत माहेश्वरी बंधु उत्पत्ति पर्व महेश नवमी मनाने जा रहे हैं। इस आयोजन को लेकर पाठकों से निवेदन है कि अपने महेश नवमी महोत्सव आयोजन के समाचार २४ जून शाम तक **श्री माहेश्वरी टाईम्स तक पहुँचा दें। इसके पश्चात प्राप्त समाचारों को जुलाई अंक में प्रकाशित किया जाना संभव नहीं होगा। कृपया समाचार ई-मेल द्वारा ही भेजें। वाट्सएप पर भेजे समाचारों पर विचार नहीं किया जाएगा। अपने सामाजिक कार्यक्रम को SMT VIDEO NEWS में प्रसारण के लिए अपने कार्यक्रम का विडियो ईमल smtvideonews@gmail.com पर प्रेषित करें।** **- सम्पादक**

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

मौसमी बीमारियों से बचाव

लू से सावधानी बचाये सबकी जान

- धूप में खाली पेट न निकलें।
- खूब पानी पियें।
- सूती, ढीले कपड़े पहनें।
- धूप में सिर ढँक कर रखें।

साफ पानी पियें, स्वस्थ रहें

- अशुद्ध और दूषित पेयजल के सेवन से उल्टी दस्त, पेचिश, हैजा, पीलिया और टाइफाइड जैसी बीमारियों का खतरा हो सकता है।
- साफ और शुद्ध पानी का उपयोग करें।
- ताजे बने भोजन और खाद्य वस्तुओं का सेवन करें।
- गंदे, सड़े–गले हुए फलों भोजन और खुले हुए खाद्य पदार्थों का सेवन न करें।
- खाने के पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ अवश्य धोयें।

दस्त से बचाव

- बच्चों में संक्रमण के कारण दस्त रोग हो सकता है। सही समय पर इसकी पहचान एवं उपचार कर इस जानलेवा रोग से बच्चों को बचाया जा सकता है।
- दस्त के दौरान बच्चे को ओ.आर.एस. का घोल पिलायें।
- दस्त आरम्भ होने से 14 दिन तक बच्चे को प्रतिदिन एक जिंक की गोली खिलायें।
- दस्त के दौरान बच्चे को सामान्य भोजन देते रहें। यदि बच्चा छोटा है तो उसे माँ का दूध लगातार पिलाते रहें।
- दस्त नियंत्रित न होने की स्थिति में तुरन्त नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें।

अधिक जानकारी के लिये अपने नजदीकी सरकारी अस्पताल से सम्पर्क करें।

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D17002

सभी स्वजनों को
समाज के उत्पत्ति पर्व महेश नवमी की
हार्दिक–हार्दिक शुभकामनाएं
और समाज के सर्वांगीण विकास की भगवान
महेश से मंगलकामना

पद्मश्री बंशीलाल राठी

पूर्व सभापति
अ.भा. माहेश्वरी महासभा

GBR Metals Private Ltd.

Manufacturers of M.S. Ingots & TMT Bars

Regd. Office-
#4, Ramanan Road, Chennai - 600 079
Ph. : 25292644, 25292151,
Fax : 2591095
E-mail : myco@eth.net

Factory-
#295, G.N.T. Road, Peravallur Village,
Ponneri - 601204 (T.N.)
Ph. : 27984719, 27984729,
Fax : 27984729

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2017-2019
Despatch Date - 02 June 2018

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/Srimaheshwaritimesmagazine
http://srimaheshwaritimes.blogspot.in